पत्राचार द्वारा बाइबिल

पाठ्यक्रम

A Christadelphian Publication

Hindi Bible Course

पाठ्य क्रमों की सूची

1. इससे पहले कि हम आरम्‍भ करें
2. ईश्‍वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया
3. प्रभु यीशु का पृथ्‍वी पर पुन: आगमनप्रश्‍नपत्र न. 1 – पाठ 1 से 3
4. तेरा राज्‍य आये
5. परमेश्‍वर का राज्‍य – पृथ्‍वी पर शांति
6. किस तरह इज्राएली सन्‍तान ईश्‍वरीय प्रबंध के अनुकूल होती है (पहला भाग)प्रश्‍नपत्र न.2 – पाठ 4 से 6
7. किस तरह इज्राएली सन्‍तान ईश्‍वरीय प्रबंध के अनुकूल होती है (दूसरा भाग)
8. एक कानून जो जीवन नही दे सकता था
9. इब्राहिम से परमेश्‍वर की प्रतिज्ञायें

प्रश्‍नपत्र न.3 – पाठ 7 से 9

1. दाऊद को परमेश्‍वर की प्रतिज्ञायें
2. जीवन और मृत्‍यु के विषय में बाईबल की शिक्षा (पहला भाग)
3. जीवन और मृत्‍यु के विषय में बाईबल की शिक्षा (दूसरा भाग)

प्रश्‍नपत्र न. 4 - पाठ 10 से 12

1. पुर्नरूत्‍थान
2. न्‍याय का सिंहासन
3. पिता और पुत्र प्रश्‍नपत्र न.5 – पाठ 13 से 15
4. परमेश्‍वर की पवित्र आत्‍मा
5. पवित्र आत्‍मा के वरदान
6. क्रूस प्रश्‍नपत्र न.6 – पाठ 16 से 18
7. बाईबल में वर्णित शैतान
8. बपतिस्‍मा
9. कुछ व्‍यवहार में लाने योग्‍य विषय प्रश्‍नपत्र न.7 – पाठ 19 से 21
10. जीवन की नवीनता में चलनाप्रश्‍न पत्र न. – 8 पाठ 22 ; कुछ साधारण प्रश्‍नकृपया निम्‍नलिखित विकल्‍पों में से एक सही विकल्‍प को चुनिये

*क्रिस्टडेलफियन बाइबिल पत्राचार पाठ्यक्रम*

### इससे पहले कि हम आरम्भ करें...

Before we begin…

बाइबिल का अन्वेषण करना एक रोमांचकारी एवम् आनन्दमय कार्य है। इस पाठयक्रम में दिये गये अध्‍याय बाइबिल अध्ययन की ओर जाने वाले मार्ग के सूचक हैं। इस पाठयक्रम में, बाईबल की महत्‍वपूर्ण शिक्षाओं पर आधारित, 22 पाठ है।

यदि आप इस पाठयक्रम से लाभ प्राप्त करना चाहते हैं तो आपके पास अपनी बाइबिल का होना ही आवश्यक नही है वरन उसको पढ़ना भी अति आवश्यक है। बाइबिल को बिना पढ़े आप इस पाठयक्रम से मिलने वाले लाभ से वंचित रह सकते हैं। शायद आपके पास अपनी बाइबिल हो परन्तु यदि आपके पास नही है तो जल्दी से जल्दी एक बाइबिल ले लीजिये।

प्रायः हर प्रदेश में बाइबिल सोसायटी की एक दुकान है जहां से आप बहुत सस्ते में बाइबिल खरीद सकते हैं। बाईबल खरीदते समय इस बात का ध्‍यान रखे कि यह एक सम्‍पूर्ण बाइबिल हो। नया नियम सम्‍पूर्ण बाइबिल नही है बल्कि यह बाईबल का केवल एक भाग है। आपको सम्पूर्ण बाइबिल की आवश्यकता है।

इस पाठयक्रम के प्रत्‍येक अध्‍याय में बाईबल के दो भागों का अध्‍ययन है, पहला भाग "साप्‍ताहिक पाठ" शिर्षक के अन्‍तर्गत है जिसमें बाईबल के 6 या 7 पाठ है जिन्‍हें आपको एक सप्‍ताह में पढना है। दूसरा भाग "प्रश्‍नोत्‍तर के लिए पाठ" शिर्षक के अन्‍तर्गत है जिसमें आपको प्रश्‍नो के उत्‍तर देने से पहले बाईबल के एक या दो अध्‍यायों को पढना है जिनसे आपको सही उत्‍तर देने में सहायता मिलेगी।

एक अध्‍याय को कम से कम तीन बार पढें। पहली बार जल्‍दी से उसको पढे़ जिससे यह पता चल जाये कि यह किस विषय में है। दूसरी बार प्रत्‍येक भाग को शुरू से ध्‍यानपूर्वक पढें। तीसरी बार अपनी बाईबल के साथ इसे पढें और जो भी बाईबल के संदर्भ दिये गये है उन्‍हें बाईबल से खोलकर पढें। जो बात थोडी समझने में कठिन लग रही हो या जिस बात से आप सहमत न हो उसका एक विशेष नोट तैयार करें। ज्रैसे जैसे आप आगे अध्‍ययन करते है तो बहुत सी बातें साफ रीति से समझ में आने लगती है।

हर व्यक्ति का पढने का अपना तरीका है। हमारी केवल यह विनती है कि इसके पहले आगे के पाठ का अध्ययन करें उससे पहले के पाठ को भली भांति समझ लीजिये।

**आपके उत्तर के लिये कुछ प्रश्न**

पाठयक्रम पुस्तिका के अन्‍त में प्रत्‍येक अध्‍याय के लिए प्रश्‍न दिये गये है। यह आपके लिए बहुत ही सहायक होगा कि जैसे ही आप एक अध्‍याय समाप्‍त करें तो उसके प्रश्‍नों के उत्‍तर दें और दो-दो अध्‍यायों के उत्‍तरों को हमारे पास भेज दें ।जब आप प्रश्नों के उत्तर लिखते हैं तो प्रयास करें कि जो सत्‍य है और आप विश्‍वास करते है वही उत्‍तर दें। यदि पाठों में लिखी गई किसी बात से आप सहमत नही हैं तो बिना हिचकिचाहट हमें बताइये। यदि किसी कारणवश आप उत्तरों को नहीं भेज सकते हैं, तो हमें सिर्फ इतना लिखकर बता दीजिए कि आप फिर भी रुचि रखते हैं और आप आगे के पाठों को मंगाना चाहते हैं।

**समय का सदउपयोग**

अवश्य ही इन पाठों के अध्ययन में आपका कुछ समय लगेगा- प्रति दिन लगभग 15 मिनट बाइबिल पढ़ने में और प्रति सप्ताह में लगभग एक घंटा पाठ के अध्ययन में। इसके बाद हर एक दूसरे सप्ताह में प्रश्नों के उत्तर लिखने के लिये अतिरिक्‍त आधा घंटा। परन्तु बहुत ही जल्दी आप महसूस करेंगे कि बाइबिल एक ऐसी रुचिपूर्ण पुस्तक है, कि उसे पढ़ने के लिए आप और ज्यादा समय व्यतीत करना चाहेंगे।

**बाइबिल पढ़ना**

बाइबिल केवल रुचिकर ही नही है बल्कि यह परमेश्‍वर का वचन है। इसलिए इसे हमें प्रार्थनापूर्वक पढ़ना चाहिये और ईश्‍वर से प्रार्थना करनी चाहिये कि वह इसकी शिक्षाओं को समझने में हमारी सहायता करें।

बाइबिल में एक प्रार्थना है जिसे हमें याद रखना चाहिये:

*‘मेरा आंखें खोल दे, कि मैं तेरी व्यवस्था की अद्भुत बातें देख सकूँ।’* (भजन संहिता 119 पद 18)

और इसलिए बाइबिल को प्रतिदिन पढ़ने से और इसे समझने का प्रयास करने से, हमें न केवल निश्चय हो जायेगा कि यह परमेश्वर का वचन है, वरन हम अपने जीवन पर भी इसका प्रभाव महसूस करेंगे — हमारे जीवनों में परिवर्तन लाते हुए और हमें पहले से अच्छे पुरुष और स्त्रियां बनाते हुए।

प्रश्‍नों के उत्‍तर आप हमें ईमेल द्वारा भी भेज सकते है- क्रिस्टडेलफियन, पोस्‍ट बाक्‍स न. – 50, गाजियाबाद (यूपी) – 201001, ई-मेल – christadelphiansdelhi@gmail.com

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम नंबर 1*

# 1. बाइबिल हमारी मार्गदर्शक

1. The Bible our Guide

साप्ताहिक पाठ – उत्पत्ति, अध्याय 1-3; लूका, अध्याय 1-3

प्रश्‍नोत्‍तर के लिये पाठ – भजन संहिता 1; 19; 119 पद 89-112

**मार्गदर्शक की आवश्यकता**

The need for a guide

जब हम एक ऐसे स्थान को जाते हैं जहां पहले कभी नही गए हैं, हमें एक मार्गदर्शक की आवश्यकता होती है। हम उस स्थान का एक नक्शा या स्थान सूचक पुस्तक खरीदें। हम किसी एक मित्र से जिसे उस स्थान का पूरा ज्ञान है उस स्थान के बारे में पूछ सकते हैं। हमारा एक मार्गदर्शक अवश्य होना चाहिए।

इसी प्रकार जीवन यात्रा में हमें एक मार्गदर्शक की आवश्यकता है। हमें यह जानना आवश्यक है कि जीवन का उद्देश्य क्या है और हमें दिन प्रतिदिन किस तरह क्या करना चाहिए। बाइबिल में हमें इन प्रश्‍नों के उत्‍तर मिलते है।

जब हम अपने चारो ओर संसार की अदभुत वस्तुओं को देखते है, और उन पर ध्यान देते हैं कि किस प्रकार अद्भुत रीति से हमारा शरीर बनाया गया है, तो हमें दृढ़ निश्चय हो जाता है कि यह सब कार्य एक महान विधाता का है। परन्तु हम किस तरह से उस के विषय में और अधिक जान सकते हैं, कि विधाता हमसे क्या चाहता है, और हम क्या करे!

व़ास्‍तव में इन सब प्रश्‍नों के उत्तर बाईबल में है। परमेश्वर ने, जो सब चीजों का महान रचीयता है, हमें वह मार्गदर्शक पुस्तक दी है जिसकी हमें आवश्यकता है। यदि हम परमेश्‍वर को प्रसन्न करना चाहते हैं तो हमें उस मार्गदर्शक पुस्‍तक को लेना चाहिये, उसको पढ़ना चाहिये, अध्ययन करना चाहिये और उस के विषय दिन प्रतिदिन सोचना चाहिये।

**बाइबिल के दावे**

The Bible’s claims

बाइबिल बड़े-बड़े दावे करती है। यह अधिकार के साथ परमेश्‍वर का वचन होने का दावा करती है। पुराने नियम के भविष्यद्वक्ताओ ने कई बार अपने संदेश को इन शब्‍दों से आरम्‍भ किया है कि *‘परमेश्वर यह कहता है’।* पौलुस प्रेरित हमें बताता है कि *‘सम्पूर्ण पवित्र शास्त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है।’* (2 तीमुथियुस, अध्याय 3, पद 16)

यदि ये दावे सच नही होते और यदि बाइबिल परमेश्वर का वचन नही होती, तो हम बाइबिल को अलमारी में रखकर उसे भूल सकते थे। और उसकी शिक्षाऐं अच्‍छी होने के बावजूद भी, उनका हमारे ऊपर कोई प्रभाव नही होता।

क्योंकि बाइबिल सच है, तो जब तक हम परमेश्‍वर को नजरअंदाज ना करना चाहे और अपने आप को जीवन की उस दी गयी आशा से अलग न करना चाहे तब तक हमें परमेश्‍वर के वचन की इस पुस्‍तक को नजरअंदाज करने का साहस हम लोगों को नही करना चाहिये।

**हम कैसे जानते हैं कि बाइबिल सच है?**

How do we know that the Bible is true?

यह विश्वास करने के लिए कि बाइबिल सच है, क्या तर्क हैं? बाईबल सत्‍य है यह विश्‍वास करने के इतने तर्क हैं कि हम उन सबका विवरण यहां नही कर सकते हैं, केवल कुछ का यहां उल्लेख करेंगे।

प्रथम उसकी सत्यता के लिए प्रभु यीशु मसीह का वचन है। प्रभु यीशु मसीह के दिनों में केवल पुराना नियम ही था और यीशु मसीह पुराने नियम के हर एक शब्द पर विश्वास करते थे। जब कभी उनकी किसी भी बात और कार्य की सत्यता का विरोध किया गया तो उन्‍होंने उसकी सत्यता का प्रमाण पुराने नियम से दिया।

जब सदूकी उसके पास आए और विवाद करने लगे कि मृतकों में से जी उठना अर्थात पुनरुत्थान जैसी कोई बात नहीं है, यीशु ने उत्तर दिया, *‘तुम पवित्रशास्त्र और परमेश्वर की सामर्थ्य नहीं जानते; इस कारण भूल में पड़े हो।’* (मत्ती 22:29)

तब पुराने नियम से प्रमाण देते हुए उन्‍होंने सिद्ध करके बताया कि मृतकों में से जी उठने (पुनरुत्थान) की आशा ईश्वरीय वचन का एक अशं थी। (यशायाह 26:19; दानिय्येल 12:2)

प्रभु यीशु मसीह ने अब्राहम, इसहाक, याकूब, दाऊद और सुलेमान और अन्‍य दूसरे पुराने नियम के लोगों के विषय में बातें की; और जिस तरह प्रभु यीशु मसीह ने इन सब लोगों के विषय में बातें की उससे हम जान जाते है कि प्रभु यीशु मसीह पुराने नियम के इन लोगों के विषय में अच्‍छी तरह से जानते थे और विश्‍वास करते थे।

बाईबल की सत्‍यता के लिए दूसरा तर्क यह है कि अब तक कोई भी बाइबिल को झूठा साबित नही कर पाया है। बाइबिल के बहुत से विरोधियों ने, जिनमें से कुछ बहुत ही चतुर व्यक्ति भी थे, बाईबल को झूठा साबित करने की कोशिश की परन्तु वे सब अपने प्रयास में असफल रहे। यदि हम गम्भीरतापूर्वक इस पर विचार करें, तो हमें यह मानना पड़ेगा कि यह एक अद्भुत बात है।

इसके बाद बाईबल की भविष्यद्वाणियों का अद्भभुत रीति से पूरा होना है। बाईबल सैकड़ों वर्षों बाद होनेवाली घटनाओं के विषय में समय समय पर बताती है। उदाहरण के लिए मत्ती के दूसरे अध्याय में हम पढ़ते है कि ज्ञानी पुरुष (ज्योतिषी) हेरोदेस के पास आए और पूछा कि *‘यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है, कहाँ है?’* (मत्ती 2:2) हेरोदेस ने यही प्रश्न महायाजकों से किया। उन्होंने उससे कहा *‘यहूदिया के बैतलहम में’* (मत्ती 2:5)। उन्हें कैसे मालूम हुआ? क्‍योंकि सैकडों वर्ष पूर्व इसकी भविष्यवाणी पुराने नियम की एक पुस्तक में की जा चुकी थी – मीका, अध्याय 5, पद 2 में।

बाइबिल का इतिहास जो कि लम्‍बे समय पहले लिखा गया उसको बार-बार आधुनिक खोजों के द्वारा सच साबित किया गया है।

हम बाईबल की सत्‍यता के और दूसरे प्रमाण भी खोज सकते हैं, लेकिन सबसे अच्छी विधि स्वयं बाइबिल को पढ़ना है। तब हमें धीरे-धीरे यह मालूम हो जाता है कि किस तरह से बाईबल का एक भाग दूसरे भाग से कितनी अच्‍छी तरह से मेल खाता है।

**बाइबिल की पुस्तकों का सूचीपत्र**

The contents of the Bible

बाइबिल व़ास्‍तव में एक पुस्तक नहीं है बल्कि कई पुस्तकों का एक संग्रह है –जिसमें कुल 66 पुस्‍तकें है इसमें से 39 पुराने नियम में और 27 नए नियम में है। वे हजारों वर्षों में विभिन्न लेखकों द्वारा लिखी गई थी तो भी वे सब मिलकर एक पूरी कहानी प्रस्तुत करती हैं – इस कहानी की शुरूआत उत्‍पत्ति से परमेश्वर के मनुष्य को बनाने के उद्देश्‍य से होती है और उस समय तक होती है जब *‘जगत का राज्य हमारे प्रभु का और उसके मसीह का हो गया, और वह युगानुयुग राज्य करेगा।’* (प्रकाशित्वाक्य, अध्याय 11, पद 15)

**पुराना नियम**

The Old Testament

पुराने नियम की पहिली पाँच पुस्तकें, परमेश्‍वर के सेवक, मूसा के द्वारा लिखी गई थी। पहली पुस्तक उत्पत्ति कहलाती है जिसका अर्थ है "आरम्भ"। यह हमें पृथ्वी पर के पहले मनुष्यों के साथ परमेश्वर के व्यवहार के बारे में बताती हैं।

उसके बाद निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती और व्यवस्थाविवरण नामक पुस्तकें हैं। ये चार पुस्तकें हमें बताती है कि किस तरह ईश्वर यहूदियों को, जिन्हें उसके अपने लिए चुन लिया था, मिस्र से बाहर लाया और उन्हें कनान देश (इस्राएल) दिया। तब इसके बाद वे पुस्तकें हैं जो यहूदियों के इतिहास और परमेश्वर का उनके साथ व्यवहार का वर्णन करती हैं।

जब हम भजन संहिता की पुस्तक में आते है तो हमें कुछ बहुत ही उत्तम कविता मिलती है जिनकी समानता नहीं है। शायद आपको कविता पसन्‍द ना हो? परन्तु बाइबिल की कविता कुछ अलग तरह की है। उदाहरण के लिये भजन संहिता 8 और उसके पद 3 और 4 को लीजिये।

*‘जब मैं आकाश को, जो तेरे हाथों का कार्य है, और चंद्रमा और तारागण को जो तू ने नियुक्त किए हैं, देखता हूँ; तो फिर मनुष्य क्या है कि तू उसका स्मरण रखे, और आदमी क्या है कि तू उसकी सुधि ले?**’* (भजन संहिता 8:3-4)

क्या आप ने रात में आकाश में तारों को देखकर कभी ऐसा अनुभव नहीं किया!

इसके बाद भविष्यद्वक्ताओं की पुस्तकें है – यशायाह, यिर्मयाह और यहेजकेल की बड़ी और कुछ छोटी भविष्यद्वाणियों की पुस्तकें।

आपकी बाइबिल के आरम्भ में बाइबिल की सब पुस्तको की सूची होगी- यहां पर केवल सरसरी तौर पर आपको इन पुस्‍तकों का क्रम और विषय बताया गया है।

**नया नियम**

The New Testament

नये नियम की शुरूआत मत्ती, मरकुस, लूका और यूहन्ना द्वारा लिखी गयी, प्रभु यीशु मसीह के जीवन की, चार अलग- अलग कहानियों से होती है।चारों अपने ही तरीके से यीशु मसीह के जीवन चरित्र का वर्णन करते हैं।

इसके बाद यीशु मसीह के मृतकों में से जी उठने के बाद क्‍या हुआ यह कहानी है। फिर हम ‘प्रेरितों के कामों का वर्णन’ नामक पुस्तक में पहली कलीसिया के संगठन के विषय में पढ़ते हैं।

तत्‍पश्चात नवीन कलीसियों के सहायतार्थ भिन्न प्रेरितों द्वारा लिखित पत्रियाँ हैं और अन्त में प्रकाशितवाक्‍य नामक पुस्‍तक है।

फिर से हम आपको बता दें कि यदि आप को बाईबल की सम्‍पूर्ण पुस्‍तकों की सूचि चाहिये तो यह आपकी बाईबल के प्रथम पृष्‍ठ पर है।

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम नंबर 2*

# 2. परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम किया

2. God so loved the world

साप्ताहिक पाठ – उत्पत्ति, अध्याय 4-6; लूका, अध्याय 4-6

प्रश्‍नोत्‍तर के लिये पाठ – यशायाह, अध्याय 53

**संसार को क्या को गया है?**

What is wrong with the world?

हम सभी को इस बात में सहमत होना पडेगा कि जिस संसार में हम रहते हैं वह दोषयुक्त है। किसी भी दिन समाचार पत्र पढ़िये। हत्याओं, धोखा-धड़ी, अपराधों, लड़ाई झगड़े और युद्ध की संभावना के बारे में पढ़ेंगे।

पढ़ते पढ़ते हम इन सब बातों के इतने आदि हो गए हैं कि हमें इनसे कुछ फर्क ही नही पड़ता है। परन्तु यदि हम इनके विषय में सोचें तो हमें स्वयं से पूछना पड़ता है – यह सब क्यों?

जब ईश्वर ने सृष्टि की रचना की, उसने जगत को मनुष्यों के रहने के लिये दोषरहित बनाया। ईश्वर का अभिप्राय बहुत ही अच्छा था परन्तु आज मनुष्य संकट और अनिश्चयता के संसार में रह रहा है।

**विपत्ति का आरम्भ**

The beginning of the trouble

आदि में परमेश्वर ने पहिले मनुष्य, आदम, को बनाया। परमेश्वर ने आदम को अपनी विधियाँ सिखायी। उसने आदम को एक सरल आदेश भी दिया और जिस प्रकार एक पिता अपने बच्चों से उसकी आज्ञाओं के पालन की आशा करता है, उसी प्रकार परमेश्वर भी आदम से उसकी आज्ञा के पालन की आशा करता था। परमेश्वर ने आदम से कहा,

*‘तू वाटिका के सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना: क्योंकि जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।’* (उत्पत्ति, अध्याय 2, 16 और 17 पद)

आदम ने परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया। आज्ञा उल्लंघन के परिणाम स्वरुप अन्त में आदम की मृत्‍यु हुई जैसा कि परमेश्वर ने कहा था। आदम के लिए दुबारा पाप करना सरल हो गया। इसके अतिरिक्त उसकी सारी सन्तान पाप करने की प्रवृत्ति के साथ पैदा हुई। रोमियों के अध्याय 5 और पद 12 में हम पढ़ते हैं,

*‘इसलिये जैसा एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया, और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया।’* (रोमियों 5:12)

हम देखते हैं कि आदम ने पाप किया और इसलिये कि वह पापी था उसकी मृत्यु हुई। हम भी पाप करते हैं और मर जाते हैं। जब आपने यशायाह के अध्याय को पढ़ा, क्या आपने छटवें पद के शब्दों पर ध्यान दिया?

*‘हम तो सब के सब भेड़ों के समान भटक गए थे, हम में से हर एक ने अपना अपना मार्ग लिया।’* (यशायाह 53:6)

यिर्मयाह भविष्यद्वक्ता भी यही बात हम से दूसरे शब्दों में कहता है,

*‘मन तो सब वस्तुओं से अधिक धोखा देनेवाला होता है, उस में असाध्य रोग लगा है।’* (यिर्मयाह, अध्याय 17, पद 9)

हम बाइबिल में इनके विषय में पढ़ते हैं और हम खुद भी जानते हैं कि वे सच हैं। इस हेतु पौलुस प्रेरित ने कहा,

*‘क्योंकि मैं जानता हूँ कि मुझ में अर्थात्‍ मेरे शरीर में कोई अच्छी वस्तु वास नहीं करती।’* (रोमियों, अध्याय 7, पद 18)

हम सबको पौलुस से सहमत होना पडेगा – खेद केवल यह है कि हम कभी वैसा अच्छा नहीं बनते हैं जैसा अच्छा हम बनाना चाहते हैं।

**इसका सुधार क्या है?**

What is the remedy?

पाप करने के पहले आदम परमेश्वर की संगति में था। पाप करने के पश्चात परमेश्वर से उसकी संगति टूट गई। आदम पापी ठहरा और इस कारण अपने बनाने वाले के साथ उसकी संगति नहीं हो सकती थी।

शायद आदम नहीं जानता था कि वह कितनी बडी समस्‍या की शुरूआत कर रहा था। उस समय से आज हजारों वर्षो तक उसकी हर एक सन्तान (आप और मैं भी उसमें शामिल हैं) उसके नक्शे कदम पर चली है और पाप किया है (केवल यीशु को छोड़) और इसलिये कि हम सब पापी हैं हमारा परमेश्वर से नाता टूट गया हैं। कैसी आशाहीन दयनीय दशा! मनुष्य अपने आपको बचाने के लिये कुछ नहीं कर सकता था।

परन्तु परमेश्वर ने अपने असीम प्रेम और दया के कारण मनुष्यों को उनके पाप में मरने के लिये नही छोड़ा। परमेश्‍वर ने एक मार्ग दिया जिसमें से होकर मनुष्य उसके पास आ सके और जीवन पा सके। हम यूहन्ना के तीसरे अध्याय में पढ़ते हैं

*‘क्योंकि परमेश्वर ने जगत से ऐसा प्रेम रखा कि उसने अपना एकलौता पुत्र दे दिया, ताकि जो कोई उस पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।’* (यूहन्ना 3:16)

किसी भी चीज़ का बनाना सरल को जाता है यदि आपके पास उसका कोई सांचा या नमूना हो। बच्चा अपने माता पिता की नकल करके बोलना सीखता है। इसी तरह हम यीशु को अपना आदर्श मानकर एक अच्‍छे इन्‍सान बन सकते है – यीशु मसीह के विषय में अधिक से अधिक जानकर और उनके समान बनने का प्रयास करके।

जब हम यीशु को देखते है तो हम जान जाते हैं कि परमेश्वर हमसे क्‍या चाहता है कि हम कैसा बने।

**यीशु और क्रूस (सलीब)**

Jesus and the cross

यीशु मसीह ने कभी पाप नहीं किया। उसने सदैव वे ही काम किये जिनसे परमेश्वर प्रसन्न हुआ। और तब भी उन्होंने उसे शूली पर चढ़ा दिया! परमेश्वर ने उन्‍हें इस विकट मृत्यु से बचाया नहीं। जिस पद का यशायाह की पुस्तक से हम उल्लेख कर चुके हैं, उस पद में आगे लिखा है,

*‘यहोवा ने हम सभों के अधर्म का बोझ उसी पर लाद दिया।’* (यशायाह 53:6)

बाइबिल हमें साफ रीति से सिखाती है कि यीशु ने अपने पिता की इच्छा का पालन करते हुए, क्रूस की मौत सह ली ताकि उसकी मृत्यु द्वारा हम अपने पापों की क्षमा पा सकें और जीवन की आशा रख सकें।

इसमें कुछ अद्भभुत बात है – अपने एकलौते पुत्र को देने में परमेश्वर का प्रेम और उस पुत्र का अपने पिता की आज्ञा का पालन अदभुत है। उस पर विश्वास रखते हुए हम जीवन पा सकते हैं। हम प्राय: इस विषय में नहीं सोचते हैं। लेकिन जब हम बाइबिल का अध्‍ययन और खोज करेंगे तो हम बार बार इस विषय पर आयेंगे, क्‍योंकि यह मसीहियों की आशा का केन्‍द्र बिन्‍दु है।

**उस पर विश्वास रखना**

Believing in him

यूहन्‍ना का तीसरा अध्याय और उसका सोलवां पद हमें बताता है कि

*‘जो कोई उस (यीशु) पर विश्वास करे वह नाश न हो, परन्तु अनन्त जीवन पाए।’* (यूहन्ना 3:16)

तो क्‍या इसका अर्थ यह है कि सिर्फ कहने से कि “मैं यीशु पर विश्वास रखता हूँ”, हम पाप और मृत्यु से बच जाएँगे?

शुरू में ऐसा लग सकता है परन्तु आइये इस पर सोचें। यदि हम किसी बात में सचमुच विश्वास करते हैं तो क्या हम विश्वास के अनुसार वैसा ही नहीं करते हैं? यदि हमारा बच्चा बीमार हो और हम विश्वास करते हैं कि डॉक्टर उसे बचा सकता है, तो हम सिर्फ इतना ही कहकर कि, "मैं डॉक्टर में विश्वास रखता हूँ", हाथ पर हाथ धरे नही रह जाते हैं और बच्चे को तड़पने दें। बिल्‍कुल नही। बल्कि हम डॉक्टर को बुलाते हैं और इसलिये कि हम उस पर विश्वास रखते हैं, जो कुछ वह कहता है हम करते हैं।

ठीक यही विश्‍वास हमें प्रभु यीशु में रखना है। यदि हम सचमुच में उस पर विश्वास रखते हैं, तो हम पता लगाना चाहिये कि वे हमसे क्‍या चाहते है कि हम करें, और अपनी पूरी सामर्थ के साथ वैसा ही काम करें।यदि हम केवल ऐसा ही करें, तो हम अपने आप को उनके बीच में पाने की आशा कर सकते हैं जो कि नाश नही होंगे परन्तु अनन्त जीवन के भागी होंगे।

**सारांश**

Summary

1. आदम, मानव जाति के पिता, ने पाप किया और इस कारण परमेश्वर ने उसकी मृत्यु होने दी।
2. हम आदम के समान है, हम भी पाप करते हैं और इसलिये हम मरते हैं।
3. परमेश्वर हमारे पाप क्षमा कर देगा और हमें अनन्त जीवन देगा, यदि हम यीशु पर विश्वास रखते हैं।
4. यदि हम व़ास्‍तव में यीशु पर विश्वास रखते हैं, तो हम वैसा ही करना चाहेंगे जैसा वह हमसे कहता है।

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम नंबर 3*

# 3. प्रभु यीशु का पृथ्वी पर पुनः आगमन

3. The return of the Lord Jesus to the earth

साप्ताहिक पाठ – उत्पत्ति, अध्याय 7-9; लूका, अध्याय 7-10

प्रश्‍नोत्‍तर के लिये पाठ – प्रेरितों के काम 1; 2 थिस्सलुनीकियों 1

**दो हज़ार वर्ष पूर्व**

Two thousand years ago

यीशु को सलीव की मौत दी गई थी। उसके शिष्य व्याकुल और निराश हो गए थे। उनकी सब आशाएँ उसी पर थी- अब वह कबर में मृतक पड़ा था।

परन्तु तीसरे दिन वह जी उठा। उसके शिष्यों ने अवश्य ही उन शब्दों को याद रखा होगा जिन्हें कि उसने उनसे अपनी मृत्यु के पहले कहा था:

*‘तुम रोओगे और विलाप करोगे... तुम्हारा शोक आनन्द में बदक जाएगा।’* (यूहन्ना, अध्याय 16, पद 20)

अपने प्यारे प्रभु और स्वामी को फिर देखने में उन्हें कितना आनन्द हुआ होगा! यूहन्ना हमें बताता है, *‘तब चेले प्रभु को देखकर आनन्दित हुए’* (यूहन्ना, अध्याय 20, पद 20).

हम उनके आनन्द का अन्दाजा नही लगा सकते हैं।

**जब यीशु स्वर्ग चला गया**

When Jesus went to heaven

प्ररितों के काम के पहले अध्याय के प्रथम आठ पदों को फिर से पढ़िये। कल्‍पना कीजिये कि जी उठने के बाद चालीस दिनों तक जब यीशु अपने शिष्यों के बीच में रहा और फिर से उन्हें शिक्षा देते रहा तो वे कितने आनन्दित हुए होंगे।

चालीस दिनों के बाद आप उन्हें और उनके बीच यीशु को बैतनिय्याह की हरी पहाड़ियों पर खड़ा देखते हैं। अचानक वह उनके बीच में से ऊपर स्वर्ग पर उठा लिया गया। कितने अचम्‍भे से वे उस दृश्‍य को निहार रहे होंगे जब उन्‍ उसने पृथ्वी को छोड़ा और एक बादल ने उसे उनकी आखों से छिपा लिया। फिर से वह उनसे ले लिया गया। लेकिन इस समय वे न विस्मित हुए और न निराश हुए; बिल्‍कुल भी नही! लूका हमें बताता है,

*‘वह उनसे अलग हो गया और स्वर्ग पर उठा लिया गया। तब वे उसको दण्डवत्‍ करके बड़े आनन्द से यरूशलेम को लौट गए।’* (लूका 24:51-52)

**उनके आनन्द का भेद**

The secret of their joy

दूसरी बार उनसे अलग होने पर वे इतने आनन्दित क्यों थे? इसलिये कि यीशु ने उनसे एक प्रतिज्ञा की थी। उसने कहा था,

*‘देखो, मैं जगत के अन्त तक सदा तुम्हारे संग हूँ।’* (मत्ती, अध्याय 28, पद 20)

अतः वे जानते थे कि कुछ भी हो जाए, वह स्वर्ग से उनकी चौकसी करता रहेगा।

परन्तु सिर्फ इतना ही नहीं। जब वे उसे स्वर्ग में जाते हुए देख रहे थे, दो स्वर्गदूत एक संदेश लेकर उनके पास आए। उन्होंने कहा,"

*‘हे गलीली पुरूषो, तुम क्‍यों खड़े आकाश की ओर देख रहे हो? यही यीशु, जो तुम्हारे पास से स्‍वर्ग पर उठा लिया गया है, जिस रीति से तुम ने उसे स्‍वर्ग को जाते देखा है उसी रीति से वह फिर आएगा।’* (प्रेरितों के काम 1:11)

यह छोटा सा पद इतना महत्‍वपूर्ण है कि इसे हमेशा याद रखना चाहिये। जब शिष्य यरूशलेम को अपने प्रभु की आज्ञाओं का पालन करने हेतू वापस लौटे, तो उन्‍हें पक्‍का विश्‍वास था कि यीशु खुद पृथ्वी पर वापस लौटेगा। इस बात ने उनहें बहुत आनन्दित किया।

**यीशु के शब्द**

The words of Jesus

यह सब दो हज़ार वर्ष पूर्व हुआ और यीशु अभी तक वापस नहीं आये है।

परन्तु वह अवश्य आयेंगे। उन्‍होंने स्‍वंय ऐसा कहा। लूका के 21 वें अध्याय और 27 वें पद में व़े स्‍वंय बादल पर सामर्थ और बड़ी महिमा के साथ पृथ्वी पर वापिस आने के विषय में बताते है। (क्‍या आपने ध्यान दिया कि वे बादल में गये? और यह भी कि स्वर्गदूतों ने कहा कि जिस रीति से उन्होंने उसे ऊपर जाते देखा उसी रीति से वह लौटेगा?)

बहुत से दृष्टांत भी यीशु के पुनः आगमन के बारे में बताते हैं। उदाहरण के लिए मत्ती के 25 वें अध्याय और उसके पहले 13 पद में दिए हुए दृष्टांत को लीजिए। इसमें एक दूल्‍हे के बारे में लिखा है, और क्‍योंकि यह एक पूर्वी संस्‍कृति का विवाह का दृश्‍य है तो इसे समझना हमारे लिए मुश्किल नही है। यह दूल्हा वास्‍तव में और कोई नही मसीह है, और यह कहानी हमें चेतावनी देती है कि जब वह आएगा तो कुछ लोग ऐसे भी रहेंगे जो उसके आने के लिए तैयार न होंगे।

तेरवें पद को देखिये। यीशु ऐसा नही कहते है कि, "तुम नही जानते हो कि तुम्हारा प्रभु आएगा या नहीं" उसका आना निश्चित है। इसमें कोई सन्देह नहीं। परन्तु वे यह कहते है,

*‘तुम न उस दिन को जानते हो, न उस घड़ी को, जब मनुष्य का पुत्र लौटेगा।’* (मत्ती 25:13)

प्रकाशितवाक्य में यीशु ने अपने अन्तिम सन्देश में कहा,

*‘देख, मैं शीघ्र आनेवाला हूँ!’* (प्रकाशितवाक्य, अध्याय 22, पद 7)

**पतरस की गवाही**

The witness of Peter

यीशु के स्वर्गारोहण के कुछ ही दिनों पश्चात हम पतरस को यरूशलेम में मन्दिर में यहूदियों से, जो कि यीशु को क्रूस पर चढ़ाने में उतरदायी थे, निडरता पूर्वक बातें करते पाते हैं। प्रेरितों के काम, उसके तीसरे अध्याय में वह कहता है,

*‘इसलिये, मन फिराओ और लौट आओ कि तुम्हारे पाप मिटाए जाएँ, जिससे प्रभु के सम्मुख से विश्श्रान्‍ति के दिन आएँ, और वह यीशु को भेजे जो तुम्हारे लिये पहले ही से मसीह ठहराया गया है।’* (प्रेरितों के काम 3:19-20)

अपनी एक पत्री में जो उसने विश्वासियों को लिखी, पतरस मसीह के दुबारा आने के बारे में कहता है। पतरस की दूसरी पत्री, तीसरे अध्याय के चौथे पद में वह उनके बारे में कहता है जो ठट्ठा करते हुए कहेंगे,

*‘उसके आने की प्रतिज्ञा कहाँ गई? क्योंकि जब से बापदादे सो गए हैं, सब कुछ वैसा ही है जैसा सृष्टि के आरम्भ से था।’* (2 पतरस 3:4)

शायद आपने लोगों को कुछ ऐसे ही शब्दों का उपयोग करते हुए सुना हो। “ओह बहुत लम्बे समय से वे कहते आ रहे हैं कि यीशु वापस आने वाला है परन्तु वह अभी तक नही आया है;” और कभी यह भी जोड़ देते हैं “वह कभी नही आएगा।”

परन्तु परमेश्वर ने उसे भेजने की प्रतिज्ञा की है और हम जानते हैं कि वह अपनी प्रतिज्ञा को पूरा करेगा। 9 और 10 पद में पतरस कहता है,

*‘प्रभु अपनी प्रतिज्ञा के विषय में देर नहीं करता, जैसी देर कुछ लोग समझते हैं; पर तुम्हारे विषय में धीरज धरता है, और नहीं चाहता कि कोई नश हो, वरन्‍ यह कि सब को मन फिराव का अवसर मिलें। परन्तु प्रभु का दिन चोर के समान आ जाएगा।’* (2 पतरस 3:9-10)

**पौलुस की गवाही**

The witness of Paul

यीशु ने स्वंय पौलुस प्रेरित को दर्शन दिया और उसे दूसरों को उपदेश देने के लिये भेजा। पौलुस दावे से कहता है कि जिस सुसमाचार को उसने सुनाया, वह उसे यीशु मसीह द्वारा दिया गया। पौलुस ने प्रभु के पुनः आगमन के बारे में भी सिखाया। प्रेरितों के काम के 17 अध्याय में हम उसे यह कहते हुए पाते हैं,

*‘उसने (परमेश्‍वर ने) एक दिन ठहराया है, जिसमें वह उस मनुष्य के द्वारा धर्म से जगत का न्याय करेगा, जिसे उसने ठहराया है।’* (प्रेरितों के काम 17:31)

पौलुस ने थिस्सलुनीयों की कलीसिया को दो पत्री लिखी। आप इन पत्री को अपनी बाइबिल में पाएँगे - इसमें छोटे आठ अध्याय हैं – और सबसे विचित्र बात यह है कि हर अध्याय में पौलुस यीशु के पुन: आगमन के बारे में चर्चा करता है। थिस्सलुनीकियों के नाम पहली पत्री के चौथे अध्याय और उसके सोलवें पद में पौलुस प्रेरित यीशु के आने पर मृतकों के जी उठने के बारे में कहता है

*‘प्रभु आप ही स्‍वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्‍द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी; और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे।’* (1 थिस्सलुनीकियों 4:16)

थिस्सलुनीकियों के नाम दुसरी पत्री के पहले अध्याय और उसके सातवें और आठवें पद में पौलुस कहता है कि कैसे प्रभु यीशु...

*‘अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्‍वर्ग से प्रगट होगा, और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा।’* (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-8)

यहाँ वह बताता है कि यीशु मसीह के आने पर कुछ को दंड देगा। परन्तु यदि हम और आगे पढें तो हमें पता चलता हैं कि उसका आना कुछ के लिए आनन्द का कारण ठहरेगा, क्योंकि वह आएगा ताकि वे सब जो उसमें विश्वास करते हैं उनके द्वारा उसकी प्रंशसा की जाए।

यदि हम दृष्टान्त की कुँवारियों के समान बुद्धिमान हैं तो, हम उसके वचन को पढ़ेंगे और अभी अपने को उसके आगमन के लिये तैयार करेंगे। जब यीशु ने प्रेरित यूहन्ना से कहा, *‘मैं शीघ्र आनेवाला हूँ।’* (प्रका.22:20) यूहन्ना ने उत्तर दिया, *‘आमीन। हे प्रभु यीशु आ!’*

क्या हम प्रेरित के समान होंगे और उसके इन शब्दों को अपने हृदय की प्रार्थना बना लेंगे?

**सारांश**

Summary

1. यीशु मसीह पृथ्वी पर वापस आ रहे है।
2. इसकी हमें दृढ़ विश्‍वास है क्योंकि उन्‍होंने स्‍वंय इसका आश्वासन दिया।
3. स्वर्गदूतों ने भी ऐसा ही कहा, पतरस ने भी, पौलुस ने भी और यूहन्ना ने भी यही कहा।
4. यदि हम बुद्धिमान हैं, तो उसके आने के लिये हम अभी से तैयारी करेंगे।

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम*

### प्रश्नपत्र नं. 1 - पाठ 1 से 3

Long format questions – Lessons 1-3

**पहले पाठ पर प्रश्न**

1. बाइबिल और सब दूसरी पुस्तकों से भिन्न क्यों है?
2. एक कारण लिखिए कि आप बाइबिल मे क्यों विश्वास करते है?
3. तीमुथियुस को अपनी दूसरी पत्री में पौलुस प्रेरित ने धर्मशास्त्र की पुस्तकों के विषय में क्या लिखा? पत्री को देखकर उस भाग अर्थात् अंश को लिखिए।

**दूसरे पाठ पर प्रश्न**

1. आदम ने ईश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया। उसे क्या सजा मिलीं?
2. सब मनुष्य क्यों मरते हैं? अपने उत्तर के पक्ष में अर्थात् उसे प्रमरणित करने हेतु क्या आप धर्मशास्त्र के उचित अंश (पदों) को लिख सकते हैं?
3. पापी मनुष्यों को जीवन की आशा देने के लिए परमेश्वर ने क्या किया है और परमेश्वर हम से क्या करने की आशा रखता है?

**तीसरे पाठ पर प्रश्न**

1. जब शिष्य यीशु को स्वर्गरोहण करते देख रहे थे तब उनके लिए स्वर्गदूतों का क्या संदेश था?
2. यह प्रमाणित करने के लिए कि यीशु फिर आ रहा है क्या आप बाइबिल से दो अंशों अर्थात् उचित पदों का उल्लेख कर सकते हैं?
3. किस तरह से हम यीशु के आने के लिए तैयार रह सकते हैं जबिक वह आने वाला है?

धन्यवाद - हमारा पता:

क्रिस्टडेलफियनस, पी. ओ. बॉक्स 50, गाजियाबाद - 201001, उत्तर प्रदेश

The Christadelphians, P.O. Box 50, Ghaziabad, 201001, U.P.

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम नंबर 4*

# 4. तेरा राज्य आये

4. Thy kingdom come

साप्ताहिक पाठ – उत्पत्ति, अध्याय 12-14; लूका, अध्याय 11-14

प्रश्‍नोत्‍तर के लिये पाठ – 1 इतिहास, अध्याय 29

***‘तेरा राज्य आए। तेरी इच्छा जैसी स्वर्ग में पूरी होती है, वैसे पृथ्वी पर भी हो’***

‘Thy kingdom come, thy will be done on earth as it is in heaven’

कितनी बार आपने इन शब्दों को कहा है या दूसरों को कहते सुना है? जो प्रार्थना यीशु ने अपने शिष्यों को सिखाई यह उसी प्रार्थना का हिस्‍सा है। आप इसे मत्ति की पुस्‍तक के अध्‍याय 6 और पदों 9-13 में पढ़ सकते है। इस प्रार्थना के शब्दों को हम भली भांति जानते हैं पर क्या हम उनके अर्थ को जानते हैं?

एक बार फिर से इन शब्दों पर ध्यान दीजिये। यह एक प्रार्थना है कि परमेश्वर का राज्य आए और जैसे कि उसकी इच्छा इस स्‍वर्ग में पूरी होती है वैसे ही पृथ्‍वी पर भी हो। अत: स्‍पष्‍ट है कि जिस राज्‍य के लिए हमें प्रार्थना करनी है वह राज्‍य यहां इस पृथ्‍वी पर स्‍थापित होना है। और जब परमेश्वर का राज्य आयेगा तो पुरुष और स्त्रियाँ उसकी इच्छा की पूरा करेंगे।

**एक समय परमेश्‍वर का राज्य पृथ्वी पर था**

There was once a kingdom of the Lord on earth

क्या आप जानते थे कि हज़ारों वर्ष पूर्व यथार्थ में परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर था। पहला इतिहास के 29 वें अध्याय और उसके पहिले पद और तब 10 से 13 पद को पढ़िये। ग्यारवें पद पर विशेष ध्यान दीजिए जो इस प्रकार है:

*‘हे यहोवा! राज्य तेरा है, और तू सभों के ऊपर मुख्य और महान्‍ ठहरा है।’* (1 इतिहास 29:11)

जिस राज्य का वर्णन किया गया है, वह इस्राएल का राज्य है जो इस्राएल देश में है। अब 23 वें पद को पढ़िये।

*‘तब सुलैमान अपने पिता दाऊद के स्थान पर राजा होकार यहोवा के सिंहासन पर विराजने लगा’* (1 इतिहास 29:23)

जिस सिंहासन पर दाऊद बैठा और उसके बाद उसका पुत्र सुलैमान बैठा, वह यरूशलेम में था, जो इस्राएल का एक मुख्‍य शहर था। और वह राज्‍य जिस पर उसने शासन किया इस्राएल का राज्य था।

इस्राएल का राज्‍य क्यों परमेश्वर का राज्य कहलाता था और उसका सिंहासन क्यों *‘यहोवा का सिंहासन’* कहलाता था? यह इसलिये क्योंकि ईश्वर ने स्वयं इस्राएलियों को यह राज्य दिया था; उसने यरूशलेम को राजधानी के लिये चुन लिया था (राजाओं का वृत्तान्त पहिला भाग, अध्याय 11, पद 13); परमेश्वर ने वह व्‍यवस्‍था दी जिसके द्वारा राज्‍य को चलाया जाना था। (यह आप बाईबल की पुस्‍तकों लैव्‍यव्‍यवस्‍था, गिनती और व्‍यवस्‍थाविवरण में देख सकते हो); और जिस राजा ने शासन किया उसने परमेश्‍वर के लिए राज्‍य किया।

**यहोवा के राज्य को उलट दिया जाना**

The kingdom of the Lord overthrown

सैकड़ों वर्ष व्यतीत हो गये। एक राजा के बाद दूसरे राजा ने यरूशलेम में इस्राएल पर राज्य किया। कुछ अच्छे राजा थे जिन्होने ईश्वर का भय मानते हुये राज्य किया और कुछ दुष्ट राजा थे।

अन्त में एक ऐसा दिन आ गया जब कि इस्राएल राज्य ईश्वर के बताऐ हुए मार्गों से इतना दूर चला गया और जो राजा यरूशलेम में राज्य करता था वह इतना दुष्ट (अधर्मी) हो गया कि परमेश्वर ने कहा कि इस्राएल के राज्य को और अधिक नहीं रहना चाहिये।

यहेजकेल पुस्तक के 21 वें अध्याय और उसके 25 से 27 पद तक पढ़िये। विशेष कर 27 वें पद को ध्यान से पढ़िये जिसमें लिखा है,

*‘मैं उसको उलट दूँगा और उलट पुलट कर दूँगा; हाँ उलट दूँगा और जब तक उसका अधिकारी न आए तब तक वह उलटा हुआ रहेगा; तब मैं उसे दे दूँगा।’* (यहेजकेल 21:27)

**वह जिसका इस पर अधिकार है**

He whose right it is

यहेजकेल की पुस्‍तक के ऊपर लिखे पदों में हम पढ़ते हैं कि एक राजा आने वाला था जिसे परमेश्वर के राज्य के सिंहासन का अधिकार होना था - एक जो कि उत्तराधिकारी था - और परमेश्वर उसे वह देने जा रहा था।

उस दिन से जब कि अन्तिम राजा सिंहासन से हटा दिया गया तब से लेकर आज तक यरूशलेम में कोई इस्राएली राजा नहीं हुआ है।

अपनी बाइबिल में लूका के पहिले अध्याय और उसके 31 से 33 पदों के शब्दों को पढिये, ये शब्‍द यीशु की माता मरियम को एक स्‍वर्गदूत के द्वारा कहे गये थे। यीशु के बारे में बोलते हुए स्वर्गदूत कहता है,

*‘वह महान होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा।’* (लूका 1:32)

यीशु ने राजा होने का दावा किया। उसके मुकदमे के समय जब पिलातुस ने उससे पूछा, *‘तो क्या तू राजा है?’* यीशु ने उत्तर दिया, *‘तू कहता है मैं राजा हूँ।’* (यूहन्ना 18:37) यह यहूदियों के कहने का तरीका है कि ‘हां, मैं राजा हूँ।’

जिस क्रूस पर उसे चढाया गया था उस पर लिखा था *‘यह यहूदियों का राजा यीशु है’* (मत्ती अध्याय 27, पद 37)। उसके शत्रु उसका ठट्ठा उड़ाना चाहते थे परन्तु जो उन्होंने कहा वह सच था।

जिस सुसमाचार का यीशु ने प्रचार किया वह परमेश्वर के राज्य का शुभ सन्देश था। (सुसमाचार का अर्थ है शुभ संदेश) लूका के आठवें अध्याय और उसके पहिले पद में हम पढ़ते हैं कि,

*‘वह नगर-नगर और गाँव-गाँव प्रचार करता हुआ, और परमेश्वर के राज्य का सुसमाचार सुनाता हुआ फिरने लगा।’* (लूका 8:1)

अब आप जानते हैं क्यों यीशु वापिस आ रहा है। वह परमेश्वर के राज्य को फिर से स्थापित करने के लिए आ रहा है।

**परमेश्‍वर का राज्य और हम**

The kingdom and ourselves

शायद आप सोचते होंगे कि तो फिर “हम तब यह प्रार्थना क्यों करें कि तेरा राज्य आये?” यदि यह एक इस्राएली राज्य है, तो हम को इससे क्या करना है?

जैसे जैसे आप इस अध्‍ययन को करेंगे तो आप सीखेंगे कि यीशु जिस राज्य पर प्रभुता करेगा वास्‍तव में उसका विस्तार परमेश्वर के पहिले राज्य से कहीं अधिक होगा, यह पूरी पृथ्वी पर होगा और वह राज्य सब लोगों को शान्ति देगा।

इसलिए हम प्रार्थना करते है *‘तेरा राज्य आए’* और हम यह भी प्रार्थना करते हैं कि जब यीशु वापिस आता हैं, तो वह हमसे कहे

*‘हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिए तैयार किया गया है।’* (मत्ती, अध्याय 25, पद 34)

देखिए किस तरह से बाइबिल का हर भाग दूसरे भागों को समझाने में सहायता करता है!

**अब हम सीख चुके है;**

We have now learned that

1. कि परमेश्वर का राज्य एक समय में इस्राएल देश में था।
2. परमेश्वर ने उस राज्य का अन्त किया परन्तु उसके सही उत्तराधिकारी को देने की प्रतिज्ञा की।
3. वह अधिकारी यीशु है और वह यरूशलेम में दाऊद के सिंहासन पर विराजमान होगा जहाँ से वह इस्राएलियों पर सदैव के लिए राज्य करेगा।
4. सब विश्वासी जन इस राज्य की आशीषों के सहाभागी होंगे।

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम नंबर 5*

# 5. परमेश्वर का राज्य – पृथ्वी पर शान्ति

5. The kingdom of God – peace on earth

साप्ताहिक पाठ – उत्पत्ति, अध्याय 15-17; लूका, अध्याय 15-18

प्रश्‍नोत्‍तर के लिए पाठ – भजन संहिता 72; यशायाह, अध्याय 35

**पृथ्वी पर शान्ति – कब?**

Peace on earth – when?

जब यीशु का जन्म हुआ तो स्वर्गदूतों ने आनन्द में होकर गीत गाये। उनके गीत के शब्द लूका के दूसरे अध्याय और उसके चौदवें पद में लिखें हैं।

*‘आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर उन मनुष्यों में जिनसे वह प्रसन्न है शान्ति हो।’* (लूका 2:14)

तब भी उस दिन से आज तक पृथ्वी पर सच्ची और स्थाई शान्ति कभी नही हुई है। और न ही होगी जब तक कि यीशु परमेश्वर के राज्य को स्थापित करने के लिए इस्राएल में दौबारा नही आयेंगे।

पुराना नियम हमें उस राज्य के बारे में बहुत कुछ बताता है जो शान्ति और समृद्धि वह राज्य लाएगा उसके कई चित्रों को दर्शित करता है।

**उस राज्य का विस्तार**

The extent of the kingdom

भजन संहिता 72 को पढ़िए। इस भजन में हमें उस समय का चित्र दिया गया है जब कि परमेश्वर का राज्य पृथ्वी पर होगा। परन्तु पल भर के लिए आठवें पद पर विचार कीजिए।

*‘वह समुद्र से समुद्र तक और महानद से पृथ्वी की छोर तक प्रभुता करेगा।’* (भजन संहिता 72:8)

यह पद हमें बताता है कि यीशु द्वारा इस्राएल में स्थापित राज्य का विस्तार पूरी पृथ्वी पर होगा। यही बात हम भजन संहिता के दूसरे अध्याय और उसके आठवें पद में पाते हैं जहाँ परमेश्वर यीशु से कहता है,

*‘मुझ से माँग, और मैं जाति जाति के लोगों को तेरी सम्‍पत्ति होने के लिये, और दूर दूर के देशों को तेरी निज भूमि बनने के लिये दे दूँगा।’* (भजन संहिता 2:8)

एक और पद को देखें। जकर्याह के 14 वें अध्याय और उसके नवें पद को पढ़िए।

*‘तब यहोवा सारी पृथ्वी का राजा होगा; और उस दिन एक ही यहोवा और उसका नाम भी एक ही माना जाएगा।’* (जकर्याह 14:9)

**मसीह का शासन (राज्य)**

The rule of Christ

यीशु मसीह, अपनी राजधानी, यरूशलेम से राज्य (शासन) करेगा, जिसको उसने एक बार *‘महाराजा का नगर’* कहा था (मत्ती 5:35)।

उसकी व्यवस्था समस्त पृथ्वी में फैल जाएगी जैसा कि हम यशायाह के 2 अध्याय और उसके 1-4 पदों में पढ़ते हैं कि,

*‘यहोवा की व्यवस्था सिय्योन से, और उसका वचन यरूशलेम में से निकलेगा।’* (यशायाह 2:3)

**एक आदर्श राज्य**

An ideal kingdom

मान लीजिए आप से पूछा जाये कि आप किन परिस्थितियों में एक आदर्श संसार में रहना पसन्‍द करेंगे। सबसे पहली बात जो आप सोचेंगे वह है सुरक्षा; डर से स्‍वतन्‍त्रता , और अपने परिश्रम के फलों का आनन्द लेने के लिए शान्ति। वस्तुतः आपके मस्तिष्‍क में शायद कुछ ऐसी ही तस्‍वीर हो जैसी मीका बताता है:

*‘वह बहुत से देशों के लोगों का न्याय करेगा, और दूर दूर तक की सामर्थी जातियों के झगड़ों को मिटाएगा; इसलिये वे अपनी तलवारें पीटकर हल के फाल, और अपने भालों से हँसिया बनाएँगे; तब एक जाति दूसरी जाति के विरूद्ध तलवार फिर न चलाएगी; और लोग आगे को युद्ध-विद्या न सीखेंगे। परन्तु वे अपनी अपनी दाखलता और अंजीर के वृक्ष तले बैठा करेंगे, और कोई उनको न डराएगा; सेनाओं के यहोवा ने यही वचन दिया है।’* (मीका, अध्याय 4, पद 3-4)

परन्तु इसके पहिले कि शान्ति हो, मनुष्यों द्वारा परमेश्वर के द्वारा बताए हुए मार्गों पर चलने के लिए सच्चा प्रयास होना चाहिए। जब तक मनुष्‍य अपने ही मार्गो पर चलते रहेंगे, संकट बना रहेगा। इसलिए प्रभु यीशु का सबसे पहला काम सभी राष्ट्रों को परमेश्वर के मार्गों को सिखाना होगा।

परन्तु आप कह सकते है कि कुछ ऐसे भी होंगे जो नही सुनेंगे! यह सच है, और जो उनकी आज्ञा का पालन नहीं करेंगे उन्हें सजा मिलेगी (वे दण्ड के भागी होंगे) जैसा कि हम यशायाह में पढ़ते हैं: *‘अपने फूँक के झोंके से दुष्ट को मिटा डालेगा’* (यशायाह 11:4) – क्योंकि स्मरण रखिए जब यीशु वापिस आयेंगे तो वे सर्व सामर्थी होगा।

यीशु के शासन में उसकी प्रभुता में, सब लोग वही करना सीखेंगे जिससे परमेश्वर प्रसन्न हो- यशायाह अध्याय 26 और उसका नौवां पद हमें यही बताता है

*‘जब तेरे न्याय के काम पृथ्वी पर प्रगट होते हैं, तब जगत के रहनेवाले धर्म को सीखते हैं।’* (यशायाह 26:9)

यशायाह के अध्याय 32 में आप पढ़ेंगे, *‘धर्म का फल शान्ति और उसका परिणाम सदा का चैन और निश्चिन्त रहना होगा।’* (यशायाह 32:17)

**सभी के लिए समृद्धि**

Prosperity for all

ऐसी समपूर्ण स्थितियों में सब तरफ उन्नति होगी। क्‍या आपने भजन संहिता अध्याय 72 को पढ़ा वह कहता है,

*‘देश में पहाड़ो की चोटियों पर बहुत सा अन्न होगा।’* (भजन संहिता 72:16)

पहाड़ों की चोटियाँ सामान्‍यत: बहुत निर्जन (खाली) रहती हैं। यदि पहाड़ो की चोटियों पर मुट्ठी भर अन्न है तो हम कल्पना कर सकते हैं कि घाटियों में अन्न की कितनी बहुतायत होगी। भजन संहिता 67 और उसके 6 पद में हम पढ़ते हैं।

*‘भूमि ने अपनी उपज दी है, परमेश्वर जो हमारा परमेश्वर है, उसने हमें आशीष दी है।’* (भजन संहिता 67:6)

मरुस्थल भी उन दिनों में हरे होंगे। यशायाह अध्याय 35 के उन सुन्दर पदों को पढ़िए जो हमें बताते हैं किस तरह से,

*‘जंगल और निर्जल देश प्रफुल्लित होंगे, मरुभूमि मगन होकर केसर के समान फूलेगी; वह अत्यन्त प्रफुल्लित होगी और आनन्द के साथ जयजयकार करेगी।’* (यशायाह 35:1-2)

**मानसिक और शारीरिक चंगाई**

Healing of mind and body

इन आशीषों के साथ अच्छे स्वास्थय और शारीरिक शाक्ति की आशीषें भी आएँगी।

लगभग दो हजार वर्ष पूर्व जब यीशु इस पृथ्वी पर थे, उन्‍होंने परमेश्वर द्वारा दी गई सामर्थ को उपयोग में लाकर बहुत से रोगियों को चंगा किया। परमेश्वर के राज्य में यह सामर्थ फिर से देखी जाएगी। इस विषय में यशायाह अध्याय 35 और उसके 5 और 6 पद को पढ़िए।

*‘तब अंधों की आँखें खोली जाएँगी और बहिरों के कान भी खोले जाएँगे; तब लंगड़ा हरिण की सी चौकड़ियाँ भरेगा और गूँगे अपनी जीभ से जयजयकार करेंगे।’* (यशायाह 35:5-6)

हम यह भी अनुमान लगा सकते हैं कि लोगों की आयु वर्तमान समय की आयु से और अधिक होगी। जकर्याह नबी 8 अध्‍याय के 4 और 5 पद में बताते है कि ऐसा ही होगा।

*‘यरूशलेम के चौकों में फिर बूढ़े और बुढ़ियाँ बहुत आयु की होने के कारण, अपने अपने हाथ में लाठी लिए हुए बैठा करेंगी। नगर के चौक खेलनेवाले लड़कों और लड़कियों से भरे रहेंगे।’* (जकर्याह 8:4-5)

ये पद यरूशलेम विषय में बताते हैं परन्तु जैसा हमने देखा है परमेश्वर के राज्य की आशीषों का विस्तार सारी पृथ्वी पर होगा।

**परमेश्वर का विश्‍वस्‍त वचन**

The sure word of God

शायद आप सोचते हों “यह सब सुनने में तो बहुत अच्छा है, मन भावना है परन्तु यह इतना अच्छा है कि सच नही हो सकता है।”

यदि वे प्रतिज्ञाएँ जिनके बारे में हम पढ़ चुके हैं मनुष्यों द्वारा की गई होती तब निश्चय ही हम उनमें कोई भरोसा, कोई विश्वास न कर सकते। अच्छे से अच्छे आदमी भी जो प्रतिज्ञाएँ करते है वे भी मानवीय दुर्बलताओं के कारण उन्‍हें पूरा नही कर सकते।

परन्तु ये परमेश्वर की प्रतिज्ञाएँ हैं और उनमें हम अपना पूर्ण विश्वास रख सकते हैं।

यशायाह अध्याय 55, पद 6 से 11 तक पढ़िए विशेष रूप से 11 पद को ध्यान पूर्वक पढ़िये,

*‘उसी प्रकार से मेरा वचन भी होगा जो मेरे मुख से निकलता है; वह व्यर्थ ठहरकर मेरे पास न लौटेगा, परन्तु जो मेरी इच्छा है उसे वह पूरा करेगा, और जिस काम के लिये मैं ने उसको भेजा है उसे वह सुफल करेगा।’* (यशायाह 55:11)

और इस तरह से हम आनन्द से उस समय की प्रतीक्षा कर सकते है जब, "*आकाश में परमेश्वर की महिमा और पृथ्वी पर...शान्ति होगी’*’ (लूका, अध्याय 2, पद 14)

**सारांश**

Summary

1. जब यीशु वापिस आयेंगे, तो वे संसार के राजा बनेंगे।
2. यरूशलेम उस राज्‍य की राजधानी होगी।
3. समस्त संसार में शान्ति और समृद्धि, स्वास्थ्य और आनन्द होगा।
4. उसके संसार में व्याप्त राज्य में, हर एक जन परमेश्वर की आज्ञाओं का पालन करना सीखेगा।

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम नंबर 6*

# 6. इस्राएली राष्‍ट्र किस तरह से परमेश्‍वर की योजना में है - पहला भाग

(How the children of Israel fit into God’s plan – Part 1)

साप्ताहिक पाठ – उत्पत्ति, अध्याय 18-20; लूका, अध्याय 19-21

प्रश्‍नोत्‍तर के लिये पाठ – उत्पत्ति, अध्याय 37; यशायाह 43

**कहानी का आरम्भ**

The beginning of the story

इस्राएलियों की कहानी वास्‍तव में उस विश्वासी पुरुष से आरम्भ होती है जिसका नाम अब्राहम था। जिसे वृद्धावस्था में एक पुत्र हुआ जिसका नाम इसहाक था और इसहाक के एक पुत्र का नाम याकूब था जिसको बाद में इस्राएल कहा गया और जो कि बाद में इस्राएल के बारह गोत्रों का पिता हुआ।

इन पुत्रों में सबसें छोटे पुत्र का नाम युसुफ था। उसके जीवन की कहानी जो बाइबिल में हे उसे पढ़ने से हम कभी थकते नही हैं। लेकिन यह एक अच्छी कहानी से कही अधिक है। यह हमें इतिहास में बाइबिल के लोगों, इस्राएलियों, के साथ घटी महत्वपूर्ण घटनाओं के बारे में बताती है। यह इस बात का एक अदभुत उदाहरण है कि किस प्रकार परमेश्वर ने अपने लोगों की देखभाल की और उनकी रक्षा की।

हम सब को वह कहानी याद है कि कैसें युसुफ के ईष्यालु भाइयों ने उसे गुलाम बनाकर बेच दिया। और किस प्रकार कई परीक्षाओं के बाद वह मिस्र का राज्‍यपाल बन गया। और फिर अकाल के समय युसुफ का पिता और उसके भाई मिस्र में युसूफ का और परमेश्‍वर का धन्‍यवाद देने के लिए आये क्‍योंकि मिस्र में उस अकास के समय अनाज उपलब्‍ध था।

कुछ समय के लिए यहूदी जो कि आरम्भ में इस्राएली कहलाते थे मिस्र में काफी खुश थे। परन्तु युसुफ की मृत्यु के बाद जैसे जैसे यहूदियों की संख्या मिस्र में बढ़ती गई, मिस्रियों ने उन्हें सताना शुरु कर दिया और उनके साथ गुलामों जैसा व्यवहार करने लगे।

**गुलामों के लिये स्वतन्त्रता**

Freedom for the slaves

शायद आप उस कहानी को जानते हैं कि किस तरह से मूसा की अगुआई में परमेश्वर ने इन यहूदी गुलामों को मिस्र से निकाला और एक बंजर और मरुभूमि में से होते हुए उन्हें इस्राएल देश के छोर पर पहुँचा दिया। इस लम्बी और खतरनाक यात्रा में परमेश्वर ने उन्हें भोजन दिया और उनकी देखभाल की। नहेम्याह के नौवें अध्याय और उसके 20 और 21 पद में हम पढ़ते हैं,

*‘वरन्‍ तू ने उन्हें समझाने के लिये अपने आत्मा को जो भला है दिया, और अपना मन्ना उन्हें खिलाना न छोड़ा, और उनकी प्यास बुझाने को पानी देता रहा। चालीस वर्ष तक तू जंगल में उनका ऐसा पालन पोषण करता रहा, कि उनको कुछ घटी न हुई; न तो उनके वस्त्र पुराने हुए और न उनके पाँव में सूजन हुई।’* (नहेम्याह 9:20-21)

परमेश्वर ने दुष्ट जातियों को जो इस्राएल देश में रहती थी, बाहर निकाल दिया और यह देश यहूदियों को दिया। उसने उन्‍हें व्यवस्था दी और न्याय करने के लिए उनके लिये न्यायियों को चुना। उसने उनसे कहा “यदि तुम आज्ञाकारी न रहोगे तो तुम्हें दण्‍ड मिलेगा”। व्यवस्थाविवरण के 28 वें अध्याय में हम उन आशीषों के बारे में पढ़ते हैं जो परमेश्वर उन्हें आज्ञाकारी रहने पर देगा और उन श्रापो के विषय में भी पढ़ते है जो ईश्‍वर उन्‍हें आज्ञा पालन न करने पर देगा।

**यहुदियों की एक राजा के लिए माँग**

The Jews demand a king

लगभग 400 वर्ष गुजर गए। इन वर्षों में परमेश्वर ने इस्राएल के बारह गोत्रों पर न्याय करने के लिए न्यायियों को नियुक्त किया था। याकूब के वंशज बारह कुटुम्बों में जो गोत्र कहलाते थे विभाजित हो चुके थे। परन्तु यहूदी असन्तुष्ट हो गए और उनके चारो ओर दूसरी जातियों के समान ही वे भी एक राजा चाहते थे। एक राजा की माँग करने का अर्थ था कि वे परमेश्वर को अपना राजा मानना स्वाकार नहीं कर रहे थे। जब उनके न्यायी शमूएल ने ईश्वर से कहा किस प्रकार वे एक राजा की मांग कर रहे है तो यहोवा ने शमूएल से कहा,

*‘उन्होंने तुझ को नहीं परन्तु मुझी को निकम्मा जाना है कि मैं उनका राजा न रहूँ।’* (1 शमूएल 8:7)

परमेश्वर (यहोवा) ने उनकी विनती को पूरा किया और उन्हें एक राजा दिया जैसा कि वे चाहते थे। आप इस्राएलियों के पहले राजा, शाऊल, के अभिषेक की इस रोचक कहानी को पढ़ना चाहेंगे। इस कहानी को आप शमूएल की पहली पुस्तक के आठवें और नौवें अध्याय में पाएँगे।

**एक विभाजित राज्य**

A divided kingdom

शाऊल के बाद महान राजा दाऊद आया जिसके बारे में आगे के पाठों में विस्‍तार से दिया गया है। चालीस वर्ष के लम्बे राजकाल के बाद दाऊद की मृत्यु हो गई और उसका पुत्र सुलैमान राजा बना। सुलैमान बहुत धनवान था। वह अपनी प्रजा पर खूब कर लगाता था। इससे लोग असन्तुष्ट हो गए और जब सुलैमान मर गया, वे उसके पुत्र रहूबियाम के पास आए और उससे उनके कर के बोझ को हलका करने के लिए कहा।

राजाओं का वृतान्त के पहिले भाग और उसके बारवें अध्याय में आप पढ़ेंगे कि कैसे रहूबियाम ने बुद्धिमान वृद्ध पुरुषों, जो उसके पिता के सलाहकार थे, उनकी सलाह न लेकर अपने युवा मित्रों की सलाह को सुना। तब लोग रहूबियाम राजा के पास पूछने आए कि क्‍या वह उनकी प्रार्थना से सहमत है, तो उसने बहुत बुद्धिहीनता से उत्तर दिया। ‘हम राजाओं का वृनान्त’ के पहिले भाग के बारवें अध्याय और उसके तेरवें और चौदवें पद में पढ़ते हैं कि राजा ने लोगों (प्रजा) को कठोरता से उत्तर दिया और कहा,

*‘मेरे पिता ने तो तुम्हारा जुआ भारी कर दिया, परन्तु मैं उसे और भी भारी कर दूँगा; मेरे पिता ने तो कोडों से तुम को ताड़ना दी, परन्तु मैं तुम को बिच्छुओं से ताड़ना दूँगा।’* (1 राजाओं 12:14)

कोई आश्चर्य नही की प्रजा ने ऐसे राजा के विरुद्ध राजद्रोह किया। इस्राएल के दस गोत्र देश छोड़कर चले गर और यारोबाम नामक व्यक्ति की अधीनता में उन्होने अपने एक राज्य का गठन किया। केवल यहूदा वह गोत्र जिसमें से रहूबियाम था और बिन्यामीन का छोटा गोत्र रहूबियाम के राजभक्त बने रहे। इस समय से बाइबिल में दो इतिहासों का वर्णन साथ-साथ पढ़ते है। दस गोत्रों का इतिहास जो बहुधा ‘इस्राएल’ या उत्तरी राज्य (क्‍योंकि वे भूमि के उत्‍तरी भाग में रहते थे)कहलाता है और दो गोत्रों का इतिहास जो ‘यहूदा’ या दक्षिणी राज्य कहलाता है।

**यहूदियों द्वारा निरन्तर ईश्‍वर की आज्ञाओं का उल्लंधन**

The continual disobedience of the Jews

राजाओं की पहिली और दूसरी पुस्तकों में हम उस दुखद कहानी को पढ़ते हैं कि किस तरह से लोगों ने निरन्तर परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्‍लंघन किया और वे ईश्‍वर को भूल गए और उसके मार्गों का त्याग कर दिया।

अन्त में दशा इतनी खराब हो गई कि परमेश्वर (यहोवा) ने कहा वह लोगों को दण्ड देगा जिसकी चेतावनी उसने उन्हें निरन्तर दी थी – और उनको उनके देश से गुलाम बनाकर बाहर कर दिया।

इतिहास के दूसरे भाग के 36 वें अध्याय और उसके 15 और 16 पद को पढ़ने से आपको मालूम होगा कि परमेश्वर (यहोवा) ने अपने लोगों को, जो उसकी विधियों को छोड़कर भटक गए थे, उनको वापिस उसके मार्गों पर लाने के लिए वह सब किया जो वह कर सकता था।

*‘उनके पूर्वजों के परमेश्वर यहोवा ने बड़ा यत्न करके अपने दूतों से उनके पास कहला भेजा, क्योंकि वह अपनी प्रजा और अपने धाम पर तरस खाता था; परन्तु वे परमेश्वर के दूतों को ठट्ठों में उड़ाते, उसके वचनों को तुच्छ जानते, और उसके नबियों की हँसी करते थे। अतः यहोवा अपनी प्रजा पर ऐसा झुँझला उठा कि बचने का कोई उपाय न रहा।’* (2 इतिहास 36:15-16)

**अन्त में दण्‍ड**

Punishment at last

पहले इस्राएल, उत्तरी राज्य, बन्धुवाई में ले लिया गया। अश्शूर का राजा आया और इस्राएलियों को अश्शूर ले गया और फिर से कभी वे एक जाति होकर अपने देश को न लौट सके। इसके बारें में आप 2 राजा के 17 वें अध्याय और उसके 6 से 18 पद पढ़ सकते हैं। 23 वें पद में लेखक कहता है

*‘अन्त में यहोवा ने इस्राएल को अपने सामने से दूर कर दिया, जैसा कि उसने अपने सब दास भविष्यद्वक्ताओं के द्वारा कहा था। इस प्रकार इस्राएल अपने देश से निकालकर अश्शूर को पहुँचाया गया, जहाँ वह आज के दिन तक रहता है।’* (2 राजा 17:23)

बाद में यहूदा का राज्य भी बाबुल के राजा द्वारा बन्धुवाई में ले लिया गया। परन्तु यहूदा राज्य के लोगों की दशा ऐसी खराब नहीं थी जैसी कि इस्राएल के लोगों की। परमेश्वर (यहोवा) ने प्रतिज्ञा की कि सत्तर वर्ष पश्चात वे उनके देश को वापिस लाए जायेंगे और जो मन्दिर बाबुल के राजा नबूकदनेस्सर द्वारा नष्ट कर दिया गया था वह फिर से बनाया जायेंगा।

**अपने देश में फिर वे वापिस**

Back in their own land again

कुछ यहूदी बाबुल में इतने सुखी और धनी हो गए थे कि वे वापिस अपने देश को नही जाना चाहते थे। लेकिन एक विश्‍वासी समूह को यहोवा द्वारा तैयार किया गया कि अपने देश में जाने के लिए इन लोगों की अगुवाई करें और मंदिर को बनाने और एक नये जीवन की शुरूआत करें।

उन्हें बहुत सी कठिनाइयों का सामना करना पड़ा परन्तु उन्हें प्रोत्साहन देने, उन्हें सुधारने के लिए यहोवा ने नबी भेजे। पुराने नियम की अन्तिम तीन पुस्तके हाग्गै, जकर्याह और मलाकी इन भविष्यद्वक्ताओं द्वारा लिखी गई पुस्‍तकें हैं।

मीका नबी द्वारा (मीका 3 अध्याय और उसके 6 पद में) यहोवा ने उस समय के बारें में बताया कि जब *‘भविष्यद्वक्ताओं के लिये सूर्य अस्त होगा’*। और मलाकी के समय से लेकर यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले के समय (जिसके बारे में हम नए नियम में पढ़ते हैं) तक यहोवा की ओर से लोगों के लिए कोई वचन नहीं था केवल वह जो पहिले ही लिखा जा चुका था।

लेकिन तो भी यहूदी ईश्‍वर के लोग थे और आज भी है। अगले पाठ में हम उनके पिछले जीवन के इतिहास लेकर उनके वर्तमान जीवन के विषय में पढ़ेंगे।

**सारांश**

Summary

1. हजारों वर्ष पूर्व, परमेश्वर (यहोवा) ने इस्राएलियों को अपनी विशेष प्रजा होने के लिए और उनको आज्ञाओं का पालन करने के लिए चुन लिया।
2. वह उन्हें इस्राएल देश में लाया और बाद में उन्हें एक राजा दिया।
3. वे दो भिन्न राज्यों में विभाजित हो गए, एक इस्राएलियों का राज्य और दूसरा यहूदा का राज्य।
4. इस्राएल और यहूदा दोनों राज्यों के लोग विदेशों में बन्धुवाई में ले जाए गए।
5. 70 वर्ष बाद यहूदा के लोग अपने देश को लौटे और जैसा हम आगे के पाठ में देखेंगे वे वहाँ पर थे जिस समय उसके बीच में यीशु का जन्म हुआ।

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम*

### प्रश्नपत्र नं. 2 - पाठ 4 से 6

Long format questions – Lessons 4-6

**चौथे पाठ पर प्रश्‍न**

1. किस देश में एक समय परमेश्वर का राज्य विद्यमान था?
2. वह क्यों परमेश्वर का राज्य कहलाता था?
3. वह राज्य परमेश्वर द्वारा उलट दिया गया। उसकी पुन: स्थापना कब की जाएगी और किसके द्वारा? अपने उत्तर के समर्थन में क्या आप बाईबल से उस उचित अशं को लिख सकते हैं?

**पाँचवें पाठ पर प्रश्न**

1. परमेश्वर का राज्य कहाँ तक होंगा?
2. कौन सा नगर (शहर) उस राज्य की राजधानी होगी? अपने उत्तर के सामर्थन में क्या आप बाईबल से उचित अंश को लिख सकते हैं?
3. जब परमेश्‍वर का राज्‍य स्‍थापित होगा तो संसारका राज्‍य किस प्रकार का हो जाएगा?

**छटवें पाठ पर प्रश्न**

1. इस्रायल के आरिम्भक इतिहास के तीन महापुरुषों के नाम बताइए?
2. रहुबियाम के राज्य काल में क्या हुआ?
3. परमेश्वर (यहोवा) की आंज्ञाओं का निरन्तर उल्लंघन करने से यहूदियों को किस तरह से दण्ड दिया गया?

धन्यवाद - हमारा पता:

क्रिस्टडेलफियनस, पी. ओ. बॉक्स 50, गाजियाबाद - 201001, उत्तर प्रदेश

The Christadelphians, P.O. Box 50, Ghaziabad, 201001, U.P.

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम नंबर 7*

# 7. इस्राएली राष्‍ट्र किस तरह से परमेश्‍वर की योजना में है - पहला भाग

7. How the children of Israel fit into God’s plan – Part 2

साप्ताहिक पाठ – उत्पत्ति, अध्याय 21-23; लूका, अध्याय 22-24

प्रश्‍नोत्‍तर के लिये पाठ – व्यवस्थाविवरण, अध्याय 28; जकर्याह 8

**पुराने और नए नियम के बीच**

Between the Old and New Testaments

70 वर्ष की बन्धुवाई के पश्चात्‍ यहूदी बाबुल से इस्राएल देश को आ गए थे। भविष्यद्वक्ताओं से प्रोत्साहित किए जाने पर उन्होंने यरूशलेम में यहोवा के मन्दिर को फिर से बना दिया। पुराने नियम की अन्तिम तीन पुस्‍तकें हाग्गै, जकर्याह और मलाकी उन्हीं दिनों में लिखी गई थी। तब चार सौ वर्ष का एक लम्बा काल रहा, जिसमें यहूदियों को यहोवा परमेश्वर से कोई सीधा सन्देश नहीं मिला। आमोस भविष्यद्वाक्ता ने इस समय की भविष्यद्वाणी की थी।

*‘परमेश्वर यहोवा की यह वाणी है, “देखो, ऐसे दिन आते हैं, जब मैं इस देश में महँगी करूँगा; उस में न तो अन्न की भूख और न पानी की प्यास होगी, परन्तु यहोवा के वचनों के सुनने ही की भूख प्यास होगी।”’* (आमोस 8:11)

यह चार सौ वर्षों का काल पुराने नियम की अन्तिम पुस्तक और नया नियम की पहली पुस्तक के बीच में आता है। तो इसमें कोई आश्चर्य नही कि जब यूहन्ना बपतिस्मा देने वाला आया, तो उस समय लोगों के बीच बहुत हलचल थी। सैकडों वर्षो की खामोशी के बाद परमेश्वर यहोवा ने फिर से अपने लोगों से बात की।

**सबसे महान्‍ यहूदी**

The greatest Jew

परन्तु यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले को परमेश्वर यहोवा द्वारा किसी ऐसे के लिए मार्ग तैयार करने के लिए भेजा गया था, जो यूहन्ना से भी महान था। परमेश्वर अपने ही पुत्र को हम लोगो को बचाने के लिए भेजने वाला था। इसलिए इस्राएल देश में लगभग दो हजार वर्ष पूर्व प्रभु यीशु मसीह का जन्म हुआ। कभी कभी हम भूल जाते है कि प्रभु यीशु मसीह एक यहूदी थे।

आप जानते हैं कि उनके साथ क्या घटना घटी। उनके वचनों को सुनने और उसके अद्भुत (आश्चर्य) कर्मो को, जो उसने किए, देखने के बाद भी यहूदियों ने उसे ग्रहण नहीं किया। उन्होंने उसे क्रूस पर चढाने के लिए पिलातुस को उकसाया। जब पिलातुस ने कहा *‘मैं उस धर्मी के लहू से निर्दोष हूँ,’* यहूदियों ने उत्तर दिया कि,

*‘इसका लहू हम पर और हमारी सन्तान पर हो!’* (मत्ती 26:24-25)

वे इससे बड़ा और कोई दूसरा पाप नहीं कर सकते थे। उन्‍होंने परमेश्‍वर के पुत्र का निर्दोष लहू बहाया। इस सब के बावजूद भी प्रेरितों के सामर्थी प्रचार के द्वारा परमेश्वर ने उन्हें फिर एक मौका दिया। उनमें से अधिकांश ने परमेश्वर के दया के इस दान को अस्वीकार कर दिया और इसलिए उनको दंड दिया जाना था। यह एक भयानक दण्‍ड था।

**अनेक लोग बिना घर के**

A people without a home

चालीस वर्ष बाद रोमियों की सेना आयी और उन लोगों के साथ और उनके बच्‍चों के युद्ध किया। (आपको याद है कि उन्‍होंने कहा था कि," इसका लहू हम पर और हमारी सन्‍तान पर हो" यह यहूदियों के लिए भयानक दुख का समय था। इस युद्ध का डर इतिहास के सबसे डरावने युद्धों में से एक है। रोमियों ने नगर (यरूशलेम) पर कब्जा कर लिया और जो यहूदी बचे रहे वे पृथ्वी के सब देशों में यहाँ वहाँ तितर बितर हो गए।

ईश्‍वर ने यहूदियों को बहुत पहले से ही चेतावनी दी थी कि यदि उन्‍होंने उसके मार्गो को छोड़ तो ऐसा उनके साथ होगा।

व्यवस्थाविवरण के अध्याय 28 और उसके 64 पद में हम पढ़ते है कि,

*‘यहोवा तुझ को पृथ्वी के इस छोर से लेकर उस छोर तक के सब देशों के लोगों में तितर बितर करेगा।’* (व्यवस्थाविवरण 28:64)

और इसलिए दो हजार वर्षो तक यहूदियों का अपना खुद का देश नहीं था। इस से भी बद्तर यह कि वे कई विकट पीडाओं और भयंकर क्‍लेशों से ग्रसित रहे और व्यवस्थाविवरण में बताए हुए भयंकर श्राप उन पर लाए गये। इनमें से कुछ भयंकर यातनाओं की घटनायें तो आज भी लोगों को याद है। हममें से बहुतो का हिटलर द्वारा यहूदियों को दी गयी यातनाओं की घटना याद हो सकती है जिसमें 60 लाख से भी अधिक यहूदि बेरहमी से मार डाले गये और इस घटना ने दुनिया को हिला दिया। फिर से हम व्यवस्थाविवरण 28 और उसके 34 से 67 पदों को पढ़े और आपको आश्‍चर्य होगा कि ये शब्द जो मूसा द्वारा तीन हज़ार वर्ष पूर्व लिखे गए, इनमें लिखी बामें हमारे समय में पूरी हुयी।

यह एक दुःखद सत्य कथा है और इसका अभी तक अन्त नहीं हुआ है। हम अवश्य ही प्रसन्न होते हैं जब परमेश्वर के वचन से पढ़ते हैं कि अन्त सुखी तथा आनन्दमय होगा।

**अन्‍त में अपने देश को वापिसी**

Back to their own land at last

यिर्मयाह के अध्याय 30 और पद 11 में यहूदियों के लिए परमेश्वर के वचनों को पढ़िए

*‘इसलिये मैं उन सब जातियों का अन्त कर डालूँगा, जिनमें मैं ने उन्हें तितर-बितर किया है, परन्तु तुम्हारा अन्त न करूँगा। तुम्हारी ताड़ना मैं विचार करके करूँगा, और तुम्हें किसी प्रकार से निर्दोष न ठहराऊँगा।’* (यिर्मयाह 30:11)

फिर से यिर्मयाह के अध्याय 31 और उसके 10 से 11 पद में हम पढ़ते हैं,

*‘जिसने इस्राएलियों को तितर-बितर किया था, वही उन्हें इकट्ठे भी करेगा, और उनकी ऐसी रक्षा करेगा जैसी चरवाहा अपने झुण्ड की करता है। क्योंकि यहोवा ने याकूब को छुड़ा लिया, और उस शत्रु के पंजे से जो उस से अधिक बलवन्त है, उसे छुटकारा दिया है।’* (यिर्मयाह 31:10-11)

और अब लगभग दो हजार वर्ष पश्चात्‍, परमेश्वर (यहोवा) इस्राएल को इकट्ठा कर रहा है। 1917 में बेलफोर घोषणा पत्र पर हस्ताक्षर किया गया। यह प्रतिज्ञा पत्र था कि ब्रिटिश, पलिस्‍तीन ( जो अब इस्राएल कहलाता है) को यहूदियों का राष्‍ट्र बनायेंगे।

और उस समय के बाद यहूदी लगातार बड़ी संख्‍या में इस्राएल में जा रहे है हालांकि ब्रिटेन अपने वायदें के अनुसार हमेशा उनकी सहायता नही की।

1948 में इस ओर एक और कदम बढा जब इस्राएल राष्‍ट्र का गठन किया गया।

**यरूशलेम - भविष्य में संसार की राजधानी**

Jerusalem – the future capital of the world

आज मध्य पूर्व देशों में आज अशान्ति है। एक छोटे से यहूदी राष्‍ट्र को अपने अस्तित्‍व के लिये बड़े विरोधियों से लडाईयाँ लडनी हैं। आज भी शक्तिशाली और सशस्त्र शत्रुओ से घिरे होने कारण उसका भविष्य अधंकारमय प्रतीत होता है। परन्तु यिर्मयाह के अध्याय 30 और उसके सातवे पद में हम पढ़ते है कि,

*‘... वह याकूब के संकट का समय होगा; परन्तु वह उस से भी छुड़ाया जाएगा।’* (यिर्मयाह 30:7)

आज हम अखबार पढ़ते है तो देखते है कि वो दिन बहुत दूर नहीं कि जब इस युद्ध का सबसे बड़ा अन्तिम दिन आयेगा और इस्राएल में यहूदी एक निराशाजनक स्थिति में होंगे।

और उस समय प्रभु यीशु मसीह पुन: वापिस आयेंगे और वे इस्राएल देश को बचायेंगे और अन्‍त में यहूदी उसको पहचानेगें और उसको स्‍वीकार करेंगे।

भविष्यद्वक्ता जकर्याह हमें बताता है कि,

*‘... तब वे मुझे ताकेंगे अर्थात्‍ जिसे उन्होंने बेधा है, और उसके लिये ऐसे रोएँगे जैसे एकलौते पुत्र के लिए रोते-पीटते हैं’* (जकर्याह 12:10)

राजा प्रभु यीशु मसीह की अधीनता में यहूदी राज्य संसार में सबसे ऊँचा किया गया राज्य होगा। और जकर्याह की भविष्यवाणी पूरी होगी जो वह जकर्याह 8:22-23 में बताता है कि,

*‘बहुत से देशों के वरन्‍ सामर्थी जातियों के लोग यरूशलेम में सेनाओं के यहोवा को ढूँढ़ने और यहोवा से विनती करने के लिये आएँगे। सेनाओं का यहोवा यों कहता है उस दिनों में भाँति भाँति की भाषा बोलनेवाली सब जातियों में से दस मनुष्य, एक यहूदी पुरूष के वस्त्र की छोर को यह कहकर पकड़ लेंगे, “हम तुम्हारे संग चलेंगे, क्योंकि हम ने सुना है कि परमेश्वर तुम्हारे साथ है।”’* (जकर्याह 8:22-23)

**सहायता के लिए एक छोटी सूची**

This little table may help you

1. 3500 वर्ष पूर्व परमेश्वर (यहोवा) यहूदियों को मिस्र से बाहर लाया। उसने उन्हें रहने के लिए इस्राएल देश दिया और उन्हें अपने मार्गों (विधियों) को सिखाया।
2. यहूदियों ने परमेश्वर (यहोवा) के बताए मार्गों को छोड़ दिया। यहूदियों ने अपने पडोसी राष्‍ट्रो को अपने ईश्‍वर के द्वारा बताये गये जीवन के आचरण को ना दिखाकर उन चरित्रहीन लोगों का अनुसरण करने लगे।
3. अन्‍त में 2500 वर्ष पूर्व परमेश्वर (यहोवा) ने उन्हें बन्धुवाई में भेजकर दण्‍ड दिया। 70 वर्षो के बाद यहुदा का दक्षिणी राज्य इस्राएल देश को वापिस लाया गया परन्तु वे तब भी यहोवा परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लघन करते रहे।
4. 2000 वर्ष पूर्व यीशु के क्रूस पर चढ़ाए जाने के बाद, यहूदी देश से बाहर निकाल दिए गए। लगभग 2000 वर्ष तक वे बिना घर के थे, और उन पर सताव, अत्याचार किया गया।
5. आज, परमेश्वर यहोवा फिर से उन्हें इस्राएल देश वापिस ला रहा है और शीघ्र ही उन्‍हें सब राष्‍ट्रों की *‘पूँछ नहीं, किन्तु सिर ही ठहराएगा।’* (व्यवस्थाविवरण 28:13)

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम नंबर 8*

# 8. एक व्‍यवस्‍था जो जीवन नहीं दे सकती थी

8. A law that could not bring life

साप्ताहिक पाठ – उत्पत्ति, अध्याय 27-29; 1 तीमुथियुस, अध्याय 1-3

प्रश्‍नोत्‍तरी के लिए पाठ – इब्रानियों, अध्याय 9-10

**व्‍यवस्‍था का होना अनिवार्य**

We must have laws

आप जरा सोचिए कि अगर हमारे समाज में यदि कोई व्‍यक्ति किसी अन्‍य व्‍यक्ति का कोई कार्य पसन्‍द नही करता है या किसी व्‍यक्ति के किसी कार्य से किसी को कुछ हानि हो जाये और हानि पाने वाला व्‍यक्ति अपनी मर्जी से जैसी उसकी इच्‍छा हो वैसी सजा उसकी हानि करने वाले व्‍यक्ति को दें तो हमारे समाज में क्‍या दशा होगी। इस स्थिति में सब लोग हिंसक होकर एक दूसरे को मार देंगे।

तो इसलिए जहां कहीं भी, गांव में या शहरों में मनुष्य एक साथ रहते हैं वहां एक व्‍यवस्‍था का होना आवश्यक है। यह व्‍यवस्‍था अच्‍छी होनी चाहिए, और कोई ऐसा होना चाहिए जो इस व्‍यवस्‍था का पालन किए जाने पर निगरानी रखें।

**मूसा की व्यवस्था**

The law of Moses

हम बाईबल में पढ़ते है कि किस तरह से परमेश्वर यहूदियों को मिस्र की बन्‍धुआई से बाहर लाया; और किस प्रकार उसने रहने के लिये उन्‍हें इस्राएल देश दिया। छठवे पाठ से आप को याद होगा कि किस तरह ईश्‍वर उनका राजा बना और किस तरह से उसने उन्हें एक व्‍यवस्‍था दी।

हम इस व्‍यवस्‍था को मूसा की व्यवस्था कहते हैं क्योंकि परमेश्वर ने यह व्‍यवस्‍था पहले मूसा को दी और मूसा ने फिर यह लोगों को दी। मूसा की व्‍यवस्‍था का एक बहुत ही महत्‍वपूर्ण भाग है जो "दस आज्ञाऐं" है और सभी बाईबल पढ़ने वाले लोग बाईबल के भाग से अच्‍छी तरह से परिचित होते है क्‍योंकि ये ईश्‍वर की वे दस आज्ञाऐं है जो उसने इस्रालियों को मूसा के द्वारा दी।

इनमें 'विश्राम दिन' की व्‍य्‍वस्‍था भी थी।

**परमेश्वर द्वारा दी गई एक व्‍यवस्‍था**

A law given by God

क्योंकि मूसा की व्यवस्था परमेश्वर द्वारा दी गई थी इसलिए यह मनुष्‍यों की बनायी गयी व्‍यवस्‍था से बिल्‍कुल अलग थी। हम इन भिन्न आज्ञाओं को दो भागो में बाटँ सकते हैं।

पहला, दैनिक जीवन के लिये नियम थे, लोगों का क्या खाना चाहिये, किस प्रकार के वस्त्र पहिनना चाहिये और किस प्रकार से उन्हें एक दूसरे के प्रति व्यवहार करना चाहिये इस सम्‍बन्‍ध में नियम थे। वास्तव में ये नियम उनके दैनिक जीवन के हर एक क्षेत्र के लिए मार्ग दर्शक थे।

परन्तु इनके अतिरिक्त दूसरे और नियम भी थे। बहुत से नियम थे जो लोगों को बताते थे कि परमेश्वर के प्रति उनका कैसा व्यवहार होना चाहिए और किस तरह उन्हें उसकी उपासना करनी चाहिए।

जब लोग परमेश्वर से अपने पापों की क्षमा मांगने आते थे या उसकी प्रसन्‍नसा और धन्यवाद की भेंट चढाने आते थे तो उन्हें एक पशु, सामान्‍यत: मेमना या मेमने का बच्‍चा, लाना होता था और उसे बलि करना होता था।

पशु का यह बलिदान यहूदियों को इस बात का स्मरण कराने के लिये था कि वे पापी है और मृत्यु के योग्य है। यह उन्हें यह भी स्मरण दिलाने के लिये भी था कि वे परमेश्वर की उपासना अपनी विधि से नही बल्कि परमेश्‍वर के द्वारा बतायी गयी विधि के अनुसार करें।

**व्यवस्था का पालन करना कठिन था**

The law was hard to keep

मूसा की व्यवस्था जो यहोवा द्वारा दी गई वह बहुत अच्छी व्यवस्था थी। रोमियों के सातवें अध्याय और उसके बारवें पद में पौलुस कहता है कि,

*‘व्यवस्था पवित्र है, और आज्ञा भी ठीक और अच्छी है।’* (रोमियों 7:12)

परन्तु स्वभाव से मनुष्य अच्छे नहीं हैं। बहुत से यहूदियों ने व्यवस्था पालन का प्रयास तक भी नहीं किया और जिन्होने प्रयास भी किया वे असफल रहे। जितना अधिक व्यवस्था पालन का उन्होंने प्रयत्‍न किया उतना ही अधिक वे जान गये कि वे पापी थे।

हमने देखा कि ऱाज्‍य पर शासन करने के लिए मूसा की व्यवस्था आवश्यक थी। परन्तु केवल इतना ही नही था। लोगों ने जाना कि वे पापी है और ईश्‍वर की व्‍यवस्‍था का पालन करने में अयोग्‍य है।और क्योंकि वे पापी थे इसलिए वे मृत्यु के योग्य थे।

रोमियों के तीसरे अध्याय और उसके उन्नीसवें पद में पौलुस कहता है,

*‘हम जानते हैं कि व्यवस्था जो कुछ कहती है उन्हीं से कहती है, जो व्यवस्था के अधीन है; इसलिये कि हर एक मुँह बन्द किया जाए और सारा संसार परमेश्वर के दण्ड के योग्य ठहरे।’* (रोमियों 3:19)

**एक बहुत अच्‍छा मार्ग**

A better way

व्यवस्था ने मनुष्यों को बता दिया कि वे पापी थे और मृत्यु के योग्य थे। उन्हें किसी ऐसे की आवश्यकता थी जो उन्हें उनके पापों से बचा सके।

व्यवस्था उन्हें बचा नहीं सकती थी, व्‍यवस्‍था केवल उन्हें यह दिखा सकती थी कि वे पापी है। इसलिये परमेश्वर ने अपने प्रेम में कुछ बहुत ही अच्‍छा प्रबन्‍ध किया। परमेश्वर ने अपने पुत्र यीशु मसीह को पाप के लिए बलिदान होने के लिए दे दिया। हम भजन संहिता के 40 अध्याय और उसके 6 से 8 पद में पढ़ते है कि,

*‘मेलबलि और अन्नबलि से तू प्रसन्न नहीं होता तू ने मेरे कान खोदकर खोले हैं। होमबलि और पापबलि तू ने नहीं चाहा। तब मैं ने कहा, “देख, मैं आया हूँ; क्योंकि पुस्तक में मेरे विषय ऐसा ही लिखा हुआ है। हे मेरे परमेश्वर, मैं तेरी इच्छा पूरी करने से प्रसन्न हूँ; और तेरी व्यवस्था मेरे अन्‍तकरण में बसी है।"* (भजन संहिता 40:6-8)

यीशु ने हमेशा वही किया जिससे परमेश्वर प्रसन्न होता था। वह एक सिद्ध बलिदान था जिसने अपने आप को हमारे लिए पापों के लिए बलि किया।

इसलिए अब जब हम परमेश्‍वर की उपासना के लिए आते है तो हमें बलिदान के लिए कोई पशु लाने की आवश्‍यकता नही है।

बल्कि हमें प्रभु यीशु मसीह के नाम से परमेश्‍वर के पास आना है। प्रभु यीशु ने कहा कि,

*‘मार्ग और सत्य और जीवन मैं ही हूँ; बिना मेरे द्वारा कोई पिता के पास नहीं पहुँच सकता।’* (यूहन्ना 14:6)

**व्यवस्था से हमारे लिये शिक्षाऐं**

Lessons for us from the law

व्यवस्था ने यहूदियों की मसीह के पास आने में सहायक की क्योंकि व्‍यवस्‍था ने उनको दिखाया की अपने आप वे कितने आशाही और असहाय थे। मनुष्‍यों के लिए यह सीखना बहुत ही मुश्किल है लेकिन तो भी हमें भी परमेश्‍वर के पास आने से पहले और उससे सहायता मांगने से पहले यह पाठ सीखना है।

मूसा की व्यवस्था इसमें हमारी सहायता कर सकती है। हम यहूदियों से अधिक अच्छे नहीं हैं उन्‍ही के समान हम भी असफल होते है। व्यवस्था हमें एक बड़ी शिक्षा दे सकती है: कि परमेश्वर पवित्र है और हम पापी है, और जो तरीका उसने चुना है उसी के द्वारा हम उसके पास तक पहुंच सकते है और वह मार्ग है प्रभु यीशु।

परमेश्वर हम से यह नही चाहता कि हम मूसा की व्यवस्था का सम्‍पूर्ण रूप से पालन करें। लेकिन उसने मूसा की व्यवस्था को बाइबिल में हमारे लिये लिख दिया है, ताकि हम उसे पढ़कर और उस पर विचार करके परमेश्‍वर के मार्गो के विषय में और अधिक सीखें।

**सारांश**

Summary

1. मूसा को व्यवस्था परमेश्वर द्वारा यहूदियों को दी गई थी।
2. (अ) इसमें उनके दैनिक जीवन के लिये नियम थे।

(ब) यह उन्हें यह भी सिखाती थी कि किस तरह परमेश्वर की उपासना करना चाहिये।

1. व्यवस्था अच्छी थी, परन्तु मनुष्य बुरा होने के कारण उसका पालन नहीं कर सका।
2. परमेश्वर नें मसीह में एक नई योजना का प्रबन्ध किया।
3. मूसा की व्यवस्था निर्गमन, लैव्यव्यवस्था, गिनती और व्यवस्थाविवरण नामक बाईबल की पुस्तकों में है। हम आज भी मूसा की व्यवस्था से बहुत सी बातें सीख सकते है।

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम नंबर 9*

# 9. परमेश्‍वर द्वारा अब्राहम से की गयी प्रतिज्ञायें

9. God’s promises to Abraham

साप्ताहिक पाठ – उत्पत्ति, अध्याय 30-32; 1 तीमुथियुस, अध्याय 4-6

प्रश्‍नोत्‍तर के लिए पाठ – उत्पत्ति, अध्याय 13; गलातियों 3

यीशु के जन्म से लगभग दो हजार वर्ष पूर्व एक व्‍यक्ति हुआ जिसका नाम अब्राहम था और जिसको बाइबिल में परमेश्वर का मित्र कहा गया है (यशायाह अध्याय 41 और उसका 8 पद)। वह ऊर नगर में रहता था जो उस देश में था जिसे हम आज ईराक कहते हैं जो इस्राएल देश से करीब 800 मील पूर्व में था।

ऊर में रहने वाले लोग सच्चे परमेश्वर (यहोवा) के विषय में कुछ नही जानते थे। वे कई झूठे देवताओं के उपासना करते थे जिनमें मुख्य चन्द्रदेव था। चन्द्र देव के लिये बनाए गए, एक मन्दिर के खण्‍डर वहां पाए गए हैं।

**परमेश्वर की ओर से एक संदेश**

A message from God

एक दिन अब्राहम को परमेश्वर की ओर से एक संदेश मिला। हम इस संदेश को उत्पत्ति के बारहवें अध्याय और उसके पहले पद में पढ़ सकते हैं।

*‘यहोवा ने अब्राम से कहा, “अपने देश, और अपने कुटुम्बियों, और अपने पिता के घर को छोड़कर उस देश में चला जा जो मैं तुझे दिखाऊँगा।’* (उत्पत्ति 12:1)

उसे अपने देश को और अपने लोगों को छोड़ने और, एक ऐसे देश को जो परमेश्‍वर उसे दिखाएगा जाने के लिये कहा गया। मैं सोचता हूं कि यदि हमें ऐसा संदेश मिलता तो हम क्या करते? (और उन दिनों में तो सफर भी बहुत ही कठिन और खतरनाक था।)

जब परमेश्वर ने अब्राहम को ऐसा करने को कहा, तो साथ ही परमेश्वर ने उससे यह भी कहा,

*‘और मैं तुझ से एक बड़ी जाति बनाऊँगा, और तुझे आशीष दूँगा, और तेरा नाम महान्‍ करूँगा, और तू आशीष का मूल होगा। जो तुझे आशीर्वाद दें, उन्हें मैं आशीष दूँगा; और जो तुझे कोसे, उसे मैं शाप दूँगा; और भूमण्डल के सारे कुल तेरे द्वारा आशीष पाएँगे।’* (उत्पत्ति 12:2-3)

अब्राहम ने परमेश्‍वर द्वारा की गयी इन प्रतिज्ञाओं पर विश्वास किया, और परमेश्वर की आज्ञा का पालन भी किया। इब्रानियों की पत्री में लेखक बताता है कि अब्राहम,

*‘यह न जानता था कि मैं किधर जाता हूं, तौभी निकल गया।’* (इब्रानियों 11:8)

अन्त में वह अपनी पत्नी सारा और अपने भतीजे लूत के साथ इस्राएल देश को पहुँच गया। उत्पत्ति के तेरवें अध्याय को फिर से पढ़िये। आप देखेंगे कि कैसे लूत ने सबसे अच्छी भूमी (यरदन की सारी तराई) को चुन लिया और अब्राहम अपनी भेड बकरियो और गाय बैलो के लिये इस्राएल की बंजर भूमि में चारा ढ़ूंढता रह गया। परन्तु परमेश्वर अब्राहम के साथ था और उसनें जो प्रतिज्ञाएं अब्राहम से ऊर में की थी उनको और भी बढ़ा दिया।

*‘जितनी भूमि तुझे दिखाई देती है, उस सब को मैं तुझे और तेरे वंश को युग युग के लिये दूँगा। और मैं तेरे वंश को पृथ्वी की धूल के किनकों की समान बहुत करुँगा।’* (उत्पत्ति 13:15-16)

**एक अद्भुत प्रतिज्ञा**

A wonderful promise

क्या आपने ध्यान दिया कि इस समय परमेश्वर ने अब्राहम को सदा सर्वदा के लिए भूमि देने की प्रतिज्ञा की? सर्वदा के लिये भूमि प्राप्त करने और उस पर अधिकार रखने का अर्थ है कि अब्राहम को सर्वदा के लिये जीवित रहना होगा, इसलिए वास्‍तव में परमेश्वर अब्राहम से अनन्त जीवन देने की प्रतिज्ञा कर रहा था।

इसके अतिरिक्त परमेश्वर ने यह प्रतिज्ञा अब्राहम के सन्तान अर्थात पुत्र से भी की। उस समय अब्राहम और सारा को कोई सन्तान न थी। परमेश्वर ने उससे एक सन्तान अर्थात पुत्र की प्रतिज्ञा की जो उसके साथ भूमि का भागी होगा। उसने यह भी प्रतिज्ञा की कि अब्राहम का वंश एक महान राज्‍य हो जाएगा।

**परमेश्वर ने अब्राहम से एक वाचा बांधी**

God makes a covenant with Abraham

पन्द्रहवें अध्याय को पढ़िये और आप को मालूम होगा कि परमेश्वर ने अब्राहम से की गयी अपनी प्रतिज्ञाओं को पुनः दुहराया और उनमें वृद्धि की।

बहुत समय बीत गया था और अब्राहम वृद्ध हो रहा था। प्रतिज्ञा किया हुआ पुत्र अभी तक नही दिया गया था। परन्तु परमेश्वर ने उसे एक बार फिर आश्वासन दिया कि उसे एक पुत्र होगा और यह कि उसका वंश गिनती में आकाश के तारों के समान होगा।

6 वें पद में हम पढ़ते है कि,

*‘अब्राहम ने यहोवा पर विश्वास किया; और यहोवा ने इस बात को उसके लेखे में धर्म गिना।’* (उत्पत्ति 15:6)

अब्राहम भी हमारे समान पाप से मुक्त नहीं था परन्तु उसने परमेश्वर पर विश्वास किया और इस कारण यहोवा परमेश्वर उससे प्रसन्न था। इस समय हमें बताया जाता है कि यहोवा ने अब्राहम के साथ एक वाचा बान्धी वह एक बहुत गम्भीर प्रतिज्ञा है जो कभी भी बदली नही जा सकती है। उत्‍पत्ति के अध्याय 15 और उसके 8 से 18 तक पदों में आप पढ़ेंगे किस तरह यह वाचा बान्धी गई। अब्राहम के समय में एक पशु का वध करने के द्वारा वाचा बान्धी जाती थी। तब व़ध किये गये पशु का भाग लिया जाता था और जिन दो व्यक्तियों के बीच वाचा बान्धी जाती थी उन्हें मांस के टुकडों के बीच चलना पडता था। परन्तु अब्राहम के साथ की गयी वाचा के समय यहोवा परमेश्वर स्वंय टुकडों के बीच नहीं चला। अब्राहम ने एक जलता हुआ दीपक उनके (यहोवा और अपने) बीच जाते हुए देखा।

यह वाचा की दृढ़ थी।

**प्रतिज्ञा किया गया बालक**

The promised child

अब्राहम की आयु सौ वर्ष की थी और उसकी पत्नी 90 वर्ष की और तब अन्त में परमेश्वर ने अपनी प्रतिज्ञा को पूरा किया और उन्हें एक पुत्र दिया जिसका नाम इसहाक था। उत्पत्ति के अध्याय 22 में आप अब्राहम का परमेश्वर पर विश्वास का एक अद्भुत उदाहरण पायेंगे। पहले चौदह पदों को पढ़िये। परमेश्वर ने अब्राहम से अपने एकलौते पुत्र इसहाक को बलिदान करने को कहा। तो भी परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि इसहाक के द्वारा अब्राहम का वंश एक बड़ा राज्य बनेगा।

अब्राहम ने क्या किया? वह जानता था कि परमेश्वर अपनी प्रतिज्ञाओं को पूरा करेगा और इसलिए इब्राबियों के अध्याय 11 और उसके 17 से 19 पद हमें बताते है कि,

*‘विश्वास ही से अब्राहम ने, परखे जाने के समय में, इसहाक को बलिदान चढ़ाया; और जिसने प्रतिज्ञाओं को सच माना था। और जिससे यह कहा गया था, “इसहाक से तेरा वंश कहलाएगा;” वही अपने एकलौते को चढ़ाने लगा। क्‍योंकि उसने मान लिया, कि परमेश्वर सामर्थी है कि उसे मरे हुओं में से जिलाएगा, अतः उन्‍हीं में से दृष्टान्‍त की रीति पर वह उसे फिर मिला।’* (इब्रानियों 11:17-19)

अब्राहम अपने प्रिय पुत्र को भी बलिदान करने के लिये तैयार था क्‍योंकि वह जानता था कि ईश्‍वर उसे फिर से जीवित कर देगा। इसमें कोई आश्चर्य नहीं कि परमेश्वर अब्राहम के विश्वास और आज्ञापालन से प्रसन्न था। उत्पत्ति के अध्याय 22 और उसके 15-18 पदों में वे प्रतिज्ञाऐं है जो परमेश्‍वर ने फिर से अब्राहम से की।

**इसहाक से बड़ा एक वंश**

A greater seed than Isaac

ये घटनाए लगभग चार हजार वर्ष पूर्व हुई और ऐसा लगता है कि वे हमारे लिये कोई महत्व नहीं रखती हैं।

परन्तु अब्राहम का एक पुत्र था जो इसहाक से भी महान था। नए नियम का पहला पद बताता है

*‘अब्राहम की सन्तान, दाऊद की सन्तान, यीशु मसीह।’* (मत्ती 1:1)

यीशु भी अब्राहम का प्रतिज्ञा किया हुआ पुत्र था। पौलुस हमें यह गलातियों के तीसरे अध्याय और उसके सोलवें पद में बताता है।

*‘अतः प्रतिज्ञाएँ अब्राहम को और उसके वंश को दी गईं। वह यह नहीं कहता, “वशों को;” जैसे बहुतों के विषय में कहा; पर जैसे एक के विषय में कि “तेरे वंश को” और वह मसीह है।’* (गलातियों 3:16)

इसलिये जो प्रतिज्ञाएँ अब्राहम से की गई कि वह हमेशा के लिये इस्राएल की भूमि में रहेगा और पृथ्वी की सारी जातियों के लिये आशीष का कारण होगा और वही प्रतिज्ञाएं प्रभु यीशु मसीह से भी की गई।

जब वह यरूशलेम में फिर से राज्य करने आयेगा तो हम इन प्रतिज्ञाओं को पूरा होते देखेंगे।

**हम भी इन प्रतिज्ञाओं के भागी हो सकते है**

We too may share the promises

यदि हम यीशु पर विश्वास रखें और जैसा वह हमसे कहता है वैसा ही करें तो हम भी इन प्रतिज्ञाओं में भागी हो सकते हैं। क्योंकि यदि हम मसीह यीशु के हैं तो हम भी अब्राहम की सन्तान हैं। गलातियों के तीसरे अध्याय और उसके अन्तिम पद में हम पढ़ते हैं,

*‘और यदि तुम मसीह के हो तो अब्राहम के वंश और प्रतिज्ञा के अनुसार वारीस भी हो।’* (गलातियों 3:29)

तो इसलिए हम भी प्रतिज्ञाओं के भागी हो सकते है। हम भी अनन्त जीवन प्राप्त कर सकते है और पृथ्वी पर सुख और आनन्द लाने के महान कार्य में मसीह की सहायता कर सकते है।

क्‍योंकि आपको याद होगा कि प्रतिज्ञाओं में से एक प्रतिज्ञा यह भी थी कि,

*‘और पृथ्वी की सारी जातियाँ अपने को तेरे वंश के कारण धन्य मानेंगी’* (उत्पत्ति 22:18)।

यह प्रतिज्ञा तब पूरी होगी जब यीशु परमेश्वर का राज्य स्थापित करने के लिये पुन: इस पृ‍थ्‍वी पर आयेंगे।

**अब्राहम का क्या होगा?**

What about Abraham?

आप सोचते होंगे कि “अब्राहम का क्या होगा? क्‍योंकि उसको प्रतिज्ञाऐं की हुयी वस्‍तुऐं नही मिली और वह मर गया।”

यह सच है। परन्तु परमेश्वर की प्रतिज्ञाऐं व्यर्थ नही ठहर सकती हैं। जब यीशु फिर से आयेगा तो वह अब्राहम और इसहाक को मृतकों में से जी उठाऐंगे और इन दोनों के अतिरिक्त और बहुत दूसरों को भी – वे सब इस पृथ्वी पर सदा सर्वदा के लिए जीवित रहेंगे और उन आशीषों का आनन्‍द लेगें जो परमेश्‍वर ने उनसे लम्‍बे समय पहले की थी।

**सारांश**

Summary

1. परमेश्वर ने अब्राहम को ऊर देश छोड़कर एक अनजाने देश को जाने की आज्ञा दी।
2. यह देश इस्राएल देश था और परमेश्वर ने प्रतिज्ञा की थी कि अब्राहम इस देश को हमेशा के लिए प्राप्त करेगा।
3. उसने यह भी प्रतिज्ञा की कि अब्राहम को एक पुत्र होगा; और अब्राहम का वंश एक महान राज्य होगा और यह कि उसका पुत्र पृथ्वी की सब जातियों के लिए आशीष का कारण ठहरेगा।
4. अब्राहम और उसकी पत्‍नी बहुत बूढ़े थे और तब उनको चमत्‍कारिक रीति से एक पुत्र इसहाक हुआ। यीशु मसीह भी अब्राहम का पुत्र या वंश है (उसका जन्म भी चमत्‍कारिक रीति से एक कुँवारी से हुआ)।
5. यदि हम मसीह यीशु के हैं, तो हमारी गिनती भी अब्राहम की सन्तानों में है और हम भी अब्राहम से की गई प्रतिज्ञाओं के भागी हो सकते हैं।
6. ये प्रतिज्ञाऐं तब पूरी होगी जब यीशु पुन: इस पृथ्‍वी पर लौटेगें और परमेश्वर के राज्य को स्थापित करेगें।

**एक सलाह**

A suggestion

अब्राहम के वंश के विषय में बतायी गयी ये सब बातें पहली बार पढ़ने से समझ्‍ने में कुछ कठिनाई होती है। लेकिन यह विषय बहुत ही महत्वपूर्ण है। अच्‍छा होगा यदि आप इस पाठ को पुनः एक बार पढें।

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम*

### प्रश्नपत्र नं. 3 - पाठ 7 से 9

Long format questions – Lessons 7-9

**सातवें पाठ पर प्रश्न**

1. यूहन्ना बपतिस्मा देने व़ाले का क्या कार्य था?
2. यहूदियों का क्या हुआ क्योंकि उन्हों ने यीशु को ग्रहण नहीं किया?
3. क्या आप बाईबल से एक पद लिख सकते हैं जो यह बताता है कि यरूशलेम संसार की भविष्य की राजधानी है।

**आठवें पाठ पर प्रश्न**

1. मूसा की व्यवस्था में कुछ नियम यहूदियों के उनके दैनिक जीवन के लिए मार्गदर्शक थे। दूसरे अन्‍य नियम उन्हें क्या सिखाने के लिये थे?
2. क्यों व्यवस्था मनुष्यों को बचा नहीं सकती थी?
3. उद्धार के लिए परमेश्वर ने और कौन सा अच्छा प्रबन्ध किया?

**नवें पाठ पर प्रश्न**

1. उन तीन बातों को लिखिए जिनकी प्रतिज्ञा परमेश्वर ने अब्राहम से की थी।
2. परमेश्वर अब्राहम से क्यों प्रसन्न था?
3. किस तरह हम उन प्रतिज्ञाओं के भागी हो सकते हैं जो अब्राहम से की गई थी?

धन्यवाद - हमारा पता:

क्रिस्टडेलफियनस, पी. ओ. बॉक्स 50, गाजियाबाद - 201001, उत्तर प्रदेश

The Christadelphians, P.O. Box 50, Ghaziabad, 201001, U.P.

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम नंबर 10*

# 10. परमेश्‍वर द्वारा दाऊद से की गयी प्रतिज्ञायें

10. God’s promises to David

साप्ताहिक पाठ – उत्पत्ति, अध्याय 33-35; याकूब, अध्याय 1-3

प्रश्‍नोत्‍तर के लिए पाठ – 2 शमुएल, अध्याय 7

दाऊद दूसरा राजा था जिसने यहूदियों पर राज्य किया। कई परीक्षाओं और साहसिक कार्यों के बाद दाऊद ने यरूशलेम में एक राजभवन बनाया और उस राजभवन में रहकर उसने राज्य किया।

जब दाऊद ने सोचा कि किस रीति से परमेश्वर ने उसे आशीषित किया है तब उसने यहोवा परमेश्वर के वाचा के सन्दूक के बारे में सोचा जो एक तम्बू में रखा था, उसने यरूशलेम में एक भव्य मन्दिर बनाना चाहा जिसमें परमेश्वर का वाचा का सन्दूक रखा जा सके। (यह सन्‍दूक एक विशेष तिजोरी थी जिसमें दस आज्ञाऐं रखी गयी थी और इसका एक ढकना था जिसे प्रायश्चित्‍त का ढकना कहते थेऔर इसके ऊपर परमेश्वर का तेज चमकता था।)

दाऊद ने परमेश्वर के भविष्यद्वक्ता नातान से मन्दिर बनवाने की अपनी इच्छा प्रगट की। नातान ने दाऊद से कहा जो कुछ तेरे मन में हो उसे कर। परन्तु उसी दिन रात को यहोवा ने नातान को दाऊद के लिये एक विशेष सन्देश दिया।

**दाऊद को यहोवा का सन्देश**

God’s message to David

2 शमूएल के अध्याय 7 में और उसके 12-16 पदों में वह महत्व पूर्ण भाग है जिसमें दाऊद को दिये गये यहोवा के सन्देश का उल्लेख है।

परमेश्वर दाऊद को एक पुत्र देने की प्रतिज्ञा करता है।

वह इस प्रतिज्ञा के पुत्र के बारे में कहता है, *‘मेरे नाम का घर वही बनवाएगा, और मैं उसकी राजगद्दी को सदैव स्थिर रखूँगा।’* (2 शमूएल 7:13)

यह दाऊद की मृत्यु के बाद होना था जैसा कि बारहवें पद में लिखा है

*‘जब तेरी आयु पूरी हो जाएगी, और तू अपने पुरखाओं के संग सो जाएगा।’* (2 शमूएल 7:12)

**दाऊद के पुत्र के विषय में अधिक जानकारी**

More about the son of David

दाऊद का एक पुत्र था जिसका नाम सुलैमान था। उसने दाऊद के बाद यरूशलेम में राज्य किया। परन्तु जब दाऊद जीवित था उसी समय सुलैमान को राजा बना दिया गया था। लेकिन हम बाईबल में पढ़ते है कि उसका राज्‍य सदा सर्वदा के लिए नही था।

प्रतिज्ञा किया गये इस पुत्र को वास्‍तव में बहुत ही विशेष होना था, क्‍योंकि परमेश्‍वर ने उसके विषय में ऐसा कहा कि,*‘मैं उसका पिता ठहरूँगा, और वह मेरा पुत्र ठहरेगा।’* (2 शमूएल 7:14)

लूका के पहले अध्याय को पढ़िये। यहां हम पढ़ते हैं कि एक स्वर्गदूत एक युवती के पास आता है- यह युवती दाऊद के वंश की थी -और स्‍वर्गदूत उससे कहता है कि उसको एक पुत्र उत्‍पन्‍न होगा।

इस बालक का जन्म एक संसारिक पिता से नहीं होना था जैसा कि सब बच्चों का होता है परन्तु उसका जन्म परमेश्वर की सामर्थ्‍य के द्वारा होना था क्योंकि मरियम नामक उस युवती से स्वर्गदूत ने कहा,

*‘पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी इसलिये वह पवित्र जो उत्‍पन्न होने वाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।’* (लूका 1:35)

स्वर्गदूत ने मरियम से यह भी कहा,

*‘वह महान होगा और परमप्रधान का पुत्र कहलाएगा; और प्रभु परमेश्वर उसके पिता दाऊद का सिंहासन उसको देगा, और वह याकूब के घराने पर सदा राज्य करेगा; और उसके राज्य का अन्‍त न होगा।’* (लूका 1:32-33)

अब हम देख सकते है कि किस तरह वह प्रतिज्ञा जो यहोवा परमेश्वर ने दाऊद से की उस समय पूरी हुई जब यीशु मसीह का जन्म हुआ।

1. यहोवा परमेश्वर उसका पिता था।
2. उसे सदा सर्वदा के लिए राज्य करना था।

**यहूदियों का राजा**

The king of the Jews

यीशु का जन्म एक राजा बनने के लिये हुआ। जब ज्‍योतिष उसकी उपासना करने और उसे प्रणाम करने यरूशलेम आए, उन्होंने पूछा *‘यहूदियों का राजा जिसका जन्म हुआ है, कहाँ है?’* (मत्ती 2:2)

जब यीशु पकड़वा गया और पिलातुस के सामने न्‍याय के लिए उसका मुकदमा चल रहा था तो पिलातुस ने उससे कहा *‘क्या तू यहूदियों का राजा है?’*

यीशु ने उत्तर दिया, *‘तू आप ही कह रहा है।’ (मरकुस 15:2)* यहूदी कहने के अनुसार इसका मतलब है “हां, मैं अवश्य हूँ।” (मत्ती 27:11)

जैसा कि हम देख चुके हैं, कि यीशु यहुदियों का राजा होने और दाऊद के सिंहासन पर बैठकर राज्य करने के लिए पृथ्वी पर वापस आयेंगे।

**सम्‍पूर्ण विश्‍व में एक राज्य**

A world-wide kingdom

जब यीशु पुन: इस पृथ्‍वी पर आयेंगे तो वे केवल यहूदियों के ही राजा नही होगें बल्कि समस्‍त पृथ्वी पर राज्य करेंगे। परमेश्वर उनके विषय में कहता है,

*‘यह तो हल्‍की सी बात है कि तू याकूब के गोत्रों का उद्धार करने और इस्राएल के रक्षित लोगों को लौटा ले आने के लिये मेरा सेवक ठहरे; मैं तुझे जाति-जाति के लिये ज्योति ठहराऊँगा कि मेरा उद्धार पृथ्वी की एक ओर से दूसरी ओर तक फैल जाए।’* (याशायाह 49:6)

**दाऊद के विषय में क्या?**

What about David?

यद्यपि दाऊद जानता था कि यह प्रतिज्ञा बहुत लन्बे समय तक पूरी नही होनी थी, तो भी उसका हृदय परमेश्वर के प्रति धन्यवाद से भरा था। हम उसकी धन्यवादी प्रार्थना को 2 शमूएल 7:18-29 में पढ़ सकते हैं। परमेश्वर ने कहा था,

*‘तेरा घारना और तेरा राज्य मेरे सामने सदा अटल बना रहेगा।’* (2 शमूएल 7:16)

इसलिये दाऊद जानता था कि जब उसका महान पुत्र (प्रभु यीशु) यरूशलेम में राज्य करेगा, तो वह (दाऊद) भी मृतकों में से जिलाया जायेगा ताकि वह भी उसके राज्य के आनन्दों का सहभागी हो सके।

दाऊद प्राय: इस गम्भीर प्रतिज्ञा के विषय में सोचता था जो परमेश्वर ने उससे बांधी थी। और वह इसके विषय में भजन संहिता (उदाहरण के लिये भजन संहिता 89:2-4) में हम पढ़ते है,

*‘क्योंकि मैंने कहा है, “तेरी करूणा सदा बनी रहेगी, तू स्वर्ग में अपनी सच्चाई को स्थिर रखेगा।” मैं ने कहा, “मैंने अपने चुने हुए से वाचा बाँधी है, मैंने अपने दास दाऊद से शपथ खाई है, ‘मैं तेरे वंश को सदा स्थिर रखूँगा; और तेरी राजगद्दी को पीढ़ी से पीढ़ी तक बनाए रखूँगा’।”’* (भजन संहिता 89:2-4)

दाऊद इन्हीं बातों के बारे में भजन संहिता 16 में भी कहता है।

*‘तू मेरे प्राण को अधोलोक* (कब्र) *में न छोड़ेगा, न अपने पवित्र भक्त को सड़ने देगा।’* (भजन संहिता 16:10)

यीशु परमेश्वर का पवित्र जन था और उसने पाप नही किया। उसकी देह सड़ने नही पायी क्योंकि परमेश्वर ने उसे तीन दिन बाद मृतकों में से जी उठाया।

**किसी बात की प्रति‍क्षा**

Something to look forward to

इब्रानियों का लेखक कहता है,

*‘विश्वास ही के द्वारा इन सब के विषय में अच्‍छी गवाही दी गई, तौभी उन्‍हें प्रतिज्ञा की हुई वस्‍तु न मिली। क्‍योंकि परमेश्वर ने हमारे लिये पहले से एक उत्तम बात ठहराई, कि वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुँचे।’* (इब्रानियों 11:39-40)

अब्राहम और दाऊद और बहुत से विश्वासी यह जानते हुए मर गए कि यीशु मसीह के पुनः आगमन पर वे, उन लोगों के साथ जो यीशु मसीह पर विश्‍वास करते है, अनन्‍त जीवन पाने के लिए फिर जी उठा दिये जाऐंगे।

**एक पद जो कुंजी है**

A key verse

हमने देखा कि यीशु मसीह अब्राहम और दाऊद दोनों की सन्तान है।

नये नियम का सबसे पहला पद इस तरह आरम्भ होता है, *‘अब्राहम की सन्तान, दाऊद की सन्तान, यीशु मसीह की वंशावली’* (मत्ती 1:1)।

इसलिए हम नए नियम को केवल तभी समझ सकते हैं यदि हमने पुराने नियम को पढ़ और समझ लिया है।

**सारांश**

Summary

1. यहोवा परमेश्वर ने दाऊद से एक पुत्र की प्रतिज्ञा की।
2. इस पुत्र को परमेश्वर का पुत्र होना था।
3. इस पुत्र को दाऊद के सिंहासन पर सदा सर्वदा के लिए राज्‍य करना था।
4. यह पुत्र यीशु था।
5. जब वह राज्य करने को आएगा, तो परमेश्वर के सब विश्वासी सेवकों को अनन्त जीवन दिया जायेगा और वे पृथ्वी पर उसके राज्य की प्रभुता करने में सहभागी होंगे।

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम नंबर 11*

# 11. जीवन और मृत्यु के विषय में बाइबिल की शिक्षा - 1

11. Bible teaching about life and death – Part 1

साप्ताहिक पाठ – उत्पत्ति, अध्याय 36-38; याकूब, अध्याय 4-5

प्रश्‍नोत्‍तरी के लिये पाठ – भजन संहिता 49; उत्पत्ति, अध्याय 2

“अपनी जवानी में मैं जो कर सकता था वह सब मैं आज नही कर सकता हूं" कितनी बार हम इन शब्दों को सुनते हैं! वे कितने सच हैं! यह जानने के लिये हमें 70 साल की आयु तक पहुंचने का इन्‍तजार करने की जरूरत नही है जब हम शक्ति विहिन हो जायेंगे बल्कि यह हम अपनी मध्‍य अवस्‍था में ही देख सकते है कि हम उतना तेज नही चल सकते या उतना तेज नही सोच सकते है जितना हम जवानी में करते थे।

जीवन व्यतीत करते हम वृद्ध होते जाते हैं और इस पर सोचने से हम निश्चयता से जानते हैं कि एक दिन हम सबको मरना है। भजनकार के ये शब्‍द बिल्‍कुल सच है जब वह कहता है कि,

*‘हमारी आयु के वर्ष सत्तर तो होते हैं, और चाहे बल के कारण अस्सी वर्ष के भी हो जाएँ, तौभी उनका घमण्ड केवल कष्ट और शोक ही शोक है; वह जल्दी कट जाती है, और हम जाते रहते हैं।’* (भजन संहिता 90:10)

सब मनुष्‍य मरते हैं। यह सच ही कहा गया है कि जीवित रहने के विषय में एक ही बात निश्चित है कि एक दिन हम सबको मरना है।

**पृथ्वी पर पहला आदमी**

The first man on earth

हम सब क्यों बूढें होते है और मर जाते हैं? इसके उत्तर के लिये हमें बाइबिल की पहली पुस्तक में सबसे पहले आदमी और स्त्री के विषय में पढ़ना चाहिए।

परमेश्वर ने आदमियों और स्त्रीयों के रहने के लिये पृथ्वी को बहुत ही सुन्दर बनाया। उसने पौधों पशुओं को पहले बनाया और जब सब तैयार हो गया, उसने एक आदमी को बनाया।

उत्पत्ति 2 अध्‍याय और 7 पद हमें बताता है कि,

*‘यहोवा परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से रचा।’* (उत्पत्ति 2:7)

अद्भुत प्रवीणता से एक मानव का शरीर बनाया गया। हम भूमि पर पड़े उस निर्जीव शरीर की कल्‍पना कर सकते है। फिर आगे क्या हुआ? परमेश्‍वर ने:

*‘उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया; और आदम जीवित प्राणी बन गया।’* (उत्पत्ति 2:7)

आदमी सांस लेने लगा। वह जीवित था! वह देख सकता, सुन सकता, सोच सकता और महसूस कर सकता था। निसन्देह वह परमेश्वर के द्वारा बनायी गयी सभी चीजों में सबसे अधिक अदभुत था।

**आदम अकेला है**

Adam is lonely

*‘यहोवा परमेश्वर ने पूर्व की ओर अदन देश में एक वाटिका लगाई, और वहाँ आदम को जिसे उसने रचा था, रख दिया।’* (उत्पत्ति 2:8)

आदम (यही नाम परमेश्वर ने इस आदमी को दिया) वाटिका की देख भाल करता था। परमेश्वर ने आदम को यह आज्ञा दी, *‘तू वाटिका से सब वृक्षों का फल बिना खटके खा सकता है; पर भले या बुरे के ज्ञान का जो वृक्ष है, उसका फल तू कभी न खाना’* (उत्पत्ति 2:16-17)। यहोवा परमेश्वर ने उसे पहले से जता दिया

*‘जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।’* (उत्पत्ति 2:17)

आदम के साथ रहने वाले केवल जानवर ही थेऔर वे उसके समान नही सोच सकते थे। आदम अकेला हो गया और परमेश्वर ने कहा,

*‘आदम का अकेला रहना अच्छा नहीं; मैं उसके लिये एक ऐसा सहायक बनाऊँगा जो उस से मेल खाए।’* (उत्पत्ति 2:18)

उत्पत्ति 2:21-23 में आप पढ़ेंगे कि परमेश्वर ने आदम को भारी नींद में डाल दिया, तब उसने उसकी एक पसली निकालकर स्त्री को बनाया, जो आदम के साथ रहे और उसके जीवन में सहभागी हो।

**आदम औद हव्वा परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन करते हैं**

Adam and Eve break God’s law

उत्पत्ति 3:1-13 पढ़िये और आप देखेंगे कि किस प्रकार पहली स्त्री हव्वा ने सर्प की बात सुनकर परमेश्वर की आज्ञा का उल्लंघन किया और किस तरह आदम ने भी परमेश्‍वर की आज्ञा का उल्‍लंघन किया।

परमेश्वर की आज्ञा का उल्‍लंघन कर उन्होंने पाप किया और हम पहले देख चुके है कि पाप की मजदूरी मृत्‍यु है। आदम और हव्वा भी इस बात को जानते थे क्योंकि परमेश्वर ने उनसे कह दिया था कि,

*‘जिस दिन तू उसका फल खाएगा उसी दिन अवश्य मर जाएगा।’* (उत्पत्ति 2:17)

**दण्ड**

Punishment

यह विपत्ति लाने पर सर्प को उसका हिस्‍से की सजा मिली।आदम और हव्वा को मृत्यु की सजा मिली और उन्हें वाटिका से बाहर निकाल दिया गया। यघपि इस घटना के बाद आदम और हव्‍वा लम्‍बे समय तक जीवित रहे, लेकिन वे मरने वाले प्राणी हो गए। और ठीक हमारे समान ही वे थकते थे और बीमार होते थे और अन्त में बूढ़े हुए और मर गये। इस प्रकार परमेश्वर का वचन सत्‍य ठहरा कि,

*‘तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा।’* (उत्पत्ति 3:19)

आपको याद होगा किस जब परमेश्वर ने आदम को रचा तो उसने, *‘उसके नथनों में जीवन का श्वास फूँक दिया; और आदम जीवित प्राणी बन गया।’* (उत्पत्ति 2:7)

सब मनुष्य ‘जीवित प्राणी’ हैं, परन्तु जब उनकी सांस रुक जाती है तो वे मर जाते है।

जैसा कि सभोपदेशक का लेखक कहता है:

*‘क्योंकि जीवते तो इतना जानते हैं कि वे मरेंगे, परन्तु मरे हुए कुछ भी नहीं जानते, और न उनको कुछ और बदला मिल सकता है, क्योंकि उनका स्मरण मिट गया है। उनका प्रेम और उनका बैर और उनकी डाह नष्ट हो चुकी, और अब जो कुछ सूर्य के नीचे किया जाता है उसमें सदा के लिये उनका और कोई भाग न होगा।’* (सभोपदेशक 9:5-6)

या जैसे हम भजन संहिता 146 :3-4 में पढ़ते हैं,

*‘तुम प्रधानों पर भरोसा न रखना, न किसी आदमी पर, क्योंकि उस में उद्धार करने की भी शक्ति नहीं। उसका भी प्राण निकलेगा, वह भी मिट्टी में मिल जाएगा; उसी दिन उसकी सब कल्पनाएँ नष्ट हो जाएँगी।’* (भजन संहिता 146:3-4)

**संसार में पाप और मृत्यु**

Sin and death in the world

पाप और मृत्‍यु हमें किस प्रकार प्रभावित करती है यह समझने में पौलुस हमारी सहायता करता है। रोमियों 5 अध्‍याय और 12 पद में वह कहता है कि,

*‘एक मनुष्य के द्वारा पाप जगत में आया; और पाप के द्वारा मृत्यु आई, और इस रीति से मृत्यु सब मनुष्यों में फैल गई, क्योंकि सब ने पाप किया।’* (रोमियों 5:12)

आदम और हव्वा पापी बन गए। हम उनकी सन्तान हैं और इसलिये हम भी पापी हैं।

हमारी प्रकृति पापमय है;या जैसे पौलुस कहता है कि प्रकृति से हम 'पाप की सन्‍तान' है अपने पिता आदम के समान हमने पाप किया, और उसी के समान हम मरते है।

इसमें हमारा दोष नहीं कि हमारी प्रकृति पापमय है। और इसमें निश्‍चय ही परमेश्वर का भी कोई दोष नही है। इसमें आदम का दोष था और यह हमारा दुर्भाग्य है। यदि हम इस बात के लिए परमेश्‍वर पर दोष लगाते है तो यह हमारी बहुत ही बड़ी मूर्खता है। बल्कि हमें तो परमेश्‍वर का धन्‍यवाद देना चाहिए। हमें उसका धन्‍यवाद देना चाहिए कि यह सब होने के बाद भी उसने हम सब को जीवित रहने का अवसर दिया, वास्‍तव में जिसके हम अधिकारी नही है, और विशेष रूप से हमें उसका धन्यवाद देना चाहिये कि उसने हमें हमारी निराशाहीन दयनीय दशा से छुटकारे (मुक्त होने) के लिये एक मार्ग, एक साधन दिया। जन्म से ही पापी प्रकृति का होने के लिये हम दोषी नहीं हैं परन्तु हम बड़े दोषी हो जाते हैं यदि हम परमेश्वर के दिये हुए बचाव (मुक्ति) के मार्ग की उपेक्षा करते हैं।

**सारांश**

Summary

1. परमेश्वर ने आदम को भूमि की मिट्टी से बनाया।
2. उसने उसे जीने के लिये उसके नथनों में जीवन का श्वास फूंक दिया।
3. परमेश्वर ने आदम को एक आज्ञा दी। उसने उससे कहा कि यदि वह उसकी आज्ञा को भंग करेगा, तो उसकी सजा मौत होगी।
4. आदम और हव्वा ने परमेश्वर की आज्ञा को भंग किया। वे मरने वाले प्राणी बन गए।
5. सब मनुष्य आदम की सन्तान हैं; सब पापी हैं और सभी को मरना है।
6. जैसा हम आगे के तीन अध्‍यायों में देखेंगे कि मसीह मनुष्‍यों के जीवन में जीने की एक आशा लाया।

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम नंबर 12*

# 12. जीवन और मृत्यु के विषय में बाइबिल की शिक्षा - 2

12. Bible teaching about life and death – Part 2

साप्ताहिक पाठ – उत्पत्ति, अध्याय 39-41; योना, अध्याय 1-4

प्रश्‍नोत्‍तर के लिए पाठ – सभोपदेशक, अध्याय 3

**स्वयं से प्रेम**

Loving ourselves

जो गहरा प्रेम योनातन अपने मित्र दाऊद से करता था, उसके विषय में बाइबिल कहती है कि, *‘योनातन का मन दाऊद पर ऐसा लगा गया, कि योनातन उसे अपने प्राण के समान प्यार करने लगा।’* (1 शमूएल 18:1)

हम सब अपने प्राण को अर्थात स्वंय को प्यार करते है। इफिसियों के 5 अध्‍याय में पौलुस कहता है कि,

*‘किसी ने कभी अपने शरीर से बैर नहीं रखा वरन्‍ उसका पालन-पोषण करता है, जैसा मसीह भी कलीसिया के साथ करता है।’* (इफिसियों 5:29)

यदि हम अपनी देख भाल न करें, भोजन और जल द्वारा अपने शरीर का पालन पोषण न करें, हमारी शीघ्र मृत्यु हो जाएगी।

**सर्प का झूठ**

The serpent’s lie

हममें से अधिकारंश अपने आपको बहुत ज्यादा प्यार करते हैं, अपने बारे में बहुत सोचते हैं। शायद इसलिए मनुष्य को यह विश्वास करने में हमेशा कठिनाई हुई की पशुओं के समान उन्हें भी मरना है और उसकी देह को सड़ना है। इसलिए वे इस विचार को प्राथमिकता देते है कि वे मृत्‍यु के बाद भी कही पर जीवित रहेंगे।

सर्प ने आदम और हव्वा से कहा, *‘तुम निश्चय न मरोगे!’* (उत्पत्ति 3:4) यह झूठ था तो भी हव्‍वा ने इस बात पर विश्‍वास किया न कि परमेश्‍वर की बात पर विश्‍वास किया।

मनुष्यों ने हमेशा सांप के झूठ पर विश्वास करना चाहा है। परमेश्वर के वचनो पर विश्वास करने के अलावा वे नाना प्रकार की कहानियाँ बनाते हैं कि मृत्यु के बाद क्या होता है। जबकि परमेश्‍वर ने कह कि,

*‘तू मिट्टी तो है और मिट्टी ही में फिर मिल जाएगा।’* (उत्पत्ति 3:19)

**वे पशुओं के समान हैं, जो मर मिटते हैं**

Like the beasts that perish

इस विषय में बाइबिल की शिक्षा स्पष्ट हैं। सभोपदेशक 3:19 को पढ़िए:

*‘क्योंकि जैसी मनुष्यों की वैसी ही पशुओं की भी दशा होती है; दोनों की वही दशा होती है, जैसे एक मरता वैसे ही दूसरा भी मरता है। सभों की स्वांस एक सी है, और मनुष्य पशु से कुछ बढ़कर नहीं।’* (सभोपदेशक 3:19)

जब आप एक मरे हुए जानवर के शरीर को देखते हैं, आप यह नहीं सोचते हैं कि उस जानवर का कोई महत्‍वपूर्ण भाग स्वर्ग में रहने चला गया है। आप यह जानते हैं कि वह जीव जो जीवित था, सांस लेता था और घूमता फिरता था – जो कितना ही सुन्दर न रहा हो – उस जीव का बस एक मृतक शरीर रह गया है।

मनुष्यों का भी ठीक यही हाल होता है। जब वे मरते हैं बस एक निर्जीव शरीर रह जाता है। क्या आपने भजन संहिता 49 के 12 वें पद पर ध्यान दिया? जहाँ लिखा है,

*‘मनुष्य प्रतिष्‍ठा पाकर भी स्थिर नहीं रहता, वह पशुओं के समान होता है, जो मर मिटते हैं।’* (भजन संहिता 49:12)

पशुओं के समान? हां, लेखक हमें इस विषय में किसी शक में नहीं रख छोड़ता है। 14 पद में वह कहता है *‘वे अधोलोक की मानो भेड़-बकरियाँ ठहराए गए हैं।’* (भजन संहिता 49:14)

**एक गलत विचार**

A wrong idea

कई लोगों का विश्वास है कि मरने पर हमारे जीवन का कोई हिस्‍सा जीवित रहता है। वे मानते है कि मनुष्‍य की आत्‍मा अमर है जो सदैव के लिए स्वर्ग में जीवित रहेगी। परन्तु आत्‍मा अमर नहीं है। यहेजकेल भविष्यद्वक्ता के द्वारा परमेश्वर कहता है,

*‘देखो, सभों के प्राण तो मेरे हैं; जैसा पिता का प्राण, वैसा ही पुत्र का भी प्राण है; दोनों मेरे ही हैं। इसलिये जो प्राणी पाप करे वही मर जाएगा।’* (यहेजकेल 18:4)

हमने देखा कि बाइबिल में मृत्यु का क्या अर्थ है। मृत्‍यु का अर्थ है जीवन का पूर्ण अन्त है, इसलिए शरीर और मस्तिष्क दोनो नाश हो जाते हैं – सड़ जाते है और मिट्टी में मिल जाते है।

**नरक या अधोलोक– यह कहाँ है?**

Hell – where is it?

बाईबल हमें बताती है कि,

*‘स्वर्ग तो यहोवा का है, परन्तु पृथ्वी उसने मनुष्यों को दी है।’* (भजन संहिता 115:16)

हम जानते हैं कि स्वर्ग परमेश्वर का निवास स्थान है। और हम जानते हैं कि यहोवा परमेश्वर ने पृथ्वी को मनुष्यों के रहने के लिये बनाया। परन्तु नरक क्या है? यह कहाँ है और वहाँ कौन रहता है?

हमने देखा कि जब मनुष्य मर जाता है तो वह वापस मिट्टी में मिल जाता है। वह फिर न कुछ सोच सकता है और ना ही कुछ महसूस कर सकता है। वह उस कीड़े से कुछ अधिक नही रहता जिसे आप अपनी ऊगंलीयों के बीच मसल देते है।

कुछ लोगों का मानना है कि जब दृष्ट अर्थात पापी लोग मरते हैं तो उनको दण्ड के लिये एक स्थान पर भेज दिया जाता है जिसे नरक कहते है।लेकिन आईये हम देखें कि बाईबल इसके विषय में क्‍या कहती है।

**पुराने नियम में अधोलोक या नरक**

Hell in the Old Testament

बाईबल का पुराना नियम सबसे पहले इब्रानी भाषा में लिखा गया, और उसके बाद हिन्‍दी या अन्‍य दूसरी भाषाओं में उसका अनुवाद किया गया। इब्रानी भाषा के शब्‍द "शियोल" (Sheol) का अर्थ है "एक ढका हुआ स्‍थान" (A Covered Place) और यह वही शब्‍द है जिसका अनुवाद बाईबल में 59 बार "अधोलोक" किया गया है। ढका हुआ स्‍थान कब्र के लिए प्रयोग किया गया हैं, और विशेष ध्‍यान देने योग्‍य बात यह है कि अनुवादकों ने बाईबल में 3 बार ही " शियोल" शब्‍द का अनुवाद "पाताल" भी किया है। पाला और अधोलोक एक ही स्‍थान है।

**नये नियम में अधोलोक या नरक**

Hell in the New Testament

जैसे पुराना नियम सबसे पहले इब्रानी भाषा में लिखा गया था उसी तरह नया नियम सबसे पहले यूनानी भाषा में लिखा गया था। नरक या अधोलोक के लिए यूनानी भाषा का एक शब्‍द “हैदेस” (Hades) है इसका अर्थ ठीक वही है जो इब्रानी भाषा के शब्‍द "शियोल" का है। हम यीशु के बारे में पढ़ते हैं कि *‘तू मेरे प्राणों को अधोलोक में न छोड़ेगा’* (प्रेरितों के काम 2:27)।

यदि हम देखें तो यीशु अधोलोक (नरक) को गया और दूसरे शब्दों में यदि हम कहे तो वह कब्र में गया परन्तु वह वहां छोड नहीं दिया गया और उसको मृतकों में से जिला लिया गया।

**नरक की आग क्या है?**

But what about hell-fire?

मरकुस में हम पढ़ते है,

*‘यदि तेरा हाथ तुझे ठोकर खिलाए तो उसे काट डाल। टुण्‍डा होकर जीवन में प्रवेश करना तेरे लिये इससे भला है कि दो हाथ रहते हुए नरक की आग में डाला जाए जो कभी बुझने की नहीं।’* (मरकुस 9:43)

बाईबल के नए नियम में नरक या अधोलोक के लिए एक और नये यूनानी शब्द को हम पढ़ते है जो इस पद में भी प्रयोग हुआ है और वह शब्‍द है “गेहेन्ना”

गेहेन्ना यरूशलेम के बाहर एक घाटी का नाम है – हिन्नोम की तराई। इस घाटी को यहूदी लोग जो यीशु को सुनते थे अच्छी तरह जानते थे। यह वह स्‍थान था जहाँ शहर का कूड़ा कचरा जलाया जाता था।घेरेबन्‍दी या युद्ध के समय में यहाँ लाशों को जलने के लिए गेहेन्‍ना में फेंक दिया जाता था। यह विनाश की एक जगह थी, और इसलिये गेहेन्‍ना में फेकें जाने का अर्थ पूर्ण रुप से नाश करना था। यीशु लोगों को अपने जीवनों से उन बातों को छोड़ने की चेतावनी दे रहे थे, जो उन्हें परमेश्वर से अलग कर सकती थी ताकि वे अन्नतकाल की मृत्यु अर्थात पूर्ण विनाश से बच सकें।

**आशा की एक किरण (झलक)**

A gleam of hope

शायद आपको बाइबिल को बन्द करने और इस लेख पत्र को फेंक देने की भावना होती हो। परन्तु जरा ठहरिये। बाइबिल परमेश्वर का वचन है, और जो वह कहती है सच है। हम बहुत ही मूर्ख होंगे यदि हम सत्य में विश्वास करना अस्वीकार करें और वो भी केवल इसलिए कि वह हमें बहुत प्रिय नहीं लगता है।

वही बाईबिल जो बताती है कि मृत्यु वास्तविक है वही हमें यह भी बताती है कि अधोलोक से परे एक आशा है – पुर्नरुत्थान की आशा। प्रभु यीशु मसीह शारीरिक पुर्नरुत्थान के द्वारा पुनः जीवित कर दिये गये और वह दिन आएगा जब वे जो प्रभु यीशु में विश्‍वास करते है और उनके पद चिन्‍हों पर चलते है वे भी कब्र से निकाले जायेंगे ठीक वैसे ही जैसे यीशु मसीह को निकाला गया।

परन्तु यह एक दूसरे पाठ का विषय हैं!

**सारांश**

Summary

1. बाइबिल बताती है कि मनुष्य मरने पर नाश हो जाते है अर्थात शरीर नाशमान है। और उनकी देह भी पशुओं के समान सड़ जाती हैं।
2. बाइबिल हमें स्वर्ग में जानें की कोई आशा नही देती है।
3. जब यीशु इस पृथ्वी पर वापस लौटेंगे, तो जो उस पर विश्वास रखते हैं उन्हें वह जी उठायेंगे।

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम*

### प्रश्नपत्र नं. 4 - पाठ 10 से 12

Long format questions – Lessons 10-12

**दसवें पाठ पर प्रश्न**

1. दाऊद यहोवा परमेश्वर के लिए क्या करना चाहता था?
2. जिस पुत्र की प्रतिज्ञा परमेश्‍वर ने दाऊद से की थी उस पुत्र को किस तरह से दूसरे व्‍यक्तियों से भिन्न होना था?
3. उस एक पद को लिखिए जो यह बताता है कि दाऊद का यह पुत्र हमेशा के लिए राज्य करेगा।

**ग्यारवें पाठ पर प्रश्न**

1. पहला आदमी किस तरह से रचा गया?
2. जब आदम और हव्‍वा ने ईश्वर की आज्ञा को भंग किया तो किस तरह वे दण्डित किए गए?
3. आदम और हव्‍वा को मिले दण्‍ड का क्‍या प्रभाव है?

**बारवें पाठ पर प्रश्न**

1. बाइबिल से उस एक पद को लिखिए जो बताता है कि मरने के बाद मनुष्य का क्या होता है।
2. उस मनुष्य की क्या आशा है जो यीशु मसीह में विश्वास करता है?
3. जब बाइबिल नरक के विषय में कहती है तो बाइबिल में उसका क्‍या अर्थ है।

धन्यवाद - हमारा पता:

क्रिस्टडेलफियनस, पी. ओ. बॉक्स 50, गाजियाबाद - 201001, उत्तर प्रदेश

The Christadelphians, P.O. Box 50, Ghaziabad, 201001, U.P.

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम नंबर 13*

# 13. पुर्नरुत्थान

13. Resurrection

साप्ताहिक पाठ – उत्पत्ति, अध्याय 42-44; फिलिप्पियों, अध्याय 1-2

प्रश्‍नोत्‍तर के लिये पाठ – 1 कुरिन्थियों, अध्याय 15

पुर्नरुत्थान शब्द का अर्थ है फिर से जी उठना। संसार के इतिहास में वह सबसे अद्भुत घटना हुई जब यीशु मसीह तीन दिनों तक मृतक रहने के बाद कब्र से बाहर निकल आये।

जब उसके शिष्यों ने उसे देखा तो उन्हें अपनी आखों पर विश्वास नहीं हुआ। उन्होंने सोचा कि वह एक आत्मा है परन्तु यीशु ने उनसे कहा,

*‘“मेरे हाथ और मेरे पाँव को देखो कि मैं वही हूँ। मुझे छूकर देखो, क्‍योंकि आत्मा के हड्डी माँस नहीं होता जैसा मुझ में देखते हो।” यह कहकर उसने उन्‍हें अपने हाथ पाँव दिखाए। जब आनन्‍द के मारे उनको प्रतीति न हुई, और वे आश्‍चर्य करते थे, तो उसने उनसे पूछा, “क्‍या यहाँ तुम्हारे पास कुछ भोजन है?” उन्‍होंने उसे भूनी हुई मछली का टुकड़ा दिया। उसने लेकर उनके सामने खाया।’* (लूका 24:39-43)

अन्त में उन्हें विश्‍वास हो गया कि वह सचमुच में फिर से जीवित हो गया था। परमेश्वर ने उन्‍हें अनन्‍त जीवन दे दिया। प्रकाशितवाक्य में यीशु कहते है कि *‘देख, मैं युगानुयुग जीवता हूँ।’* (प्रकाशितवाक्य 1:18)

**यीशु उसके पीछे चलनेवालों को जी उठाएगा**

Jesus will raise his disciples

यीशु ने अपने शिष्‍यों को सिखाया कि वे भी मृतकों में से जी उठा दिये जायेंगे। फिर से ऊपर बताए पद को पूरा पढ़िये।यीशु ने कहा,

*‘मैं मर गया था, और अब देख मैं युगानुयुग जीवता हूँ; और मृत्यु और अधोलोक की कुंजियाँ मेरे ही पास हैं।’* (प्रकाशित्वाक्य 1:18)

अत: यदि आपके पास किसी दरवाजे की कुंजी (चाबी) है तो इसका मतलब है कि आप उस दरवाजे को खोल सकते है। यीशु के पास अधोलोक की कुंजियाँ है। दूसरे शब्दों में इसका मतलब है कि यीशु के पास वह सामर्थ है कि वे कब्रों को खोलकर जो उसमें गड़े (सोए) हैं उन्हें स्वतत्र कर सकते है।

यह सामर्थ उसे परमेश्वर द्वारा दी गई है। यूहन्ना रचित सुसमाचार 5:20-29 पदों को पढ़िये। विशेष रूप से 21 पद पर ध्यान दीजिये जो कहता है कि,

*‘जैसा पिता मरे हुओं को उठाता और जिलाता है, वैसा ही पुत्र भी जिन्‍हें चाहता है उन्‍हें जिलाता है।’* (यूहन्ना 5:21)

जीवन देने के लिए परमेश्वर ने यीशु को मनुष्‍यों को फिर से जिलाने की सामर्थ दी है।

**सब विश्वासियों की एक आशा**

A hope shared by all faithful men

सब युगों में परमेश्वर के जन उस दिन की प्रतीक्षा करते हुए मर गए जब वे फिर से जिन्दा उठा लिए जायेगें। कुछ के बारे में इब्रानियों का लेखक बताता है कि,

*‘विश्वास ही की दशा में मरे; और उन्होंने प्रतिज्ञा की हुई वस्तुएँ नही पाईं, पर उन्हें दूर से देखकर आनन्दित हुए।’* (इब्रानियों 11:13)

आगे फिर वह इन लोगों के विषय में बताते है कि इन्‍हें,

*‘...प्रतिज्ञा की हुई वस्‍तु न मिली। क्‍योंकि परमेश्वर ने हमारे लिये पहले से एक उत्तम बात ठहराई, कि वे हमारे बिना सिद्धता को न पहुँचे।’* (इब्रानियों 11:39-40)

हम इस पद में देखते है कि अनन्त जीवन का दान परमेश्वर के सब सच्चे भक्तों को एक ही समय दिया जायेगा।

पहले विश्‍वासी लोग भी इस समय की प्रतीक्षा में थे। जब पहले विश्‍वासियों में से किसी की मृत्यु होती थी तो वे कहते थे कि वह सो गया है क्योंकि जिस तरह नींद के बाद मनुष्य जाग जाते हैं, उसी तरह शिष्य भी मृतकों में से जिन्दा कर दिये जायेंगे। 1 कुरिन्थियों के 15 अध्याय में, जिसे आप पढ़ चुके है; पौलुस ऐसे 500 विश्‍वासियों के विषय में बताते है जिन्होंने यीशु को उनके पुर्नरुत्थान के पश्चात देखा था उनमें से कुछ के बारे में कहते है कि, *‘कुछ सो गए’*। (1 कुरिन्थियों 15:6)

**पुर्नरुत्थान कब होगा?**

When will the resurrection take place?

इस बात को लगभग 2000 वर्ष बीत गये है जब प्रभु यीशु मसीह का पुर्नरूत्‍थान हुआ।

जो लोग विश्‍वास में मर गये है उनको यीशु कब जिलायेंगे?

प्रेरित पौलुस इस प्रश्‍न का उत्‍तर हमें देते है।1 कुरिन्थियों 15 अध्‍याय में वह कहता है कि,

*‘जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएँगे, परन्‍तु हर एक अपनी अपनी बारी से: पहला फल मसीह, फिर मसीह के आने पर उसके लोग।’* (1 कुरिन्थियों 15:22-23)

हम देख चुके हैं कि यीशु मसीह परमेश्वर का राज्य स्थापित करने और पूरी पृथ्वी पर राज्य करने के लिये वापिस आ रहे है। जब प्रभु यीशु यह राज्‍य स्‍थापित करेंगे तो वे मरे हुओं को उठायेंगे। तब वे जो विश्वासी हैं उन्हें अनन्त जीवन दिया जाएगा और यीशु के साथ पृथ्वी पर राज्य करने में सहायता करने के विशेष अधिकार का आनन्द उठाएंगे जैसे हम प्रकाशितवाक्य 5:9-10 में पढ़ते हैं। यहां हम उस दिन गाये जाने वाले एक गीत के शब्दों को पढ़ते हैं,

*‘तूने वध होकर अपने लहू से हर एक कुल और भाषा और लोग और जाति में से परमेश्वर के लिये लोगों को मोल लिया है, और उन्‍हें हमारे परमेश्वर के लिये एक राज्य और याजक बनाया; और वे पृथ्वी पर राज्य करते हैं।’* (प्रकाशितवाक्य 5:9-10)

**जब यीशु आयेंगे तो कुछ लोग जीवित रहेंगे**

Some will be alive when Jesus returns

उनका क्या होगा जो यीशु के वापिस आने के समय में जीवित होगें? यीशु ने कहा कि जब वह आता है,तो वह

*‘तुरही के बड़े शब्‍द के साथ, अपने दूतों को भेजेगा, और वे आकाश के इस छोर से उस छोर तक, चारों दिशाओं से उसके चुने हुओं को इकट्ठे करेंगे।’* (मत्ती 24:31)

1 थिस्सलुनीकियों 4 में पौलुस हमें इसके बारे में थोड़ा और बताता है। वह कहता है कि,

*‘यदि हम विश्वास करते हैं कि यीशु मरा, और जी भी उठा, तो वैसे ही परमेश्वर उन्‍हें भी जो यीशु में सो गए हैं, उसी के साथ ले आएगा। क्‍योंकि हम प्रभु के वचन के अनुसार तुम से यह कहते हैं कि हम जो जीवित हैं और प्रभु के आने तक बचे रहेंगे, सोए हुओं से कभी आगे न बढ़ेंगे। क्‍योंकि प्रभु आप ही स्‍वर्ग से उतरेगा; उस समय ललकार, और प्रधान दूत का शब्‍द सुनाई देगा, और परमेश्वर की तुरही फूँकी जाएगी, और जो मसीह में मरे हैं, वे पहले जी उठेंगे। तब हम जो जीवित और बचे रहेंगे, उनके साथ बादलों पर उठा लिया जाएँगे कि हवा में प्रभु से मिलें; और इस रीति से हम सदा प्रभु के साथ रहेंगे।’* (1 थिस्सलुनीकियों 4:14-17)

मरे हुए जी उठा लिए जाएगे और जो जीवित बचे रहेंगे वे इकट्ठे किए जाएंगे और सब प्रभु यीशु के सामने उपस्थित होंगे। इसके पहले कि वह उन्हें अनन्त जीवन दे, न्याय का होना अनिवार्य है। परन्तु इस विषय में आप आने वाले सप्ताह के पाठ में और अधिक जानेंगे।

1 कुरिन्थियों 15:51-58 पदों को फिर पढ़िये। यहां प्रेरित पौलुस उस समय के बारे में कहता है जब विश्वासी मसीहियों को अनन्त जीवन का दान दिया जाएगा!

जब हम उस समय की प्रतिक्षा में है तो पौलुस प्रेरित हम से कहता है कि*‘दृढ़ और अटल रहो, और प्रभु के काम में सर्वदा बढ़ते जाओ।’* (1 कुरिन्थियों 15:58)

**याद रखने के लिये कुछ बातें**

Some points to remember

1. परमेश्वर ने यीशु को मरे हुओं (मृतकों) को जी उठाने की सामर्थ दी है।
2. यह वे तब करेंगे जब पृथ्वी पर फिर वापिस लौटेंगे।
3. उसी समय वे उन सबको, जो मसीह में हैं और उनके आगमन पर जीवित बचे रहेंगे, इकट्ठा करेंगे।
4. उन्हें जो विश्वासी बने रहे हैं वह अनन्त जीवन देगा। वे जीवित रहेंगे और उसके साथ राज्य करेंगे।

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम नंबर 14*

# 14. न्याय का सिंहासन

14. The judgement seat

साप्‍ताहिक पाठ– उत्पत्ति, अध्याय 45-47; फिलिप्पियों, अध्याय 3-4

प्रश्‍नोत्‍तर के लिए पाठ– मत्ती, अध्याय 25

जिस रात यहुदा इस्करियोती ने धोखा देकर प्रभु यीशु को पकड़वाया, प्रभु यीशु ने उसे अन्तिम चेतावनी दी:

*‘उस मनुष्य पर हाय जिसके द्वारा मनुष्य का पुत्र पकड़वाया जाता है यदि उस मनुष्‍य का जन्‍म ही न होता, तो उसके लिये भला होता।’* (मरकुस 14:21)

अपने स्वामी के साथ विश्वासघात कर, यहूदा इस्करियोती जान बूझकर प्रभु यीशु के विरुद्ध हो गया था और उसने दुष्टता अर्थात पाप के मार्ग को चुन लिया था। हर पीढी में लोग हुए हैं जिन्होंने स्वेच्छा से प्रभु से अलग हो कर दुष्टता (पाप) के मार्ग को चुन लिया। ज्योति को न चाहकर कर वरन अन्धकार को प्यार करने की जवाब देही उनकी अपनी है। वे कडे न्याय के भागी है। इसलिए यीशु ने यहूदा इस्करियोती के लिये कहा *‘यदि उस मनुष्य का जन्म ही न होता, तो उसके लिये भला होता।’*

**न्याय का होना जरुरी है**

There must be a judgement

यदि हम इसके बारे में सोचें तो पुर्नरुत्थान के बाद न्याय की आवश्यकता को हम देखेंगे। परमेश्वर प्रेमी है परन्तु वह न्यायी और धर्मी भी है। वह उन लोगों को अनन्त जीवन नहीं दे सकता था जिन्होंने उसके प्रेम का तिरस्कार कर दिया था (उसके प्रेम को तुच्छ समझा था और ठुकरा दिया था) और यह जानते हुए भी कि यीशु उनके लिये मरा उन्होंने उसकी सेवा करने और आज्ञा मानने की कोई कोशिश नही की।

इसलिए पौलुस रोमियों में हमे बताता है

*‘हम सब के सब परमेश्वर के न्याय सिंहासन के सामने खड़े होंगे।’* (रोमियों 14:10)

फिर से 2 कुरिन्थियों में कहता है,

*‘अवश्य है कि हम सब का हाल मसीह के न्याय आसन के सामने खुल जाए, कि हर एक व्यक्ति अपने अपने भले बुरे कामों का बदला जो उसने देह के द्वारा किए हों पाए।’* (2 कुरिन्थियों 5:10)

**एक धार्मिक न्यायी**

A righteous judge

जब यीशु फिर आयेंगे तो वे मरे हुओं (मृतकों) को जी उठायेंगे और उस समय उसके वे अनुयायी जो जीवित होंगे उन्हें वह इकट्ठा करेंगे। वह न्याय का समय होगा। न्याय के बाद जो ग्रहण कर लिये जायेंगे उन्हें अनन्त जीवन दिया जाएगा और जैसा हम मत्ती 25 में पढ़ते है; यीशु उनसे कहेंगे,

*‘“हे मेरे पिता के धन्य लोगो, आओ, उस राज्य के अधिकारी हो जाओ, जो जगत के आदि से तुम्हारे लिये तैयार किया गया है।”’* (मत्ती 25:34)

यीशु स्वंय न्यायधीश होंगे। यूहन्ना रचित सुसमाचार जहाँ यीशु पुर्नरुत्थान के बारे में कह रहे है। हम पढ़ते है,

*‘वह समय आता है कि जितने कब्रों में हैं वे उसका शब्‍द सुनकर निकल आएँगे। जिन्‍होंने भलाई की है वे जीवन के पुर्नरुत्थान के लिये जी उठेंगे और जिन्‍होंने बुराई की है वे दण्ड के पुर्नरुत्थान के लिये जी उठेंगे। मैं अपने आप से कुछ नहीं कर सकता; जैसा सुनता हूँ, वैसा न्याय करता हूँ; और मेरा न्याय सच्‍चा है; क्‍योंकि मैं अपनी इच्‍छा नहीं परन्‍तु अपने भेजनेवाले की इच्‍छा चाहता हूँ।’* (यूहन्ना 5:28-30)

यीशु अपने उस ज्ञान से न्‍याय करेंगे जो परमेश्वर ने उन्‍हें दिया है। हम यशायाह 11 में पढ़ते है

*‘वह मुँह देखा न्याय न करेगा और न अपने कानों के सुनने के अनुसार निर्णय करेगा; परन्तु वह कंगालों का न्याय धर्म से, और पृथ्वी के नम्र लोगों का न्‍याय खराई से करेगा।’* (यशायाह 11:3-4)

मनुष्य केवल जो देखते है और जो सुनते हैं उसी के अनुसार ही निर्णय कर सकते है; परन्तु प्रभु यीशु सभी के हृदयों को जानेंगे और वह अपने न्‍याय में कोई गलतियां नहीं करेंगे।

**न्याय सिंहासन के सम्मुख कौन होंगे?**

Who will be at the judgement seat?

वे जिन्होंने परमेश्वर के द्वारा दिये जाने वाले जीवन की कृपा को ग्रहण कर लिया है, और प्रभु यीशु में बपतिस्मा ले लिया है; वे प्रभु यीशु के न्याय सिंहासन के सम्मुख इकठ्ठे किये जाऐंगे। परन्तु सिर्फ वे ही नही होंगे। पुराने नियम के समय के विश्वासी लोग भी वहां होंगे। और वास्‍तव में कुछ ऐसे लोग भी होंगे जो विश्वासी नहीं रहे। इब्रानियों 10 में हम पढ़ते है,

*‘क्‍योंकि सच्‍चाई की पहिचान प्राप्‍त करने के बाद यदि हम जान बूझकर पाप करते रहें, तो पापों के लिये फिर कोई बलिदान बाकी नहीं। हाँ, दण्‍ड का एक भयानक बाट जोहना और आग का ज्वलन बाकी है जो विरोधियों को भस्म कर देगा।’* (इब्रानियों 10:26-27)

वे जिन्होंने सच्चे परमेश्वर और उसके पुत्र यीशु मसीह के बारे में कभी नहीं जाना, वे न्याय के लिये नहीं बुलाए जाएगें। आपको भजन संहिता 49 के वे पद याद होंगे जो ऐसे व्यक्ति के बारे में कहते हैं

*‘वह अपने पुरखाओं के समाज में मिलाया जाएगा, जो कभी उजियाला न देखेंगे। मनुष्य चाहे प्रतिष्ठित भी हों, परन्तु यदि वे समझ नहीं रखते, तो वे पशुओं के समान हैं जो मर मिटते हैं।’* (भजन संहिता 49:19-20)

(यदि आप यशायाह 26:13-14 को पढ़े तो ये पद भी यही बात सिखाते है।)

**उनका क्या होगा जो अस्वीकार किये जायेंगे?**

What will happen to those who are rejected?

हमने देखा कि जो प्रभु यीशु के न्याय सिंहासन के सम्मुख आएगें वे दो वर्गो में बाटें जाएंगे। मसीह कुछ को ग्रहण करेंगे और कुछ दूसरों को अस्वीकार करेंगे। जिन्हें वह ग्रहण करेंगे उन्हें वे अनन्त जीवन देंगे। परन्तु उनका क्या होगा जिन्‍हें वे अस्वीकार करेंगे? उनकी सजा क्‍या होगी?

हम उनकी सजा को विस्तार पूर्वक नही जानते है। परन्तु कुछ बातों पूरी तरह से नश्चित है। पहिले उनको यह दिखाया जायेंगा कि वे कितना मूर्ख रहे और वे इस बात को जानेंगे कि उन्‍होंने क्‍या खोया; और यह जानकर उन्हें मानसिक पीड़ा होगी। यीशु ने ऐसे लोगों के लिये कहा:

*‘वहाँ रोना और दाँत पीसना होगा; जब तुम अब्राहम और इसहाक और याकूब और सब भविष्यद्वक्ताओं को परमेश्वर के राज्य में बैठे, और अपने आप को बाहर निकाले हुए देखोगे।’* (लूका 13:28)

अन्त में वे पूरी रीति से नाश कर दिये जाएगे। यीशु ने न्याय की तुलना फसल काटने के समय से की जब खलयान में अच्छे अनाज को जंगली दोनों से अलग किया जाता है। अनाज को संभाल कर रखा जाता है परन्तु जंगली दोनों को किसान जला देता है (मत्ती 13:36-43)।

यही बात पौलुस ने स्पष्ट रीति से सिखाई:

*‘प्रभु यीशु अपने सामर्थी दूतों के साथ, धधकती हुई आग में स्‍वर्ग से प्रगट होगा, और जो परमेश्वर को नहीं पहचानते और हमारे प्रभु यीशु के सुसमाचार को नहीं मानते उनसे पलटा लेगा। वे प्रभु के सामने से, और उसकी शक्ति के तेज से दूर होकर अनन्‍त विनाश का दण्‍ड पाएँगे।’* (2 थिस्सलुनीकियों 1:7-9)

**प्रेम या भय**

Love or fear

बाईबल में कुछ पद हैं जो हमें चेतावनी देते है प्रतीत होते है कि न्याय के समय हम अपने ऊपर अत्याधिक विश्वास न रखें कि हमारा सब ठीक है; और कुछ ऐसे भी पद हैं जो हमें दृढ़ विश्वास से भरे रहने के लिये उत्तेजित करते हैं। इन पदों में परस्‍पर कोई विरोध नहीं है। हमें अपने ही में कोई विश्वास नहीं होना चाहिये। हमें परमेश्वर की बचाने की सामर्थ में विश्वास होना चाहिये।

यद्यपि हो सकता है कि शुरु में हम परमेश्वर से डरते हो, लेकिन हम धीरे-धीरे उससे प्रेम करना और उस पर सम्‍पूर्ण भरोसा करना सीख लेंगे। इसलिये यूहन्ना कहता है;

*‘इसी से प्रेम हम में सिद्ध हुआ कि हमें न्याय के दिन हियाव हो; ... प्रेम में भय नहीं होता, वरन्‍ सिद्ध प्रेम भय को दूर कर देता है।’* (1 युहन्ना 4:17-18)

**सारांश**

Summary

1. एक दिन न्‍याय होगा।
2. यह पुर्नरुत्थान के बाद होगा।
3. जिन्‍होंने परमेश्वर की सच्‍चाई को जान लिया है उनका न्याय किया जाएगा।
4. जो प्रभु यीशु के न्याय सिंहासन सम्मुख स्वीकार किये जायेंगे उन्हें अनन्त जीवन दिया जायेगा।
5. जो न्याय सिंहासन के सम्मुख अस्वीकार किये जायेंगे वे मानसिक पीड़ा से ग्रसिक होंगे और फिर वे नाश कर दिये जाएंगे।

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम नंबर 15*

# 15. पिता और पुत्र

15. The Father and the Son

साप्‍ताहिक पाठ– उत्पत्ति, अध्याय 48-50; 1 पतरस, अध्याय 1-3

प्रश्‍नोत्‍तर के लिए पाठ– यशायाह, अध्याय 45

एक समय जब यीशु अपने पिता से प्रार्थना कर रहे थे तो उन्‍होंने इन शब्दों का प्रयोग किया,

*‘अनन्‍त जीवन यह है कि वे तुझ एकमात्र सच्‍चे परमेश्वर को और यीशु मसीह को, जिसे तू ने भेजा है, जानें।’* (यूहन्ना 17:3)

इसलिये हमें परमेश्वर पिता और उसके पुत्र प्रभु यीशु को अवश्य जानना चाहिये। अनन्त जीवन इसी ज्ञान पर निर्भर है।

हम बाइबिल को पढ़ने से परमेश्वर और प्रभु यीशु मसीह के विषय में सीख सकते हैं। हमारे लिये परमेश्वर के विषय में कुछ भी जानना असम्भव है जब तक कि हम स्‍वंय उसके (परमेश्‍वर) द्वारा दिये गये सन्‍देश (बाईबल) का अध्‍ययन न करें।

परमेश्वर ने खुद कहा है,

*‘मेरे विचार और तुम्हारे विचार एक समान नहीं है, न तुम्हारी गति और मेरी गति एक सी है। क्योंकि मेरी और तुम्हारी गति में और मेरे और तुम्हारे सोच विचारों में, आकाश और पृथ्वी का अन्तर है।’* (यशायाह 55:8-9)

**सब का एक ही परमेश्चर और पिता**

One God and Father of all

हम बाइबिल से परमेश्वर के बारे में क्या सीख सकते हैं? तीमुथियुस को अपनी पत्री लिखते समय पौलुस प्रेरित परमेश्वर के बारे में बताता है:

*‘जो परमधन्य और एकमात्र अधिपति और राजाओं का राजा और प्रभुओं का प्रभु है, और अमरता केवल उसी की है, और वह अगम्य ज्योति में रहता है, और न उसे किसी मनुष्य ने देखा और न कभी देख सकता है।’* (1 तीमुथियुस 6:15-16)

यदि बाइबिल हमें केवल यहोवा परमेश्वर की सामर्थ और पवित्रता के बारे में ही बताती तो हम निश्चय उसका भय मानते परन्तु उससे प्रेम करने में हमें कठिनाई होती। परन्तु परमेश्वर ने हम पर प्रगट कर दिया है कि वह दयालु और करुणा निधान भी है।

जब मूसा इस्राएलियों को अपनी अगूआई में मरुस्थल व जंगली भूमि में से ले जा रहा था तो उसे कई कठिनाइयों का सामना करना पडा जिनसे वह निराश हो गया और अपने कार्य को करते रहने के लिए उसने सहायता के लिए परमेश्वर से प्रार्थना में कहा, *‘मुझे अपना तेज दिखा दें।’* (निर्गमन 33:18)

फिर अध्याय 34, पद 6-7 में हम पढ़ते है कि परमेश्वर ने अपने को मूसा को इन शब्दों में प्रगट किया (मूसा के सामने होकर यों प्रचार करते हुए चला)

*‘यहोवा, यहोवा, ईश्वर दयालु और अनुग्रहकारी, कोप करने में धीरजवन्त, और अति करुणामय और सत्य है।’* (निर्गमन 34:6)

जब हम परमेश्वर की भलाई, उपकार के बारे में सोचते हैं, हम भजन संहिता के गीतकार के साथ कह सकते हैं,

*‘हे मेरे मन, यहोवा को धन्य कह; और जो कुछ मुझ में है, वह उसके पवित्र नाम को धन्य कहे!’* (भजन संहिता 103:1)

**परमेश्वर का पुत्र**

The son of God

आरम्भ से ही परमेश्वर ने अपने पुत्र को हमारा ऊद्धारकर्ता होने के लिए भेजने का आयोजन (प्रबन्ध) किया। पुराने नियम में यीशु के विषय में कई भविष्यवाणियाँ है जिसमें एक यशायाह 7 में है जहाँ हम पढ़ते हैं,

*‘इस कारण प्रभु आप ही तुम को एक चिन्ह देगा। सुनो, एक कुमारी गर्भवती होगी और पुत्र जनेगी, और उसका नाम इम्मानुएल रखेगी।’* (यशायाह 7:14)

इम्मानुएल का अर्थ है “परमेश्वर हमारे साथ” यहाँ परमेश्वर अपने ही पुत्र को भेजने की प्रतिज्ञा कर रहा है। और ऐसा ही हुआ। पौलुस प्रेरित कहता है,

*‘जब समय पूरा हुआ, तो परमेश्वर ने अपने पुत्र को भेजा जो स्त्री से जन्मा, और व्यवस्था के अधीन उत्‍पन्न हुआ।’* (गलातियों 4:4)

उनके जन्म के पूर्व, स्वर्गदूत ने उनकी माता से कहा,

*‘पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी इसलिये वह पवित्र जो उत्‍पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।’* (लूका 1:35)

अपना प्रचार कार्य शुरू करन से पहले यीशु ने यरदन नदी में बपतिस्मा लिया। इसी समय परमेश्वर ने उन्‍हें पवित्र आत्मा दिया जिसका मतलब था कि उनके पास असीमित सामर्थ थी और परमेश्वर ने उनसे कहा (अर्थात यह आकाशवाणी हुई),

*‘यह मेरा प्रिय पुत्र है, तुझ से मैं प्रसन्न हूँ।’* (मरकुस 1:11)

**यीशु मसीह की प्रकृति**

The nature of Christ

क्योंकि यीशु एक स्त्री से जन्में इसलिए उनकी प्रकृति भी ठीक हमारी प्रकृति के समान थी। इब्रानियों 2 में हम पढ़ते हैं,

*‘इस कारण उस को चाहिए था, कि सब बातों में अपने भाइयों’ के समान बने।’* (इब्रानियों 2:17)

निश्चय ही पुर्नरुत्थान से पहले यीशु हमारे समान थे। पुर्नरुत्थान के बाद उन्‍हें एक सामर्थी, अविनाशी शरीर दिया गया।

क्योंकि यीशु परमेश्वर के पुत्र थे, इसलिए दुर्बल मानवीय प्रकृ‍ति होने के बाद भी उनका आदर्श चरित्र था।

**एक गलत विचार**

A wrong idea

बहुत से लोग ईश्वर के विषय में बाइबिल की शिक्षा की उपेक्षा करते है और इसलिये वे एक ऐसी बात में विश्वास करने लगे हैं जिसे वे त्रिएकता (त्रिएक परमेश्वर) कहते हैं। उनका कहना है कि परमेश्वर में तीन व्‍यक्ति विद्यमान है पिता, पुत्र और पवित्र आत्मा और तीनो बराबर हैं। (अगले पाठ में हम पवित्र आत्मा पर विचार करेंगे।)

त्रिएकता शब्द और वाक्‍यांश ‘परमेश्वर पुत्र’ बाइबिल में कहीं नहीं है। वास्‍तव में यह विचार बाइबिल की शिक्षा के विपरीत है। जिस तरह एक पुत्र कभी भी अपने पिता के बराबर नहीं हो सकता है, उसी तरह यीशु भी कभी परमेश्वर के बराबर नहीं हो सकते है। उन्‍होंने कभी भी परमेश्वर के बराबर होने का दावा नहीं किया परन्तु सब बातों के लिये अपने पिता पर निर्भर रहे। उन्‍होंने कहा,

*‘पुत्र आप से कुछ नहीं कर सकता, केवल वह जो पिता को करते देखता है।’* (यूहन्ना 5:19)

यह सच है कि यीशु ने एक बार कहा, *‘मैं और पिता एक हैं।’* (यूहन्ना 10:30)

लेकिन हम भी यदि किसी व्यक्ति से पूरी तरह सहमत हैं अर्थात दोनो एक ही मत के हैं तो हम कहते हैं कि हम दोनो एक ही हैं। इसी विचार के अनुसार यीशु और उसके शिष्य एक थे क्योंकि यूहन्ना 17 में वह प्रार्थना करते है कि,

*‘वे (शिष्य) सब एक हों; जैसा तू हे पिता मुझ में है, और मैं तुझ में हूँ, वैसे ही वे भी हम में हों।’* (यूहन्ना 17:21)

1 कुरिन्थियों 15:24-28 को पढ़िये। विशेषरूप से 28 वें पद पर ध्यान दीजिये,

*‘और जब सब कुछ उसके अधीन हो जाएगा, तो पुत्र आप भी उसके अधीन हो जाएगा जिसने सब कुछ उसके अधीन कर दिया, ताकि सब में परमेश्वर ही सब कुछ हो।’* (1 कुरिन्थियों 15:28)

यह पद हमें बताता हैं कि पृथ्वी पर यीशु के एक हजार साल के राज्य के अन्त होने पर यीशु परमेश्‍वर के अधीन रहेगा, और सब में केवल परमेश्वर ही सब कुछ होगा।

**त्रिएकता में विश्वास कहां से आया?**

Where did belief in the Trinity come from?

पहली कलीसिया के विश्‍वासी त्रिएकता में विश्वास नहीं करते थे। जो बाइबिल सिखाती थी वे उसमें विश्वास करते थे कि,

*‘परमेश्वर एक ही है, और परमेश्वर और मनुष्यों के बीच में भी एक ही बिचवई है, अर्थात्‍ मसीह यीशु जो मनुष्य है।’* (1 तीमुथियुस 2:5)

यीशु के जन्म के तीन सौ साल बाद मसीहियों ने त्रिएकता में विश्वास करना शुरु कर दिया; और यह विश्वास बाइबिल पर नहीं परन्तु प्राचीन यूनानियों के विचारों पर आधारित था जो एक सच्चे अद्वैत परमेश्वर के बारे कुछ नहीं जानते थे।

**पहले मसीहियों का सच्चा विश्वास**

The true belief of the first Christians

प्रेरितों के विश्वास वचन में, जो यीशु के स्वर्गारोहण के लगभग सौ साल बाद संग्रहित किये गये और जिनमें हमें पहले मसीहियों का विश्‍वास दिखता है, हम पढ़ते हैं,

“मैं विश्वास करता हूँ सर्वशक्तिमान परमेश्वर पिता में जो स्वर्ग और पृथ्वी का सृजनहार है और उसके एकलौते पुत्र हमारे प्रभु यीशु मसीह में जो पवित्र आत्मा से गर्भ में आया और कुवारी मरियम से उत्पन्न हुआ।” (प्रेरितों के विश्‍वासी वचन)

यह बाइबिल की सच्ची शिक्षा हैं।

**सारांश**

Summary

1. केवल एक ही परमेश्वर है।
2. परमेश्वर त्रिएक नहीं है। त्रिएकता का सिद्धान्त बाइबिल में नहीं है।
3. यीशु मसीह परमेश्वर नहीं है; वह परमेश्वर का पुत्र है।
4. यीशु एक मनुष्य है परन्तु वह और किसी भी मनुष्य से बहुत ही अधिक बडा और महान है।
5. उसका जन्म एक महान अश्चर्य कर्म था क्योंकि उसकी माता कुंवारी थी। केवल सर्वशक्तिमान परमेश्वर ही उसका पिता था।

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम*

### प्रश्नपत्र नं. 5 - पाठ 13 से 15

Long format questions – Lessons 13-15

**तेरवें पाठ पर प्रश्न**

1. बाइबिल से एक पद को लिखिए जो यह दर्शाता है कि जब यीशु पृथ्वी पर वापिस आयेंगे तो वह मृतकों को जी उठाऐंगे।
2. पहिले के मसीही मृत्यु को “सो जाना” क्यों कहते थे?
3. पुर्नरूत्‍थान और न्याय के बाद धर्मियों का क्या कार्य होगा?

**चौदवें पाठ पर प्रश्न**

1. बाइबिल से एक पद लिखिए जो यह दर्शाता है कि न्याय का एक दिन होगा।
2. वह न्याय कब होगा?
3. किनका न्याय किया जाएगा?

**पंद्रहवें पाठ पर प्रश्न**

1. हम परमेश्वर को कैसे जान सकते है?
2. हम किस तरह से समझ सकते हैं कि यीशु परमेश्वर का पुत्र है?
3. एक पद लिखिए जो बताता है कि परमेश्वर यीशु से बड़ा (महान) है।

धन्यवाद - हमारा पता:

क्रिस्टडेलफियन्‍स, पी. ओ. बॉक्स 50, गाजियाबाद - 201001, उत्तर प्रदेश

The Christadelphians, P.O. Box 50, Ghaziabad, 201001, U.P.

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम नंबर 16*

# 16. परमेश्वर का पवित्र आत्मा

16. God’s Holy Spirit

साप्‍ताहिक पाठ– निर्गमन, अध्याय 1-6; 1 पतरस, अध्याय 4-5

प्रश्‍नोत्‍तर के लिए पाठ– भजन संहिता 51

**सामर्थ्य, जिसको मापा नही जा सकता है**

Power that cannot be measured

*‘आदि में परमेश्वर ने आकाश और पृथ्वी की सृष्टि की।’* (उत्पत्ति 1:1)

एक घर बनाने के लिये किये जाने वाले कामों पर विचार किजिए। नक्शा बनाना, विभिन्‍न क्षेत्रों में निपुण अच्छे कारिगरों की आवश्यकता, जो एक साथ काम करते है। कितना सोच विचार और परिश्रम लगता है!

तो फिर जरा सोचिये कि आकाश और पृथ्वी को बनाने में कितनी सोच और परिश्रम लगाना पड़ा होगा? इस महान कार्य के लिये सामर्थ कहां से आई? भजन संहिता में हमें बताया गया है,

*‘आकाशमण्डल यहोवा के वचन से, और उसके सारे गण उसके मुँह की श्वांस से बने ... क्योंकि जब उसने कहा, तब हो गया; जब उसने आज्ञा दी, तब वास्तव में वैसा ही हो गया।’* (भजन संहिता 33:6,9)

**परमेश्वर की आत्मा**

God’s spirit

परमेश्वर की सामर्थ्य जो उसके उद्देश्‍यों को पूरा करने के लिए कार्य करती है उसको बाईबल में परमेश्‍वर की "आत्‍मा" कहा गया है। इसलिए हम उत्‍पत्ति 1:2 में पढ़ते है:

*‘परमेश्वर का आत्मा जल के ऊपर मण्डराता था।’* (उत्पत्ति 1:2)

और अय्यूब में पढ़ते हैं,

*‘उसकी श्वास से आकाशमण्डल स्वच्छ हो जाता है।’* (अय्यूब 26:13)

जिन व्यक्तियों ने बाइबिल लिखी उनके मनों, विचारों को प्रेरित करनें के लिए भी परमेश्वर की सामर्थ्य का प्रयोग किया गया। उन्होंने अपने विचारों को नहीं लिखा परन्तु परमेश्वर ने अपने वचनों को लिखने में उनको प्रयोग किया।इसलिए हम 2 पतरस में पढ़ते हैं,

*‘कोई भी भविष्यद्वाणी मनुष्य की इच्‍छा से कभी नहीं हुई, पर भक्त जन पवित्र आत्मा के द्वारा उभारे जाकर परमेश्वर की ओर से बोलते थे।’* (2 पतरस 1:21)

(साधारणतया: जब हम भविष्यद्वाणी के बारे विचार करते है तो हम सोचते है कि यह भविष्‍य बताने के विषय में है।लेकिन बाइबिल में "भविष्यद्वाणी" शब्द का अर्थ है परमेश्वर के वचनों को बोलना चाहे वे भूतकाल के विषय में हो, वर्तमान या भविष्य के बारे में हों।)

आपने यदि पतरस के शब्दों पर ध्‍यान दिया हो तो परमेश्वर की आत्मा को "पवित्र आत्मा" कहा गया है। पवित्र शब्द का अर्थ है कि किसा विशेष उद्देश्‍य के लिए अलग किया हुआ।

**पवित्र आत्मा और प्रभु यीशु मसीह**

The Holy Spirit and the Lord Jesus Christ

पवित्र आत्मा द्वारा प्रभु यीशु का जन्म हुआ। मरियम से स्वर्गदूत नें कहा

*‘पवित्र आत्मा तुझ पर उतरेगा, और परमप्रधान की सामर्थ्य तुझ पर छाया करेगी इसलिये वह पवित्र जो उत्‍पन्न होनेवाला है, परमेश्वर का पुत्र कहलाएगा।’* (लूका 1:35)

आप यहां देखेंगे कि “पवित्र आत्मा” और “परमप्रधान की सामर्थ्य” दोनों एक ही चीज हैं।

यरदन नदी में बपतिस्मे के समय, यीशु को बिना माप के पवित्र आत्मा दिया गया। हम यूहन्ना में पढ़ते है,

*‘जिसे परमेश्वर ने भेजा है, वह परमेश्वर की बातें कहता है: क्‍योंकि वह आत्मा नाप नापकर नहीं देता।’* (यूहन्ना 3:34)

पूरी सामर्थ्य यीशु को दी गयी थी। पुराने और नए नियम के समय के मनुष्यों को परमेश्वर ने अपनी सामर्थ्य का एक अंश दिया परन्तु कोई भी दूसरा मनुष्य कभी भी उस सामर्थ्य को प्राप्त करने के योग्य नहीं रहा जिस प्रकार परमेश्वर ने यीशु को दी।

**शिष्यों को पवित्र आत्मा देने की प्रतिज्ञा की गई**

The disciples were promised the Holy Spirit

यीशु ने अपने बारह शिष्यों से प्रतिज्ञां की कि जब वह उन्हें छोडकर चला जाएगा उन्हें भी पवित्र आत्मा दिया जाएगा। यूहन्‍ना में यीशु कहते है:

*‘ये बातें मैं ने तुम्हारे साथ रहते हुए तुम से कहीं। परन्‍तु सहायक अर्थात्‍ पवित्र आत्मा जिसे पिता मेरे नाम से भेजेगा, वह तुम्हें सब बातें सिखाएगा, और जो कुछ मैं ने तुम से कहा है, वह सब तुम्हें स्मरण कराएगा।’* (यूहन्ना 14:25-26)

यहां यीशु पवित्र आत्मा के विषय में इस प्रकार बताते है कि जैसे वह कोई व्‍यक्ति है; और कुछ व्यक्ति सचमुच में सोचते हैं कि पवित्र आत्मा एक व्‍यक्ति है- एक ईश्वर। परन्तु हमने बाइबिल से भली भांति देख और समझ लिया है कि पवित्र आत्मा परमेश्वर की सामर्थ्य है। इसलिए हम सब जानते हैं कि लोगों का यह विचार ठीक नहीं हो सकता। तो फिर क्यों यीशु कुछ जगहों में पवित्र आत्मा के विषय में ऐसे बताते है कि जैसे यह कोई व्‍यक्ति है?

भजन संहिता 65 को पढ़िए जो कहता है,

*‘चराइयाँ भेड़-बकरियों से भरी हुई हैं; और तराइयाँ अन्न से ढँपी हुई हैं, वे जयजयकार करतीं और गाती भी हैं।’* (भजन संहिता 65:13)

जब हम इसे पढ़ते हैं हमारी आँखों के सामने तराई में पके अन्न के लहलहाते पौंधो का एक सुन्दर तस्‍वीर बन जाती है; परन्तु एक क्षण के लिए भी हम कल्‍पना नही करते हैं कि तराई जयजयकार करती और गाती भी है – यह इस तस्‍वीर की व्‍याख्‍या करने का भजनकार का तरीका है।

इसी प्रकार जब यीशु पवित्र आत्मा को एक व्यक्ति जैसा सम्बोधित करते है तो वह केवल यह दिखाना रहे है कि वास्‍तव में यह आत्‍मा या परमेश्वर की सामर्थ क्‍या है।

**आत्मा शिष्यों पर उतरता है**

The Spirit comes to the disciples

हम देख चुके हैं कि स्वर्गारोहण के पहिले यीशु ने अपने शिष्यों से प्रतिज्ञा की कि उन्‍हें सामर्थ्य। यीशु ने उन्हें यरूशलेम में रुकने के लिए कहा और कहा कि, *‘पिता की उस प्रतिज्ञा के पूरे होने की बाट जोहते रहो’*, और उनसे यह भी प्रतिज्ञां की कि *‘...थोड़े दिनों के बाद तुम पवित्र आत्मा से बपतिस्मा पाओगे।’* (प्रेरितों के काम 1:4-5)

प्रेरितों के काम और उसके दूसरे अध्याय में हम पढ़ते हैं किस तरह जब शिष्य प्रतिक्षा कर रहे थे तो उन पर पवित्र आत्मा आया। 1 से 3 पद पढ़िये। आत्मा एक ध्वनि के साथ आया

*‘...बड़ी आँधी की सी सनसनाहट का शब्द...’* (प्रेरितों के काम 2:2)

इस आवाज की गूंज से, जिस घर में वे इकट्ठे थे वह हिलने लगा। आग की सी जीभें उन में से प्रत्येक पर दिखाई दी और यह उन्हें पवित्र आत्मा दिये जाने का संकेत था। वे सब पवित्र आत्मा से भर गए और इसके बाद जैसा यीशु ने उनसे प्रतिज्ञा की थी वे बहुत से चमत्‍कार करने लगे।

**आत्मा हम तक आता है**

The Spirit comes to us

हमने देखा कि परमेश्वर के पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से प्रेरित होकर बाइबिल की पुस्तकों के लेखकों ने उन्हें लिखा। यीशु ने एक बार कहा,

*‘जो बाते मैं ने तुम से कही हैं वे आत्मा हैं और जीवन भी है।’* (यूहन्ना 6:63)

जब हम परमेश्‍वर का वचन पढ़ते है तो हम परमेश्‍वर की आत्‍मा पाने की चेतना में होते है। यह हमारे जीवन का बदल सकता है और हमें इस प्रकार बढ़ने में हमारी सहायता करता है जिससे हम परमेश्‍वर को अधिक प्रसन्‍न कर सके।तो आईये हम परमेश्वर के वचन को प्रार्थना सहित और सम्‍पूर्ण समर्पण से पढ़े और पतरस के उन शब्‍दों को याद रखें जो उसने अपनी पहली पत्री में लिखे कि,"नये जन्‍में हुए बच्‍चों के समान निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिए बढ़ते जाओ" (1पतरस 2:2)

*‘...परमेश्वर का वचन समझकर (और सचमुच यह ऐसा ही है) ग्रहण किया; और वह तुम विश्वासियों में जो विश्वास रखते हो, प्रभावशील है।’* (1 थिस्सलुनीकियों 2:13)

*‘पवित्रशास्‍त्र तेरा जाना हुआ है, जो तुझे मसीह पर विश्वास करने से उद्धार प्राप्‍त करने के लिये बुद्धिमान बना सकता है।’* (2 तीमुथियुस 3:15)

जब हम बाइबिल को पढ़ते है, और उसके सन्देश को समझते हैं परमेश्वर अपने वचन के द्वारा हमसे बाते करता है। चूंकि उसकी शिक्षाएँ हमारे भावों को बदलती है, इसका मतलब है कि परमेश्वर का आत्मा हम में कार्य कर रहा है। धीरे धीरे हम धार्मिक पृवत्ति के हो जाते है; हमारे जीवन बदल जाते हैं और हम इस तरह से आगे बढ़ते जाते है जो परमेश्वर को प्रसन्न है।

इसलिये आइये पतरस की सलहा को याद रखते हुए हम प्रतिदिन अपने हित के लिये परमेश्वर के वचन को पढ़ने की हर कोशिश करें,

*‘नये जन्मे हुए बच्‍चों के समान निर्मल आत्मिक दूध की लालसा करो, ताकि उसके द्वारा उद्धार पाने के लिये बढ़ते जाओ।’* (1 पतरस 2:2)

**पवित्र आत्मा के विषय में हमने क्या सीखा है?**

What have we learned about the Holy Spirit?

1. पवित्र आत्मा परमेश्वर की सामर्थ्य है।
2. पवित्र आत्मा की सामर्थ्य से बाइबिल लिखी गई थी।
3. यीशु का जन्म पवित्र आत्मा की सामर्थ्य द्वारा हुआ था।
4. परमेश्वर के सब भविष्यद्वक्ताओं को पवित्र आत्मा का एक दान मिला था, परन्तु यीशु को वह बिना माप के दिया गया।
5. यीशु के स्वर्गारोहण के पश्चात, उसके शिष्यों को पवित्र आत्मा दिया गया।

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम नंबर 17*

# 17. पवित्र आत्मा के वरदान

17. Holy Spirit gifts

साप्‍ताहिक पाठ– निर्गमन, अध्याय 7-14; मलाकी, अध्याय 1-2

प्रश्‍नोत्‍तर के लिए पाठ– इफिसियों, अध्याय 4; 1 कुरिन्थियों 14

यीशु ने अपने शिष्यों से प्रतिज्ञा की कि उन्हें पवित्र आत्मा दिया जाएगा। उसने उनसे कहा,

*‘विश्वास करनेवालों में ये चिन्‍ह होंगे कि वे मेरे नाम से दुष्‍टात्माओं को निकालेंगे, नई नई भाषा बोलेंगे, साँपों को उठा लेंगे, और यदि वे प्राणनाशक वस्‍तु भी पी जाएँ तौभी उनकी कुछ हानि न होगी; वे बीमारों पर हाथ रखेंगे, और वे चंगे हो जाएँगे।’* (मरकुस 16:17-18)

शिष्यों से ये प्रतिज्ञा क्यों की गई?

**उन्होने सिद्ध किया कि उनका सन्देश परमेश्वर की ओर से था**

They proved the message was from God

यीशु क्रूस पर चढ़ा दिये गये; परमेश्वर ने उन्‍हें मृतकों में से जिला उठाया। वे अपने चेलों के एक छोटे से दल को छोड़कर स्‍वर्ग में चले गये और चेलों के इस दल से कह गये कि,

*‘सारे जगत में जाकर सारी सृष्‍टि के लोगों को सुसमाचार प्रचार करो।’* (मरकुस 16:15)

यह एक कठिन कार्य था। क्‍या लोगों ने उनको सुना होगा? और निश्‍चय ही लोगो ने इस पर विश्‍वास नही किया होगा कि एक आदमी तीन दिन तक मरे रहने के बाद फिर जिन्दा हो गया? परन्तु यह आश्चर्य जनक होते हुए भी सत्य है।

इसलिए शिष्यों को आश्चर्य कर्मों को करने की सामर्थ्य दी गई, ताकि इस चिन्ह द्वारा लोग जान सकें कि उनका सन्देश (सुसमाचार) परमेश्वर की ओर से था। हम पढ़ते हैं कि पिन्तेकुस्त के दिन किस तरह उन्होंने अन्य-अन्य भाषाओं (बोलियों) में, जिन्हें उन्होंने कभी नहीं सीखा, यहूदियों को प्रचार किया था और जिन्हें वे परमेश्वर की सामर्थ्य के बिना बोल नहीं सकते थे। यह अन्य-अन्य "भाषाओं में बोलना” कहलाता था।

कोई आश्चर्य नहीं कि लोग आश्‍चर्यचकित हो गए थे और कोई आश्चर्य नहीं कि उन्होंने उनको सुना।

**आत्मा के वरदान कलीसिया की अगुआई में सहायक ठहरे**

The spirit gifts helped to guide the church

पिन्तेकुस्त के दिन प्रचार करने के परिणाम स्वरुप तीन हजार पुरुष और स्त्रीयां शिष्यों के साथ हो लिए और मसीही बन गए (प्रेरितों के काम 2:41)। इस तरह मसीही कलीसिया ने अच्छी शुरुआत की।

परन्तु उनकी कठिनाइयाँ भी आप सोच सकते हैं। इतने बड़े मसीही परिवार को कुछ ऐसे व्यक्तियों की आवश्यकता थी जो कुटुम्बियों की अगुआई करें, उन्हें शिक्षा दें और सब बातों के प्रबंध करने में उन्हें सलाह दें। वे नए नियम से नहीं सीख सकते थे क्योंकि उस समय तक नया नियम लिखा नहीं गया था।

इसलिए आत्मा के वरदान न केवल अविश्वासियों को प्रेरितों के सुसमाचार (सन्देश) की सत्यता पर प्रतीति करने के लिए भेजे गए परन्तु पहिले मसीहियों की सहायता और शिक्षा और पहली कलीसियाओं को सुसंगठित करने के लिए भी दिये गये।

**वे वरदान क्या थे?**

What were these gifts?

1 कुरिन्थियों 12:22 में पौलुस प्रेरित बताता है कि कलीसिया के भिन्न भिन्न सदस्यों को अलग वरदान दिए गए और किस तरह प्रत्येक सदस्य को दूसरों की भलाई के लिए काम करना था। 28-29 पदों में वह इन वरदानों की एक सूची देता है।

*‘परमेश्वर ने कलीसिया में अलग अलग व्यक्ति नियुक्त किए हैं: प्रथम प्रेरित, दूसरे भविष्यद्वक्ता, तीसरे शिक्षक, फिर सामर्थ्य के काम करनेवाले, फिर चंगा करनेवाले, और उपकार करनेवाले, और प्रबन्ध करनेवाले, और नाना प्रकार की भाषा बोलनेवाले।’* (1 कुरिन्थियों 12:28)

पहिले तीन वरदान, सबसे मुख्य, पहिले मसीहियों की शिक्षा के लिए थे।

**वरदानों का अन्त**

The end of the gifts

हम देख चुके हैं कि मसीहियों के दिनों में नया नियम नहीं था – उस समय वह लिखा ही नहीं गया था और हमें बताया गया कि यह भी एक कारण था कि ये वरदान कितने आवश्यक थे।

हम प्रभु यीशु का जीवन वृतांत और प्रेरितों की पत्रियांपढ़ सकते है। परन्तु पहिले मसीहियों के पास कोई लेख नहीं थे। इसलिये प्रेरितों, भविष्यद्वक्ताओं और शिक्षकों के आत्मा के ये वरदान पहली कलीसियाओं के लिये अति आवश्यक थे।

जब नया नियम लिख लिया गया, तब परमेश्वर की ओर से इस विशेष सहायता की कोई आवश्यकता नहीं रही। वह सब कुछ जो मसीहियों को जानना आवश्यक है उनके लिये बाइबिल में लिखित है। इसलिये आत्मा के वरदान ले लिये गए।

पौलुस प्रेरित ने कहा ऐसा होगा जब ये वरदान उठा लिये जायेंगे। 1 कुरिन्थियों में हम पढ़ते हैं,

*‘प्रेम कभी टलता नहीं; भविष्यद्वाणियाँ हों, तो समाप्‍त हो जाएँगी, भाषाएँ हों, तो जाती रहेंगी; ज्ञान हो, तो मिट जाएगा।’* (1 कुरिन्थियों 13:8)

ऐसा नही लगता है कि जैसे ही नया नियम लिखा गया ये वरदान अचानक ले लिये गए, परन्तु जैसे जैसे समय बीतता गया जिन्हें ये वरदान प्राप्त थे उनकी मृत्यु हो गई और उनके बाद आनेवाले मसीहियों को ये वरदान नहीं दिये गये।

**क्या आज किसी को ये वरदान प्राप्त है?**

Does anyone posess these gifts today?

आज भी कुछ लोग दावा करते हैं कि उन्‍हें पवित्र आत्मा के वरदान प्राप्‍त है विशेष कर बीमारों को चंगाई देने और अन्‍य अन्‍य भाषायें बोलने के वरदान। जो लोग ऐसा दावा करते है हम उनको कैसे जांच सकते है?सबसे पहले तो हमें वह बात याद रखनी चाहिये जो प्रेरित पौलुस ने 1 कुरिन्थियों के अध्‍याय 13 में कही कि ऐसा समय आयेगा जब ये वरदान नही रहेंगे। यदि यह समय नया नियम लिखे जाने के बाद शुरू नही हुआ तो फिर यह कब शुरू हुआ? एक बात तो निश्चित है कि ऐसा आने वाले परमेश्‍वर के राज्‍य में नही होगा, क्‍योंकि तब तो इनसे भी कही अधिक वरदान दिये जायेंगे।

दूसरी बात हमें ध्‍यान देनी चाहिए कि पवित्र आत्‍मा के वरदान सच्‍ची कलिसिया की सहायता के लिए दिये गये। सच्‍ची कलिसियां परमेश्‍वर के वचन पर विश्‍वास करती है और उसका प्रचार करती है। आज जो लोग इस सामर्थ को रखने का दावा करते है उनमें से सब नही तो अधिकाशं उन बातों का प्रचार करते है जो परमेश्‍वर के वचनानुसार नही है। इसलिए हमें इन दावों को अस्वीकार करना चाहिए।

और तीसरे हमें यह स्‍वीकार करना चाहिए कि हम इन चमत्‍कारों से प्रभावित नही है। ऐसी अधिकांश चंगाईयों के विषय में हम शीघ्र ही देखते है कि वास्‍तव में ये चंगाई हुयी ही नही है और अन्‍य दूसरी चंगाईयों की विज्ञान के द्वारा व्‍याख्‍या की जा सकती है। सम्‍मोहन करने वाले भी अधिकाशंत: ऐसे परिणाम प्राप्‍त कर सकते है।जो लोग बाईबल में लिखी बातों पर विश्‍वास करते है वे कभी भी इन वरदानों को रखने का दावा नही करते, क्‍योंकि वे जानते है कि जब नये नियम का लिखा जाना सम्‍पूर्ण हो गया तो ये वरदान उठा लिये गये।अन्त में एक और याद रखने योग्‍य बात यह है कि जब हम बाइबिल को पढ़ते हैं तो हम वास्‍तव में परमेश्वर की आत्मा को प्राप्त करते है। इसलिए यदि हम बचना चाहते है तो हमें जितना अधिक हो सकें बाइबिल को पढ़कर ईश्‍वर द्वारा दिये गये इस अद्भुत वरदान की प्रसन्‍नसा करें।

**सारांश**

Summary

1. पवित्र आत्मा के वरदान पहिले के मसीहियों को दिए गए थे।
2. वे दो अभिप्राय से दिए गए थे:

(अ) अविश्‍वासियों के लिए एक चिन्ह।

(ब) पहली कलीसियाओं को मजबूत बनाने के लिए।

1. ये केवल उस समय तक के लिए दिये गये जब तक कि नए नियम की पुस्तकें लिखी नहीं जा चुकी। उसके बाद इन वारदानों को समाप्‍त हो जाना था।
2. उनके लोप होने के बाद कोई भी व्यक्ति पवित्र आत्मा की सामर्थ्य द्वारा आश्चर्य कर्मों को नहीं कर पाया है।
3. जो व्यक्ति आज भी आश्चर्य कर्मों के करने का दावा करते हैं उनमें सम्‍मोहन जैसी कोई विचित्र शाक्ति हो सकती है।परन्तु वह पवित्र आत्मा की सामर्थ्य नहीं है।

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम नंबर 18*

# 18. क्रूस

18. The cross

साप्‍ताहिक पाठ– निर्गमन, अध्याय 15-20; मलाकी, अध्याय 3-4

प्रश्‍नोत्‍तर के लिए पाठ– भजन संहिता 22; यशायाह, अध्याय 53

**प्रभु यीशु मसीह के दुख और सताव की भविष्यद्वाणी**

A prophecy of the suffering of Jesus Christ our Lord

हम प्रभु यीशु के दुख और सताव के विषय में नए नियम के पहली चार पुस्तकों में पढ़ सकते है। परन्तु यदि हम पुराने नियम की कुछ भविष्यद्वाणियों को पढ़ें तो हमें उसके दुख व कलैश की पूरी तस्वीर मिल जाती है।

भजन संहिता 22 को पढ़िये। यह भजन हमें इस बात को समझने में सहायता करता है कि यीशु ने उस समय कैसा महसूस किया होगा जब उनहें क्रूस पर चढाया गया।

*‘परन्तु मैं तो कीड़ा हूँ, मनुष्य नहीं; मनुष्यों में मेरी नामधराई है, और लोगों में मेरा अपमान होता है। वे सब जो मुझे देखते हैं मेरा ठट्ठा करते हैं, और ओंठ बिचकाते और यह कहते हुए सिर हिलाते हैं, “अपने को यहोवा के वश में कर दे वही उसको छुड़ाए, वह उसको उबारे क्योंकि वह उस से प्रसन्न है।’* (भजन संहिता 22:6-8)

यीशु को न केवल शारीरिक पीड़ा हुयी बल्कि क्रूस पर चढ़ाए जाने के अपमान का भारी बोझ भी उन पर था। इस भजन को ध्यान से पढ़िये। शायद बाइबिल के किसी अन्‍य शब्‍द की अपेक्षा ये शब्द हमें यह जानने और मानने में सहायता देते हैं कि यीशु ने हमारे लिये क्या कुछ नहीं सहा। 15-16 पदों को फिर पढ़िये,

*‘मेरा बल टूट गया, मैं ठीकरा हो गया; और मेरी जीभ मेरे तालू से चिपक गई; और तू मुझे मारकर मिट्टी में मिला देता है। क्योंकि कुत्तों ने मुझे घेर लिया है; कुकर्मियों की मण्डली मेरे चरों ओर मुझे घेरे हुए है; वह मेरे हाथ और मेरे पैर छेदते हैं।’* (भजन संहिता 22:15-16)

**यीशु को क्यों इतनी पीड़ा सहनी पड़ी?**

Why did Jesus have to suffer so much?

जब हम क्रूस पर टंगे यीशु के बारे में सोचते हैं और याद करते हैं कि उसने कभी पाप नही किया था परन्तु उन्‍होंने हमेशा वही किया जिनसे परमेश्वर प्रसन्न था, तो ऐसे में हम स्वंय से यह प्रश्‍न पूछते है कि; “यीशु के साथ ऐसा क्‍यों हुआ?”

एक बात निश्चित हैं कि केवल यह ही एक तरीका था जिसके द्वारा मनुष्यों को पाप से बचाया जा सकता था। यीशु ने तीन बार अपने पिता से प्रार्थना की, *‘यदि हो सके तो यह कटोरा मुझ से टल जाए;’* परन्तु उसने ध्‍यानपूर्वक ये शब्द और जोड़ दिये, *‘तौभी जैसा मैं चाहता हूँ वैसा नहीं, परन्‍तु जैसा तू चाहता है वैसा ही हो।’* (मत्ती 26:39)

यदि यह सम्भव होता तो अवश्य ही परमेश्वर अपने पुत्र पर इस यातना और अति शारीरिक पीड़ा को नहीं आने देता। परन्तु केवल यही एक तरीका था।

**पाप के विरुद्ध लड़ाई**

A fight against sin

परन्तु फिर भी हम अपने आप से पूछते हैं कि क्रूस ही की पीड़ा और अपमान क्‍यों ?एक उत्तर है कि जब हम यीशु को क्रूस पर टंगे देखते हैं, हम मानव प्रकृति के असली रुप को देखते हैं।

आईये इसे समझने का प्रयास करें। यीशु हमारे ही समान एक मनुष्य थे और हमारे ही समान वे बार बार गलत काम करने और गलत बातें बोलने के लिए परखे गये। हम पढ़ते हैं कि वह,

*‘सब बातों में हमारे समान परखा तो गया, तौभी निष्‍पाप निकला।*’ (इब्रानियों 4:15)

हमारे समान वे परखे गये, परन्तु हमारे समान वे परीक्षा में गिरे नही। उन्‍होंने कभी अपनी इच्‍छा से नही परन्तु जैसा परमेश्‍वर चाहता था वैसा ही किया।

लेकिन तो भी उनकी प्रकृति हमारे ही समान थी- एक ऐसी प्रकृति जो उनको पाप में ले जा सकती थी यदि वह लगातार इस प्रकृति के विरूद्ध न लडते। आदम को मृत्यु के दण्ड के द्वारा, परमेश्वर ने दिखा दिया कि

*‘पाप की मजदूरी तो मृत्यु है।’* (रोमियों 6:23)

यीशु को, जो आदम की एक पापरहित सन्‍तान थी, उनके क्रूस पर चढाये जाने के द्वारा परमेश्‍वर ने यह प्रदर्शित किया कि मानवीय प्रकृति अपनी उत्‍तम दशा में भी अपमान और क्रूस पर चढाये जाने के योग्‍य है।

तौभी यीशु का चरित्र दोष रहित था।उन्‍होंनं कभी पाप का विचार या कार्य नही किया। इसलिए परमेश्‍वर ने यह नियम तोड़े बिना कि "पाप की मजदूरी मृतयु है" उन्‍हें मुर्दो में से जिन्‍दा किया।

और इस प्रकार परमेश्‍वर ने यीशु को एक नयी प्रकृति दी – एक ऐसी प्रकृति जो कभी पाप के लिए नही परखी जा सकती और जो कभी मरती नही।

**क्रूस की शिक्षायें**

The lessons of the cross

यीशु की क्रूस पर मृत्यु द्वारा परमेश्वर ने हमें दिखा दिया कि वास्‍तव में हमारी प्रकृति कितनी बुरी है। और इससे पहले कि हम अपना जीवन इस प्रकार जीना प्रारम्‍भ करें जिससे परमेश्‍वर प्रसन्‍न होता है हमें इस बात को जानना अति आवश्‍यक है।

लेकिन दूसरी प्रभावी शिक्षाऐं भी है। हमें अवश्‍य ही इस सच्‍चाई पर भी मनन करना चाहिए कि यीशु मसीह एक स्‍वीकार्य बलिदान थे। वे एक दोष रहित मेमने थे और परमेश्‍वर की इच्‍छा इस र्निदोष बलिदान को ग्रहण करने की थीइस सच्चाई पर गहरा सोच विचार अच्छा है कि प्रभु यीशु परमेश्वर को स्वीकार योग्य बलिदान था। वह एक निर्दोंष “मेम्ने” के समान था और परमेश्वर इस निर्दोंष बलिदान के अर्पण को ग्रहण करने के लिए तैयार था।

*‘यह परमेश्वर का मेम्ना है जो जगत का पाप उठा ले जाता है।’* (यूहन्ना 1:29)

एक और महत्त्वपुर्ण शिक्षा यह है: मसीह का क्रूस प्रदर्शित करता है कि हमारे लिये परमेश्वर का प्रेम किस हद तक जा सकता है। पौलुस इसे इन शब्दों में प्रस्तुत करता है;

*‘जिसने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्‍तु उसे हम सब के लिये दे दिया, वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्‍यों न देगा?’* (रोमियों 8:32)

क्रूस हमारे जीवन का मार्ग है जैसा कि पौलुस 1 कुरिन्थियों में कहता है,

*‘क्‍योंकि क्रूस की कथा नाश होनेवालों के लिये मूर्खता है, परन्‍तु हम उद्धार पानेवालों के लिये परमेश्वर की सामर्थ्य है।’* (1 कुरिन्थियों 1:18)

**एक नया जीवन**

A new life

हम आदम की सन्तान है और आदम के समान हम परमेश्वर के मार्गों की अपेक्षा अपने मार्गों को चुनना चाहते हैं। परन्तु यीशु मसीह ने अपने आप को पाप के लिए बलिदान करके हमारे लिए यह सम्‍भव कर दिया कि हम परेश्‍वर की सन्‍तान बन सकते है। यीशु ने कहा

*‘यदि कोई मेरे पीछे आना चाहे, तो अपने आप का इन्‍कार करे और प्रतिदिन अपना क्रूस उठाए हुए मेरे पीछे हो ले।’* (लूका 9:23)

**हमें भी यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ना है**

We must be crucified with Jesus

हमें अपने पापी व्यक्तित्व को क्रूस पर चढ़ाना हैं हमें अपने ही अधर्म के मार्गों पर चलने के बजाय हमें अवश्य ही पाप के लिए मरना चाहिये, और मसीह के साथ एक नये जीवन की सी चाल चलनी चाहिए और अपने मार्गो को चुनने के बजाय ईश्‍वर के मार्गो को प्राथमिकता देनी चाहिये। पौलुस प्रेरित हमें बताता है;

*‘जो मसीह यीशु के हैं, उन्‍होंने शरीर को उसकी लालसाओं और अभिलाषों समेत क्रूस पर चढ़ा दिया है। यदि हम आत्मा के द्वारा जीवित हैं, तो आत्मा के अनुसार चलें भी।’* (गलातियों 5:24-25)

**सारांश**

Summary

1. दृष्टों ने यीशु को एक तड़पने वाली मृत्‍यु दी जिसे "क्रूस पर चढ़ाना कहते थे" और उनके शरीर में कील ठोकर क्रूस पर लटकाकर मरने के लिए छोड़ दिया।
2. परमेश्वर ने यह होंने दिया क्योंकि हमें अपने पापों से बचाने के लिये केवल यही एक तरीका था।
3. हमें इस बात का ज्ञान कराने का यही एक तरीका था कि हम पापी है और मृत्‍यु के योग्‍य है।
4. बाइबिल हमें यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ने के लिये कहती है। इसका अर्थ है कि हमारी खुद की पापी लालसाएँ और अभिलाषाएँ अवश्य ही नाश होनी चाहिए।
5. यीशु का क्रूस पर चढ़ाया जाना हमें यह भी सिखाता है कि यीशु के समान हमें भी हमेशा परमेश्वर की आज्ञा मानने की कोशिश करना चाहिये चाहे हमें कितना भी कष्ट क्यों न हो।

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम*

### प्रश्नपत्र नं. 6 - पाठ 16 से 18

Long format questions – Lessons 16-18

**सोलहवें पाठ पर प्रश्न**

1. उस एक पद को लिखिए जो बताता है कि बाइबिल परमेश्वर की पवित्र आत्मा के द्वारा लिखी गई।
2. शिष्यों को पवित्र आत्मा कब मिला? क्या कोई बाहरी चिन्ह उसके साथ दिया गया?
3. क्या हम आज भी पवित्र आत्मा प्राप्त कर सकते है?

**सत्रहवें पाठ पर प्रश्न**

1. एक कारण बताइए कि क्यों पवित्र आत्मा के वरदान पहिले मसीहियों को दिये गये?
2. इन वरदानों में कौन से वरदान सबसे मुख्य थे?
3. क्या आप सोचते हैं कि वर्तमान समय में किसी को ये वरदान प्राप्त हैं?

**अठारवें पाठ पर प्रश्न**

1. किस तरह से यीशु दूसरे लोगों के समान थे और किस तरह से वे दूसरों से भिन्न थे?
2. क्रूस हमें मनुष्य की प्रकृति के बारे में क्या सिखाता है?
3. किस तरह हम यीशु के साथ क्रूस पर चढ़ाए जा सकते हैं?

धन्यवाद - हमारा पता:

क्रिस्टडेलफियन्‍स, पी. ओ. बॉक्स 50, गाजियाबाद - 201001, उत्तर प्रदेश

The Christadelphians, P.O. Box 50, Ghaziabad, 201001, U.P.

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम नंबर 19*

# 19. बाइबिल में वर्णित शैतान

19. The devil of the Bible

साप्‍ताहिक पाठ– निर्गमन, अध्याय 21-26; नीतिवचन, अध्याय 3

प्रश्‍नोत्‍तर के लिए पाठ– इब्रानियों, अध्याय 2

**मैंनें इसे नहीं किया!**

I didn’t do it!

एक बच्चे ने खेलते खेलते कागज़ के फटे टुकडे फर्श पर तितर बितर कर छोड़ दिये। जब उसकी माता ने देखा तो उसने गुस्‍से से उससे पूछा, “यह किसने किया?” तुरन्त ही छोटे बालक ने उत्तर दिया, “पापा ने”।

हम सब भी कुछ उस छोटे बालक के समान हैं। जब हम कोई गलती करते हैं तो साधारणतः हम अपनी गलती को मानना नहीं चाहते हैं। हम किसी दूसरे को दोषी ठहराना चाहते हैं। परन्तु याकूब प्रेरित हमें बताता है,

*‘प्रत्येक व्यक्ति अपनी ही अभिलाषा से खिंचकर और फँसकर परीक्षा में पड़ता है।’* (याकूब 1:14)

यदि हम सच्चे हैं तो हमें मानना ही पड़ेगा कि हमारे मन के बुरे विचार ही हमसे बुरे काम कराते और बुरी बातें कहलवाते हैं। अपने पापों के लिये हम किसी दूसरे पर दोष नहीं डाल सकते हैं।

**तब शैतान कौन है?**

Then who is the devil?

यह सच है कि बाइबिल एक शैतान के बारे में बताती है। यदि वह कोई दिव्‍य प्राणी नहीं है जो मनुष्यों को बुराई करने के लिये प्रलोभन देता है, तो हमें अवश्य यह प्रश्‍न पूछना चाहिये कि, “वह कौन है?”

आइये देखें कि क्‍या इस प्रश्‍न का उत्‍तर हम बाईबल में पाते है। सबसे पहले 1 यूहन्ना 3:8 को देखें। यह पद हमें बताता हैं कि यीशु मसीह को क्यों भेजा गया।

*‘परमेश्वर का पुत्र इसलिये प्रगट हुआ कि शैतान के कामों का नाश करे।’* (1 यूहन्ना 3:8)

यही विचार इब्रानियों में कुछ और आगे बढ़ाया जाता हैं जहां हम पढ़ते हैं,

*‘इसलिये जब कि लड़के मांस और लहू के भागी हैं, तो वह आप भी उनके समान उनका सहभागी हो गया, ताकि मृत्यु के द्वारा उसे जिसे मृत्यु पर शक्ति मिली थी, अर्थात्‍ शैतान को निकम्मा कर दे।’* (इब्रानियों 2:14)

यह दूसरा पद हमें बताता है कि यीशु शैतान को नाश करने के लिये आया और समझाता है कि किस तरह उसने (यीशु ने) उसे (शैतान को) नाश किया। वह एक कमजोर मनुष्य के रूप में आया और शैतान को नाश करने के लिये मरा।

कितनी विचित्र बात है! यदि शैतान एक बहुत ही शक्तिशाली और धोखेबाज राक्षस (दानव, पिशाच) होता; तो उसे इस तरह नाश करना असम्भव होता। जी नहीं; ऐसा नही है, क्‍योंकि बाइबिल में वर्णित शैतान जिसे यीशु ने क्रूस पर अपनी जान देकर नाश किया वह शैतान पाप था।

*‘अब युग के अन्‍त में वह एक ही बार प्रगट हुआ है, ताकि अपने ही बलिदान के द्वारा पाप को दूर कर दे।’* (इब्रानियों 9:26)

पहले एक अध्‍याय (क्रूस) में हमने इस पर अध्‍ययन किया कि यीशु की प्रकृति हमारे समान थी। यह प्रकृति ऐसी थी कि जो पाप के द्वारा प्रलोभित हो सकती थी।यीशु ने अपने जीवन भर पाप से लडाई की और अन्त में उस प्रकृति को ही नाश कर डाला जो परीक्षा में डाली जा सकती थी और ऐसा करके पाप को पूरी तरह से नाश कर दिया। यही कारण था कि परमेश्वर ने यीशु को मृतकों में से जी उठाया और उन्‍हें एक तेजस्वी शरीर दिया जो पाप से मुक्त और अमर है।

**शैतान और पाप**

The devil and sin

यह बताने के लिये, कि पाप और शैतान दोनों एक ही है, एक सरल तरीका हैं। जो कुछ भी बाइबिल शैतान के बारे कहती है वही पाप के बारे कहती है।

* शैतान परमेश्वर का शत्रु है – वैसे ही पाप है।
* शैतान मनुष्य को परीक्षा में डालनेवाला है – वैसे ही पाप है।
* शैतान कपटी है – वैसे ही पाप है।
* शैतान मृत्यु का कारण है (इब्रानियों 2:14) – पाप भी है।
* यीशु की मृत्यु के द्वारा शैतान नाश कर दिया गया – पाप का भी नाश हो गया।

इन तुलनाओं से हम जान सकते हैं कि शैतान और पाप निसन्देह एक ही चीज हैं।

**वास्‍तव में "शैतान" शब्‍द का क्‍या अर्थ है?What does the word "devil"really mean?**

"शैतान" शब्‍द का वास्‍तविक अर्थ है झूठा दोष लगाने वाला या निन्‍दक। 1तिमुथियुस 3:11 में हम पढ़ते है कि,"इसी प्रकार से स्त्रियों को भी गम्‍भीर होना चाहिए; दोष लगानेवाली न हों" (1तीमुथियुस 3:11)

यहां जिस शब्‍द का अनुवाद "दोष लगाने वाली" है बिल्‍कुल इसी शब्‍द का अनुवाद दूसरी जगहों पर "शैतान" है।

नये नियम में भी "शैतान" शब्‍द का प्रयोग हुआ है।

"शैतान" एक विरोधी है – वो जो विरोध करता है। इसलिए जब पतरस ने जब यीशु को यह समझाने का प्रयास किया कि उसको उस मार्ग पर नही चलना चाहिए जिस पर चलने के लिए परमेश्‍वर ने यीशु को कहा अर्थात क्रूस का मार्ग, तो ऐसा करके पतरस एक विरोधी हो गया और तब यीशु ने पतरस को कहा कि,

"हे शैतान, मेरे सामने से दूर हो!" (मत्‍ती 16:23)

पुराने नियम का एक और पद है जिसे हमें अब देखना चाहिए क्‍योंकि कुछ लोग ऐसा सोचते है कि य‍ह पद बताता है कि शैतान एक गिराया गया स्‍वर्गदूत है। यह पद यशायाह 14:12 है :"हे भोर के चमकने वाले तारे, तू कैसे आकाश से गिर पड़ा!" (यशायाह 14:12)

लेकिन यदि हम पूरे अध्‍याय को ध्‍यानपूर्वक पढ़े तो हम पाते है कि यह "भोर का चमकने वाला तारा" बाबुल का राजा है और भविष्‍यद्वक्‍ता उसके पतन की भविष्‍यवाणी कर रहा है। 15वें पद में यशायाह इस राजा की मृत्‍यु के विषय में बताता है और पद 16 में बताता है कि,"क्‍या यह वही पुरूष है जो पृथ्‍वी को चैन से रहने न देता था?"

**दुष्ट – आत्माओं का निकालना**

Casting out devils

नए नियम के लेखक जब हमें यीशु द्वारा किये गए चगाई के आश्चर्य कर्मों को बताते हैं तो वे बहुधा “उसने दुष्ट आत्माओं को निकाला” वाक्यशैली का प्रयोग करते हैं। हम इसे किस तरह समझें?

यीशु के दिनों में सधारणताः यह सोचा जाता था कि कुछ रोग और विपत्ति भी जैसे कि बहिरापन और अन्धापन दुष्ट आत्माओं के कार्य थे जो एक आदमी को अपने वशीभूत कर लेते थे। जब कोई चंगा हो जाता था तो यह कहना स्वाभाविक था कि “शैतान उसमें से निकल गया है।” सुसमाचार के लेखक इस वाक्यशैली को प्रयोग में लाते थे क्योंकि यह वाक्यशैली उन दिनों में प्रचलित थी। हम नहीं सोचते हैं कि चूंकि उन्होंने इस तरह लिखा जैसा कि वे यथार्थ में विश्वास करते थे कि दुष्ट आत्माए आदमियों में रहती थी।

**एक महान सृजनहार**

The one great Creator

यह विश्‍वास नया नही है कि एक दुष्ट दिव्‍य प्राणी है जो परमेश्वर का प्रतिद्वन्ती है। यशायाह भविष्यद्वक्ता के दिनों में फारसी दो महान शक्तियों में विश्वास करते थे – परमेश्वर और शैतान। यह माना जाता था कि पहला प्रकाश और अच्‍छाई का सृजनहार था और दूसरा अधंकार और सब दुष्टता का सृजनहार था।

लोगों का जो यह गलत विश्‍वास था उसको उत्‍तर देने के लिए परमेश्‍वर ने परमेश्वर ने यशायाह भविष्यद्वक्ता द्वारा एक संदेश भेजा। हम इसे यशायाह में पढ़ सकते है,

*‘मैं यहोवा हूँ और दूसरा कोई नहीं, मुझे छोड़ कोई परमेश्वर नहीं; यद्यपि तू मुझे नहीं जानता, तौभी मैं तेरी कमर कसूँगा, जिससे उदयाचल से लेकर अस्ताचल तक लोग जान लें कि मुझ बिना कोई है ही नहीं; मैं यहोवा हूँ और दूसरा कोई नहीं है। मैं उजियाले का बनानेवाला और अन्धियारे का सृजनहार हूँ, मैं शान्ति का दाता और विपत्ति को रचता हूँ, मैं यहोवा ही इन सभों का कर्त्ता हूँ।’* (यशायाह 45:5-7)

यहां विपत्ति शब्द का अर्थ है विपत्ति जो परमेश्वर पापियों पर लाता है।

ऊपर लिखित अंश यह सिद्ध करता है कि सम्पूर्ण जगत में एक महान शक्ति है जिसने सब वस्तुओं का निर्माण किया – एक महान सृजनहार सर्वशक्ति-शाली परमेश्वर। ऐसा कोई प्राणी नही है जो उसकी शक्ति (सामर्थ्य) को चुनौती दे सकें।और शैतान नामक कोई शक्तिशाली और कपटी दैत्‍य नहीं है जो उसका विरोध करने का साहस कर सके।

एक आखिरी प्रश्‍न जो हो सकता है कि आप पूछना चाहे कि तो फिर क्‍यों बाईबल पाप ना कहकर "शैतान" शब्‍द प्रयोग करती है। और क्‍यों यह इस शैतान का वर्णन ऐसे करती है कि मानो यह कोई सामर्थशाली और धोखादेने वाला व्‍यक्तित्‍व है? निश्‍चय ही ऐसा इसलिए है जिससे कि हम समझ सके कि पाप कितना सामर्थशाली और धोखा देने वाला है। इससे पहले कि हम इस बात को समझे कि हमें पाप से बचने कि कितनी अधिक आवश्‍यकता है हम पाप के विषय में ये बात समझना जरूरी है।

**हमनें क्या सीखा है**

What we have learnt

1. शैतान एक बड़ी दुष्ट आत्मा नही है।
2. जिसे हम मनुष्य की “प्रकृति” कहते है, उसके लिये बाइबिल में शैतान नाम दिया गया है।
3. हमारी पापमय मानवीय प्रकृति के द्वारा ही हम परीक्षा में पडते है।
4. वे व्यक्ति जो परीक्षा में गिर कर दुष्ट आचरण करते है उनको भी शैतान कहा गया है।

*क्रिस्टडेलफियन बाइबिल पत्राचार पाठ्यक्रम अध्याय 20*

# 20. बपतिस्मा

20. Baptism

साप्‍ताहिक पाठ– निर्गमन, अध्याय 27-32; मत्ती, अध्याय 5-7

प्रश्‍नोत्‍तर के लिए पाठ– प्रेरितों के काम अध्याय 8; रोमियों 6

**एक नयी शुरूआत**

A new start

क्या अपने कभी एक छोटे बच्चे को देखा है कि जब वह अपनी लिखने की पुस्तक में एक नया पन्ना खोलता है? नया पन्ना इतना साफ दिखता है कि लिखते समय वह विशेष ध्यान देता है कि कही वह पन्ना खराब न हो जाये और वह लिखने की एक नयी शुरूआत करता है।

जब हम इस बात को समझने लगते हैं कि यीशु ने हमारे लिये कितना अधिक किया, तो हमें अपने जीवन में हम एक नया पन्‍ना पलटकर खोलना चाहिए और एक नयी शुरूआत करनी चाहिये। हममें यीशु मसीह के पीछे चलने की इच्‍छा होनी चाहिये।

**परमेश्वर का तरीका**

God’s way

मत्ती 28 में हम पढ़ते हैं कि स्वर्गारोहण से पहले यीशु ने अपने शिष्यों से कहा,

*‘इसलिये तुम जाओ, सब जातियों के लोगों को चेला बनाओ; और उन्‍हें पिता, और पुत्र, और पवित्र आत्मा के नाम से बपतिस्मा दो,* *और उन्‍हें सब बातें जो मैं ने तुम्हें आज्ञा दी है, मानना सिखाओ।’* (मत्ती 28:19-20)

इस पदों को ध्यानपूर्वक पढ़िये। आप देखेंगे कि जब उन्‍होंने चेले बनाए तो उनको उन्‍हें बपतिस्मा देना था। बपतिस्मा परमेश्‍वर के द्वारा हमारे लिए चुना गया एक ऐसा तरीका है जिसके द्वारा हम एक नयी शुरूआत कर सकते है।

जब हम परमेश्‍वर की इस आज्ञा का पालन करते हैं तो परमेश्वर हमारे पिछले पापों को क्षमा कर देता है। स्‍वंय यीशु मसीह ने, जिन्‍होंने कभी पाप नही किया, बपतिस्‍मा लेकर हमारे लिए एक उदाहरण प्रस्‍तुत किया। मत्ती 3:13-17 में पढ़िये कि कैसे यीशु यरदन नदी के किनारे पर आये और कैसे उसके मोसेरे भाई यूहन्ना ने उन्‍हें वहां बपतिस्मा दिया।

क्या आपने ध्यान दिया जब यूहन्ना ने यीशु से कहा कि वह उसे बपतिस्मा देने के अयोग्य है। यीशु ने उससे कहा,

*‘अब तो ऐसा ही होने दे, क्‍योंकि हमें इसी रीति से सब धामिर्कता को पूरा करना उचित है।’* (मत्ती 3:15)

यीशु ने यह नहीं कहा कि ‘मुझे’ उन्‍होंने कहा कि ‘हमें’ यह स्पष्ट करने के लिये कि हम सभी को भी बपतिस्मा लेना जरुरी है। यह उद्धार के लिये अति आवश्यक है।

**पानी में गाड़े जाना**

Burial in water

बपतिस्मा का अर्थ है पानी के नीचे (तले) पूरी तरह गाड़े जाना। यह ऐसा है मानो कि जब हम पानी के तले जाते है तो हम मर जाते हैं और जब हम फिर पानी से बाहर निकलते है तो हम एक नया जीवन शुरु करने के लिये जी उठते है। इस प्रकार से हम मसीह यीशु के साथ मर जाते हैं और फिर उसके साथ जी उठते है। रोमियों के जिस अध्याय को आपने पढ़ा है उसमें पौलुस यह बात बताता है:

*‘क्‍या तुम नहीं जानते कि हम सब जिन्होंने मसीह यीशु का बपतिस्मा लिया, उसकी मृत्यु का बपतिस्मा लिया। अतः उस मृत्यु का बपतिस्मा पाने से हम उसके साथ गाड़े गए, ताकि जैसे मसीह पिता की महिमा के द्वारा मरे हुओं में से जिलाया गया, वैसे ही हम भी नए जीवन की सी चाल चलें।’* (रोमियों 6:3-4)

**नामकरण और बपतिस्मा**

Christening and baptism

शायद आपने शिशुओं के बपतिस्में या नामकरण के बारे में सुना होगा कि उनके माथे पर पानी छिड़का जाता हैं। परन्तु यह सचमुच में बपतिस्मा नहीं हैं। आपको याद हैं यीशु ने कहा जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा (मरकुस 16:16)। पहिले हमें समझना और विश्वास करना चाहिये। एक शिशु यह नहीं कर सकता हैं।

पानी छिड़क कर बपतिस्‍मा देना, पानी में गाडे जाने और उसमें से फिर बाहर ऊपर आने के समान नहीं हैं। पानी के छिडकाव का बपतिस्मा हमें प्रभु यीशु की मृत्यु और पुनरुत्थान को उस तरह से याद नहीं दिलाता हैं जैसा कि डुबकी का बपतिस्मा।

**एक मनुष्य जिसने विश्वास किया और इसे बपतिस्मा दिया गया**

A man who believed and was baptised

प्रेरितों के काम आठवें अध्याय में आप देखेंगे कि खोजे ने जो कूश देश की रानी का दास था कहा

*‘देख यहाँ जल है, अब मुझे बपतिस्मा लेने में क्या रोक है।’* (प्रेरितों के काम 8:36)

एक शर्त थी। फिलिप्पुस ने उससे कहा,

*‘यदि तू सारे मन से विश्वास करता है तो ले सकता है।’* (प्रेरितों के काम 8:37)

आप यह भी देखेंगे कि *‘दोनों जल में उतर पड़े’* (पद 38)। ऐसा करना आवश्यक था क्योंकि फिलिप्पुस खोजे को पानी के तले पूरी तरह गाड़कर (डुबाकर) बपतिस्मा देने जा रहा था और यह तभी सम्‍भव था जब उनके पास ऐसा करने के लिए पर्याप्‍त पानी हो।

**एक बड़ा निर्णय**

A big decision

बपतिस्में के विषय में एक और महत्वपूर्ण पद है:

*‘परन्‍तु जब उन्‍होंने फिलिप्‍पुस का विश्वास किया जो परमेश्वर के राज्य और यीशु के नाम का सुसमाचार सुनाता था तो लोग, क्‍या पुरूष, क्‍या स्त्री बपतिस्मा लेने लगे।’* (प्रेरितों के काम 8:12)

इस पद से हम सीखते हैं कि लोगों को, जब तक वे तैयार न हो, जल्दीबाजी में बपतिस्मा नहीं लेना चाहिये। सामरिया के पुरुषों और स्त्रियों को बपतिस्मा नहीं दिया गया जब तक उन्होंने परमेश्वर के राज्य और यीशु के सुसमाचार की बातों पर विश्वास नहीं किया।

बपतिस्मा लेने का निर्णय जीवन का सबसे महत्त्वपूर्ण निर्णय है। यह एक ऐसा निर्णय नहीं हैं जो हल्के तौर से किया जाए। बपतिस्‍मा लेने से पहले बाईबल की सच्‍ची शिक्षाओं को समझना और उन पर विश्‍वास करना अति आवश्‍यक है।बपतिस्में के बाद परीक्षाओं से लड़ना आवश्‍यक है और हमेशा परमेश्वर की आज्ञाओं को मानने की कोशिश करना आवश्यक हैं।

बाईबल की सच्‍ची शिक्षाओं पर विश्‍वास करना और उसके बाद परमेश्‍वर की आज्ञाओं का पालन करना, इन चीजो के बिना बपतिस्मा व्यर्थ हैं।

**परमेश्‍वर की सन्तान**

Children of God

हम आदम की सन्तान के रूप में पैदा होते है। परन्तु जब हम बपतिस्मा ले लेते हैं तो हम परमेश्वर के परिवार का हिस्‍सा बन जाते है और हम परमेश्वर की सन्तान बन जाते है। हर एक पुरुष और स्त्री आदम की सन्तान है और बाईबल उनके विषय में कहती है कि वे "आदम में" है।

जब हम बपतिस्मा ले लेते हैं तो हम मसीह को पहिन लेते हैं और मसीह में कहलाते हैं। पौलुस गलातियों 3 पद 26-27 में हमें बताता है,

*‘क्‍योंकि तुम सब उस विश्वास के द्वारा जो मसीह यीशु पर है, परमेश्वर की सन्‍तान हो। और तुम में से जितनों ने मसीह में बपतिस्मा लिया है उन्‍होंने मसीह को पहिन लिया है।’* (गलातियों 3:26-27)

हमें जीवन की एक नई आशा है क्योंकि 1 कुरिन्थियों 15 में हम पढ़ते हैं,

*‘और जैसे आदम में सब मरते हैं, वैसे ही मसीह में सब जिलाए जाएँगे।’* (1 कुरिन्थियों 15:22)

**मसीह हमारा बिचवई (मध्यस्थ)**

Christ our mediator

बपतिस्में के बाद हम एक नये जीवन का आरम्भ करते है। परन्तु पाप किये बिना हम नहीं रहते है। तो ऐसे में बपतिस्मा लेने के बाद यदि हम पाप करते है तो क्या होता है?

क्योंकि हम “मसीह में” हैं तो ऐसी परिस्थिति में यीशु मसीह हमारा बिचवई (मध्यस्थ) है और वे परमेश्वर से हमारे लिये प्रार्थना करते है। यदि हम अपने पापों के लिये सचमुच में पश्‍चाताप करते है तो निश्चिय ही परमेश्‍वर हमारे लिए यीशु मसीह की प्रार्थनाओं को सुनेगा और यीशु मसीह के कारण हमारे पापों को क्षमा कर देगा। प्रेरित यूहन्ना लिखता है,

*‘यदि कोई पाप करे, तो पिता के पास हमारा एक सहायक है, अर्थात्‍ धर्मी यीशु मसीह।’* (1 यूहन्ना 2:1)

**सारांश**

Summary

1. परमेश्वर ने हमें बपतिस्मा लेने की आज्ञा दी है।
2. बपतिस्मा पानी में पूरी तरह गाड़े (डुबाए) जाना है।
3. बपतिस्मा विश्‍वास के बाद होना जरुरी है, इसलिए बपतिस्मा बालिगों के लिये है, शिशुओं के लिये नहीं।
4. बपतिस्‍मा इस बात का संकेत है कि हम मसीह के साथ मरते हैं और पानी से बाहर ऊपर आकर एक नया जीवन प्राप्त करते हैं।
5. जब हम बपतिस्मा ले लेते है तो हम परमेश्वर की सन्तान बन जाते हैं, और इसके बाद बाइबिल हमें “मसीह में” बताती है।

*क्रिस्टडेलफियन बाइबिल पत्राचार पाठ्यक्रम अध्याय 21*

# 21. कुछ व्यवहारिक समस्‍यायें

21. Some practical problems

साप्‍ताहिक पाठ– निर्गमन, अध्याय 37-40; प्रकाशितवाक्य, अध्याय 20

प्रश्‍नोत्‍तर के लिए पाठ– रोमियों, अध्याय 12-13

यीशु ने अपने अनुयायीयों से कहा, *‘यदि तुम मुझ से प्रेम रखते हो, तो मेरी आज्ञाओं को मानोगे’* (यूहन्ना 14:15)

आपको याद होगा किस तरह परमेश्वर ने मूसा द्वारा यहुदियों को व्यवस्था दी जिसे हम मूसा की व्यवस्था, कहते है। मूसा की व्यवस्था में नियम थे जो लोगों को बताते थे कि उन्‍हें क्या करना है और क्या नहीं करना है। ये नियम उनके दैनिक जीवन के प्रत्‍येक कार्य में उनके मार्गदर्शक थे।

यह व्यवस्था लोगों को जीवन नहीं दे सकी क्योंकि जैसा आपको याद होगा वे व्यवस्था को मानने में असमर्थ रहे। इसलिये परमेश्वर ने उन्हें एक “अच्छा मार्ग” दिया। परमेश्‍वर ने हमें दिखाने के लिये कि हम किस तरह से जीवन जीये उसने अपने पुत्र यीशु मसीह को भेजा।यीशु ने अपने अनुचरों को नियमों की कोई पूरी सूची नही दी जो उन्हे बता सके कि जीवन की हर परिस्थिती में उन्हें क्या करना चाहिये।

उन्‍होंने उनसे कहा कि सबसे मुख्य बात परमेश्वर को प्रेम करना और एक दूसरे से प्रेम रखना है। परन्तु यीशु और प्रेरितों दोनो ने ही कुछ आज्ञाऐं दी कि हमें क्‍या करना चाहिये औरक्‍या नही और जिनको समझना और पालन करना अति आवश्यक है।

**हमें अपने (अधिकारियों) की आज्ञाओं का पालन करना जरुरी है**

We must obey our rulers

रोमियों 13 में हम पढ़ते हैं

*‘हर एक व्यक्ति शासकीय अधिकारियों के अधीन रहे।’* (रोमियों 13:1)

हमारा कोई भी अधिकारी (हाकिम) क्यों न हो उसे वह पद इसलिये प्राप्त हैं क्योंकि परमेश्वर से उसे उस पद पर होने की अनुमति हैं (1 पतरस 2:13-15)। यह बात उनके लिये भी लागू हैं जो नौकरी में हमारे अधिकारी (अफसर) हैं। इसलिये हमें उनके हुक्मों (आदेशों) को मानना जरुरी है जिनका हमारे पर अधिकार है चाहे वे निर्दयी और तर्कहीन क्यों न हों। इस हेतु पतरस हमसे कहता है,

*‘हे सेवको, हर प्रकार के भय के साथ अपने स्‍वामियों के अधीन रहो, न केवल उनके जो भले और नम्र हों पर उनके भी जो कुटिल हों।’* (1 पतरस 2:18)

केवल उस समय यह बात लागू नहीं होती है जब एक हाकिम हमें परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध काम करने को कहता है। एक समय जब यहुदियों ने पतरस और यूहन्ना को यीशु और उसके पुनरुत्थान के विषय में प्रचार करने को मना किया, उन्होंने उत्तर दिया,

*‘तुम ही न्याय करो; क्‍या यह परमेश्वर के निकट भला है कि हम परमेश्वर की बात से बढ़कर तुम्हारी बात मानें। क्‍योंकि यह तो हम से हो नहीं सकता कि जो हम ने देखा और सुना है, वह न कहें।’* (प्रेरितों के काम 4:19-20)

यीशु ने स्वंय उनके लिये प्रार्थना की जिन्होंने उनको मारा था। यदि हम उनके उदाहरण को याद रखे तो हमें बुराई के बदले भलाई करने में सहायता मिलेगी। बुरे लोगों को दण्ड देने का काम हमें परमेश्वर के हाथ में छोड देना चाहिये। इस बारे में पौलुस प्रेरित कहता है,

*‘हे प्रियो, बदला न लेना; परन्‍तु परमेश्वर के क्रोध को अवसर दो, क्‍योंकि लिखा है, “बदला लेना मेरा काम है, प्रभु कहता है मैं ही बदला दूँगा।”’* (रोमियों 12:19)

**शिष्य लड़ाई में भाग नहीं लेता है**

The disciple does not fight

हमें सब बातों में हाकिमों के हुक्मों को मानना चाहिये केवल उस समय को छोड़ जब उनके नियम परमेश्वर की आज्ञा का विरोध करते हैं। उदाहरण के लिये आजकल अधिकांश देशों में कानून हैं जिनके अन्तर्गत सब युवको को थल, जल या वायु सेना में कुछ अवधि के लिये काम करना (जरुरी) है परन्तु परमेश्वर ने कहा है कि उसकी सन्तान को लड़ाई में भाग नहीं लेना चाहिये। यीशु ने कहा,

*‘...जो तलवार चलाते हैं वे सब तलवार से नष्ट किए जाएँगे।’* (मत्ती 26:52)

उसने अपने अनुयायियों को अपने बैरियों के लिये प्रार्थना करना सिखाया और उनके प्रति प्रेम दिखाने को कहा चाहे उनके काम कितने भी क्रोध क्यों न दिलाए;

*‘परन्‍तु मैं तुम से यह कहता हूँ कि बुरे का सामना न करना; परन्‍तु जो कोई तेरे दाहिने गाल पर थप्‍पड़ मारे, उसकी ओर दूसरा भी फेर दे।’* (मत्ती 5:39)

इसलिये चाहे विपत्ति आये और कैद की सजा भी दी जाए। एक मसीह को लड़ाई में भाग लेने और सेना में भरती होने से हमेशा इन्कार करना चाहिये। यह इसलिये नहीं क्योंकि युद्ध हमेशा अनुचीत है; जब परमेश्वर मनुष्यों को लडाई में भाग लेने के लिये आज्ञा देता है, तब भाग लेना ठीक है। परन्तु इस युग में हमारे लिये उसकी आज्ञा है कि हम *‘बुरे का सामना न करे’* यह जानते हुए कि वह दिन आएगा जब परमेश्वर खुद दुष्टों (कुकर्मियों) का न्याय करेगा।

**मतदान**

Voting

सब बीते युगों में परमेश्वर की सन्तान की भांति आज के मसीही भी, *‘पृथ्वी पर परदेशी और बाहरी हैं।’* (इब्रानियों 11:13)

वे सब परमेश्वर के राज्य के आने की बाट जोह रहे हैं यह प्रार्थना कर रहे है कि उस राज्य में उन्हे भी स्थान मिलें।

वे जानते हैं कि जब वह राज्य आएगा, आजकल की सरकारें जाती रहेंगी, वे इस संसार की राजनीति में कोई भाग नहीं लेते हैं। वे मतदान नहीं करते हैं क्योंकि जीवन के प्रति उनके विचार ऐसे हैं कि कोई भी राजनीतिज्ञ उनका “प्रतिनिधी” नहीं हो सकता है।

*‘पर हमारा स्‍वदेश स्‍वर्ग पर है; और हम एक उद्धारकर्ता प्रभु यीशु मसीह के वहाँ से आने की बाट जोह रहे हैं।’* (फिलिप्पियों 3:20)

**विवाह – मसीह में सहभागीता**

Marriage – a partnership in Christ

संसार में दो तरह के लोग हैं वे जो “आदम में” और वे जो “मसीह में” है। इन दोनों में बड़ा अन्तर है।

जो आदम में है वे स्वार्थी और संसारिक है; जो मसीह में है वे परमेश्वर के सेवक हैं। स्वभाव से जो मसीह में हैं वे एकता की महान भावना को महसूस करेंगे और ईमानदारी से परमेश्वर की सेवा करने में एक दूसरे की सहायता करेंगे। वे संसार के लोगों में नही मिल जाएगें, क्योंकि उनकी अभिलाषायें बिल्कुल भिन्‍न है।

इन सब के अतिरिक्‍त वे दिखायेंगे कि विवाह के लिये उनकी धारण संसार से किस तरह भिन्न हैं। वे अपनी भावी जीवन साथी को परमेश्वर के परिवार से चुनते है इस संसार के परिवार से नही। पौलुस प्रेरित 2 कुरिन्थियों में इस धारणा की भिन्‍नता के महत्व पर जोर डालता है।

*‘अविश्वासियों के साथ असमान जूए में न जुतो, क्‍योंकि धार्मिकता और अधर्म का क्‍या मेल-जोल? या ज्योति और अन्‍धकार की क्‍या संगति? और मसीह का बलियाल के साथ क्‍या लगाव? या विश्वासी के साथ अविश्वासी का क्‍या नाता? और मूर्तियों के साथ परमेश्वर के मन्‍दिर का क्‍या सम्बन्‍ध? क्‍योंकि हम तो जीवते परमेश्वर का मन्‍दिर हैं; जैसा परमेश्वर ने कहा है, “मैं उनमें बसूँगा और उनमें चला फिरा करूँगा; और मैं उनका परमेश्वर हूँगा, और वे मेरे लोग होंगे।”’* (2 कुरिन्थियों 6:14-16)

यदि हम परमेश्वर की आज्ञाओं का उल्लंघन करते हैं तो हम कभी भी सचमुच में सुखी नहीं हो सकते है अनुभव यह दिखाते है कि एक अविश्वासों से विवाह करना बहुत बड़ी गलती है।

**परमेश्वर जीवन साथी को छोड़ने से घृणा करते है**

God hates ‘putting away’

विवाह जीवन भर का संयोग है। जब यहोवा परमेश्वर ने हव्वा को आदम के लिये सहायक बनाया, तो यह नियम बन गया कि

*‘इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक तन बनें रहेंगे।’* (उत्पत्ति 2:24)

यीशु मसीह ने भी इस बात को निश्चित किया कि विवाह पूरे जीवनभर का साथ है – इसको प्रभु यीशु ने यह कहकर दृढ कर दिया,

*‘अतः वे अब दो नहीं, परन्तु एक तन हैं। इसलिये जिसे परमेश्वर ने जोड़ा हैं, उसे मनुष्य अलग न करे।’* (मत्ती 19:6)

इसलिये प्रभु यीशु ने तलाक की मनाई की है। यदि दम्पत्ति का वैवाहिक जीवन कुछ समय के लिये शान्ति और सुख से नहीं बीत रहा है, तो ऐसे में एक मसीही को लिये धीरज और प्रेम दिखाना जरुरी है। मलाकी 2 में हम पढ़ते हैं,

*‘...इस्राएल का परमेश्वर यहोवा यह कहता है, “मैं स्त्री-त्याग से घृणा करता हूँ।”’* (मालकी 2:16)

याद रखिये यदि हम परमेश्वर की आज्ञाओं को नही मानते है तो हम कभी सचमुच में सुखी नहीं हो सकते हैं।

**परन्तु...**

But…

हमने एक विश्वासी से ही विवाह करने के महत्‍व के विषय में बातें की। परन्तु कभी ऐसा भी होता है कि वह पुरुष या स्त्री जो मसीह के चेले बनते है वे पहिले से ही शादी शुदा होते है। ऐसी हालत में दोनों में जो विश्वासी है उसे दूसरे को छोड़ने के लिये नहीं कहा जाता है। हालांकि ऐसी स्थिति में यदि अविश्वासी साथी अलग होना चाहता है तो उसको रोकना कठित होगा। परन्तु विश्‍वासी से यह आशा की जाती है कि वह अपनी और से सच्चाई के साथ वैवाहिक जीवन को सफल बनाने में भरसक प्रयास करें।

बहुत से विश्वासी पति या पत्नी के विश्वासनीय उदाहरण द्वारा कई अविश्वासी पति या पत्नी मसीह के लिये जीते जा चुके हैं जैसा कि पौलुस ने 1 कुरिन्थियों में बताता है।

*‘क्‍योंकि हे स्त्री, तू क्‍या जानती है कि तू अपने पति का उद्धार करा लेगी? और हे पुरूष, तू क्‍या जानता है कि तू अपनी पत्‍नी का उद्धार करा लेगा?’* (1 कुरिन्थियों 7:16)

**बहुविवाह प्रथा के लिए एक शब्द**

A word about polygamy

कुछ देशों में एक आदमी को एक ही समय में दो या अधिक पत्नीया रखने की अनुमति है। अविश्वासी से शादी करनें और तलाक देने के समान ही यह भी एक बड़ी गलती है। इससे अप्रसन्‍नता पैदा होती है और अविश्‍वास को बढावा मिलता है; और यह मसीहियों के उस महान आर्दश को, जिसमें एक पति और एक पत्नि अटूट प्रेम के बन्‍धन में बंधे होते है, ठुकराती है:

*‘इस कारण पुरुष अपने माता-पिता को छोड़कर अपनी पत्नी से मिला रहेगा, और वे एक तन बनें रहेंगे।’* (उत्पत्ति 2:24)

**मसीह में सब एक**

All one in Christ

सब विश्वासी एक दूसरे से जुड़कर एक देह हैं जिसका सिर मसीह हैं। यह उनका कर्तव्‍य है कि वे बाईबल के द्वारा प्रकट सच्‍चाई को शुद्ध रखे; और इसमें न कुछ जोड़े और न घटाये।उनका यह भी कर्तव्‍य है कि मसीह की वे मसीह की आज्ञाओं को मानने का भरसक प्रयत्न करें।

यदि एक सदस्य जानबूझकर इन आज्ञाओं का उल्लघंन करता हैं तब दूसरे सदस्य जितना उनसे बन सके उसे अपनी गल्ती देखने और सही मार्ग पर वापस आने के लिये उसकी सहायता करें। यदि वह तब भी गलत काम करते ही रहना चाहता है, तो उसके विश्‍वासी भाईयों को उससे अलग होने के अलावा और कोई रास्‍ता नही बचता।

**मसीह में संगति**

Fellowship in Christ

मसीह के चेले संसार भर में फैले हैं परन्तु वे एक ही स्वामी की सेवा करते हैं और उनकी एक ही आशा हैं। वे प्रेम और संगति के बन्धनों में बन्धे है – सुसमाचार प्रचार कार्य में जुड़े हुए हैं।

इसलिये पौलुस हमें आज्ञा देता है,

*‘सब काम बिना कुड़कुड़ाए और बिना विवाद के किया करो, ताकि तुम निर्दोष और भोले होकर टेढ़े और हठीले लोगों के बीच परमेश्वर के निष्‍कलंक सन्‍तान बने रहो, जिनके बीच में तुम जीवन का वचन लिए हुए जगत में जलते दीपकों के समान दिखाई देते हो कि मसीह के दिन मुझे घमण्‍ड करने का कारण हो कि न मेरा दौड़ना और न मेरा परिश्रम करना व्यर्थ हुआ।’* (फिलिप्पियों 2:14-16)

**सारांश**

Summary

1. हमें अपने अधिकारियों के आज्ञाकारी रहना जरुरी है केवल उस समय को छोड़कर जब वे हमें परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध काम करने को कहते हैं।
2. हमें राजनीती में और युद्ध में तनिक भी भाग नही लेना चाहिये।
3. एक पुरुष की एक ही पत्नी होनी चाहिये और जीवन भर उसी के साथ रहना चाहिये।
4. एक अविश्वासी से विवाह करना एक बड़ी गलती है।

*क्रिस्टडेलफियन बाइबिल पत्राचार पाठ्यक्रम*

### प्रश्नपत्र नं. 7 - पाठ 19 से 21

Long format questions – Lessons 19-21

**उन्नीसवें पाठ पर प्रश्न**

1. बाइबिल बताती है कि अपनी मृत्यु द्वारा यीशु ने शैतान के कामों का नाश किया (1 यूहन्ना 3:8) आप क्या सोचते हैं इसका क्या अर्थ है?
2. वह क्या हैं जो हमें पाप करने के लिए आग्रह करते हैं? (पाप करने का मूल कारण क्या है?)
3. शैतान शब्द का क्या अर्थ है?

**बीसवें पाठ पर प्रश्न**

1. एक पद को लिखो जो बताता है कि हम सब को बपतिस्मा लेना जरुरी है।
2. बपतिस्मा जिसके बारे में बाइबिल कहती है किस तरह से “नामकारण” (या पानी के छिड़काव) से भिन्न है?
3. कैसे बपतिस्मा हमें एक नया आरम्भ देता है?

**इक्कीसवें पाठ पर प्रश्न**

1. उन पदों को लिखो जो बताते हैं कि प्रधान अधिकारियों के प्रति और उस व्‍यक्ति के प्रति जो हमारा स्‍वामी है, हमारा व्यवहार कैसा होना चाहिए।
2. किन परिस्थितियों में एक मसीही को अपने देश के कानूनों को न मानने के लिए बाध्य होना पड़ेगा?
3. मसीह के एक शिष्‍य को किसी अविश्‍वासी से विवाह करना क्यों गलत है?

धन्यवाद - हमारा पता:

क्रिस्टडेलफियन्‍स, पी. ओ. बॉक्स 50, गाजियाबाद - 201001, उत्तर प्रदेश

The Christadelphians, P.O. Box 50, Ghaziabad, 201001, U.P.

*क्रिस्टडेलफियन बाइबिल पत्राचार पाठ्यक्रम अध्याय 22*

# 22. जीवन की नवीनता में चलना

22. Walking in newness of life

साप्‍ताहिक पाठ– भजन संहिता 119; फिलेमोन

प्रश्‍नोत्‍तर के लिए पाठ– इब्रानियों 12

जब हम बपतिस्मा लेते हैं तो हमारा फिर से जन्म होता है। नीकुदेमुस को, जो रात को उसके पास आया, यीशु ने कहा,

*‘यदि कोई नये सिरे से न जन्मे तो परमेश्वर का राज्य देख नहीं सकता।’* (यूहन्ना 3:3)

आगे चलकर यीशु समझाता है कि वह प्राकृतिक जन्म के विषय में नहीं परन्तु आत्मिक जन्म के विषय में सोच रहा है। वह कहता है

*‘जो शरीर से जन्मा है, वह शरीर है; और जो आत्मा से जन्मा है, वह आत्मा है।’* (यूहन्ना 3:6)

जब एक बच्चा पैदा होता है तो एक नया जीवन आरम्भ होता है उसी तरह जब हम बपतिस्मा लेते हैं, तो हम "मसीह में" एक नया जीवन आरम्भ करते हैं।

पौलुस प्रेरित हमें बताता है:

*‘यदि कोई मसीह में है तो वह नई सृष्‍टि है।’* (2 कुरिन्थियों 5:17)

यदि हमें यीशु मसीह में बढ़ना है, प्रौढ़ होना है, तो हमें निरन्तर उसके लिये प्रयत्न करते रहना है। यदि हम प्रयत्न न करते तो वह “पुराना मनुष्यत्व” जिसका बपतिस्मा लेने के द्वारा हमने त्याग किया फिर से हम पर कब्जा कर लेगा।

**मार्ग में सहायता**

Help in the way

यदि मसीह में बढने के लिए हमें अकेले ही परिश्रम करना पड़ता तो हम मसीह में कभी नहीं “बढ़ सकते”। परन्तु परमेश्वर ने हमें वह सब दिया है जो हमारी आत्मिक वृद्धि के लिये आवश्यक है।

उसने हमें प्रभु यीशु के द्वारा प्रार्थना में उसके पास आने का विशेष अधिकार दिया है। हम अपनी सब कठिनाईयां, अपने सुख और दुख, विश्वास और गुप्तरुप से उस तक ले जा सकते है; नम्रता पूर्वक उसके पास आकर सहायता मांग सकते है और यीशु के नाम से हमें सुनने की विनती कर सकते हैं।

उसने हमें अपना वचन – बाइबिल – दिया है। इससे बढकर हमारा और कोई मार्ग दर्शक नहीं हो सकता; यह हमें और अधिक परमेश्वर के प्रबन्ध और मर्गो के विषय में सिखाएगा; जैसा परमेश्‍वर हमसे चाहता है उसके अनुसार काय्र करने में यह हमारी सहायता करेगा और मसीह में नए मनुष्यत्व को प्राप्त करने में हमारी सहायता करेगा। 2 तीमुथियुस में हम पढ़ते हैं कि

*‘सम्पूर्ण पवित्रशास्‍त्र परमेश्वर की प्रेरणा से रचा गया है और उपदेश, और समझाने, और सुधारने, और धर्म की शिक्षा के लिये लाभदायक है, ताकि परमेश्वर का जन सिद्ध बने, और हर एक भले काम के लिये तत्‍पर हो जाए।’* (2 तीमुथियुस 3:16-17)

परमेश्‍वर ने हमें उसके वचन और उसकी विधियों के विषय में सोचने के लिये योग्‍यता दी है। नीतिवचन की पुस्तक के 23 अध्‍याय में लिखा है,

*‘जैसा वह अपने मन में विचार करता है, वैसा वह आप है।’* (नीतिवचन 23:7)

यदि हम अपने मनों को अधिकाधिक परमेश्वर की बातों पर लगाएं, हम धीरे धीरे अच्छे पुरुष और स्त्रियां बन जाएगे।

**विश्वास करना और विश्वास पर चलना**

Believing and doing

पढ़ने और प्रार्थना करने और मनन करने से हमें अच्‍छे काम करने में सहायता मिलती है। किसी ने एक समय यीशु से पूछा,

*‘व्यवस्था में कौन सी आज्ञा बड़ी है?’* (मत्ती 22:36)

यीशु के उत्तर को हम 37-39 पदों में पढ़ते हैं

*‘तू परमेश्वर अपने प्रभु से अपने सारे मन और अपने सारे प्राण और अपनी सारी बुद्धि के साथ प्रेम रख। बड़ी और मुख्य आज्ञा तो यही है। और उसी के समान यह दूसरी भी है कि तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।’* (मत्ती 22:37-39)

इन आज्ञाओं को मानना आसान नहीं है। हम परमेश्वर से अपने सारे मन, प्राण और बुद्धि के साथ तभी प्रेम रख सकेंगे यदि हम अपने आपको बार बार ये याद दिलाते रहें कि परमेश्वर ने हमसे कितना प्यार किया है और उसने हमारे लिये कितना काम किया है।

उसने हमारे लिये इतने बड़े बड़े काम किये है कि किस तरह हम उसका ऋण चुका सकते है? हम उसके लिये कुछ नहीं कर सकते हैं।

परन्तु हमारे लिये यीशु की दूसरी आज्ञा क्या है? *‘तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम रख।’* (मत्ती 22:39) यहाँ कुछ है जो हम कर सकते हैं। हम दूसरे लोगों की सहायता कर सकते हैं और उनके प्रति अपनी चिन्ता और प्रेम को प्रगट कर सकते हैं जैसे कि परमेश्वर ने प्रेम को हम पर प्रगट किया।

सबसे बड़ी बात जो हम दूसरों के लिये कर सकते हैं वह यह है कि उन तक हम परमेश्वर के राज्य के शुभ सन्देश को पहुंचाए जिस सभुसन्देश में हम स्वंय विश्वास करने लगे है। जैसे परमेश्वर ने हमें उसकी विधियां मानने और उसके राज्य के आनन्दों में भाग लेने का निमंत्रण दिया है, वैसे ही हमें भी दूसरो को उस आनन्द में भाग लेने के लिये जिसे हमने पा लिया है निमंत्रण देना जरुरी है।

यीशु ने एक समय कहा,

*‘इस कारण जो कुछ तुम चाहते हो कि मनुष्य तुम्हारे साथ करें, तुम भी उनके साथ वैसा ही करो।’* (मत्ती 7:12)

हमारे प्रेम के कार्य जो हम दूसरों के प्रति करते है उन्हें परमेश्वर ग्रहण करेगा मानो कि वे उसके प्रति किये गए हों। इसलिये जो प्रेम परमेश्‍वर ने हमसे किया उसकी प्रसन्‍नसा करने के लिए कुछ कार्य है जो हम कर सकते हैं।

**मसीही और संसार**

The disciple and the world

संसार में आज बहुत सी बातें है जो अधार्मिक हैं। उदाहरण के लिये कई पुस्तकें, समाचार पत्र लेख और तस्वीरें हैं जो जल्दी हमारे मनों को बुरी और अशुद्ध बातों की तरफ ले जाती हैं और कभी कभी ये चीजें हमारे मन को बहुत आकर्षित करती हैं। परन्तु वे चाहे हमें कितना ही क्यों न आकर्षित करें-हमें उनसे दूर ही होना है; यदि हम दूर नहीं होते हैं तो वे हमें परमेश्वर से अलग कर देगी।

संसार के आमोद प्रमोद में भाग न लेने के कारण हो सकता है कि हमें कुछ मित्रों को खोना पड़े क्योंकि वे नहीं समझ सकेंगे कि क्यों जिन बातों में हम एक समय उनके साथ आनन्द लेते थे अब उन्हें करने के लिये इन्कार करते है।

परन्तु हम बहुत से वे नए मित्र पाएंगे; जिन्होंने हमारे समान अपने को संसार से अलग कर दिया है और वे हमारे साथ एकता के सूत्र में बंध जाएंगे। वे परमेश्वर की सन्तान होगें और मसीह में भाई और बहन होंगे।

**यीशु का स्मरण**

Remembering Jesus

बपतिस्मा लेने के द्वारा हम एक नयी शुरूआत करते है। जब हम बपतिस्मा ले लेते है तो हम सीधे और सकरे मार्ग पर प्रस्थान करते हैं जो हमें परमेश्वर के राज्य तक ले जाता है। परन्तु आखिर हम मनुष्य ही है और हम जल्दी भूल जाते हैं कि यीशु ने हमारे लिये क्रूस की मृत्‍यु सहकर हमारे लिये कितना बड़ा काम किया।

यीशु जानते थे कि कितनी सरलता से उसके शिष्य उसे भूल जाएंगे: इसलिए उसने उनसे स्मरण कराने के लिये कुछ करने को कहा। लूका रचित सुसमाचार के 22:14-20 पदों को पढ़िये। यह वह कहानी है जो अन्तिम भोजन के नाम से प्रसिद्ध हैं क्योंकि यह अन्तिम भोजन है जिसे यीशु ने अपनी मृत्यु के पहिले अपने शिष्यों के साथ लिया।

देखिये किस तरह रोटी और दाखरस उसके शिष्यों को याद दिलाने के लिये थी कि यीशु ने कैसे उनके लिये अपने प्राणों को दे दिया। उसने उनसे कहा, *‘मेरे स्मरण के लिये यही किया करो’* (लूका 22:19)। अब 1 कुरिन्थियों 11:23-28 को पढ़िये।

पहिले के मसीही हर सप्ताह के प्रथम दिवस पर यीशु को उस रीति से याद करने के लिये, जिसकी आज्ञा उसने उन्हें दी थी, इकट्ठे होते थे।

प्रभु यीशु के सच्‍चे शिष्‍यों को ठीक उसी रीति से, रोटी तोड़ने और दाखरस पीने में, संगति करनी होगी जैसे पहले के शिष्‍य करते थे (इस संगति के लिए प्राय: रविवार का दिन सुविधाजनक होता है) और यीशु मसीह के उस बलिदान को याद करना चाहिए कि किस तरह हमारे लिए उनके शरीर को तोड़ा गया और उनके लहू को क्रूस पर बहाया गया।

जैसे जैसे हम मसीह में बढ़ते जाते है, यीशु को इस रीति से स्मरण रखना हमारे लिये ज्यादा से ज्यादा आवश्यक और महत्वपूर्ण हो जाता है जो हमारी इस सत्यता को जानने के लिये कि वह हर समय हमारे साथ है हमारी सहायता करेगी।

**आपका निर्णय जरुरी**

You must decide

जब आप ये सब बातें पढ़ चुके होंगे तो आप एक दोराहे पर खड़े व्‍यक्ति के समान होंगे। तो अब आप जानते है कि एक रास्‍ता है जो मृत्‍यु की ओर ले जाता है और दूसरा रास्‍ता है जो जीवन की ओर ले जाता है।

जिन लोगों ने परमेश्‍वर के वचन में विश्‍वास कर लिया है और मसीह में बपतिस्‍मा ले लिया है स्‍वंय यीशु मसीह जीवन के मार्ग के इस सफर में उनके साथ है। क्या आप भी उनके साथ होना चाहेंगे? क्या आप परमेश्वर के वचन के उत्तम और श्रेष्ट सन्देश पर विश्वास करेंगे? क्या आप मसीह में बपतिस्मा लेना चाहेंगे? याद रखिये यीशु ने कहा,

*‘जो विश्वास करे और बपतिस्मा ले उसी का उद्धार होगा।’* (मरकुस 16:16)

**सारांश**

Summary

1. प्रतिदिन हमें बाइबिल से थोड़ा बहुत पढ़ने का प्रयत्न करना चाहिये और प्रार्थना भी करनी चाहिये।
2. बपतिस्मा लेने के बाद हमें विश्‍वासियों के साथ संगति करनी चाहिये, और यीशु मसीह की याद में रोटी तोड़नी चाहिए।(यह सच है कि हमेशा ऐसा सम्भव नही होता क्योंकि हो सकता है कि जहां आप रहते हैं वहां आप ही के समान विश्वास रखने वाले लोग न हों।)
3. हमें उन सब बातों को छोड़ने की कोशिश करना चाहिये जो हमें पाप में डाल सकती हैं।
4. हमें निरन्तर दूसरो की भलाई करने की कोशिश करनी चाहिये।

*डाक द्वारा क्रिस्टडेलफियन बाइबिल अध्ययन क्रम*

### प्रश्नपत्र नं. 8 - पाठ 22

Long format questions – Lesson 22

**बाईसवें पाठ पर प्रश्न**

1. परमेश्वर की दो मुख्य आज्ञाएं क्या है?
2. उन कुछ बातों को क्रमानुसार लिखो जिन्हें यीशु के एक शिष्य को अपने बचे हुए समय में करना चाहिए।
3. कुछ उस प्रकार की बातों को क्रमानुसार लिखो जिन पर शिष्य को अपना समय व्यतीत नहीं करना चाहिए।

**कुछ साघारण प्रश्न**

1. क्या आप सोचते हैं कि डाक द्वारा इस अध्ययल क्रम ने आपको बाइबिल समझने में सहायता दी है?
2. क्या कुछ प्रश्न हैं जो आप पूछना चाकेंगे?
3. आपके निवास स्‍थान के में या निकट शायद क्रीस्टडेलफियन्‍स न हो। यदि है, तो क्या आप उनसे सम्पर्क करना चाहेंगे?

धन्यवाद - हमारा पता:

क्रिस्टडेलफियन्‍स, पी. ओ. बॉक्स 50, गाजियाबाद - 201001, उत्तर प्रदेश

The Christadelphians, P.O. Box 50, Ghaziabad, 201001, U.P.

Appendix –

Alternative multiple choice questions.

(These questions are recommended for those with limited time.)

*क्रिस्टडेलफियन बाइबिल पत्राचार पाठ्यक्रम*

### कृपया निम्नलिखित विकल्पो में से एक सही विकल्प को चुनिये

Alternative multiple choice questions

1.1 बाइबिल अन्य दूसरी पुस्तकों से भिन्न क्यों है?

अ- क्यों कि मनुष्य के ज्ञान मे यह सबसे पुरानी पुस्तक है?

ब- क्यों कि यह ईश्वर प्रेरित, अर्थात ईश्वर के श्वांस से निकली है।

स- क्यों कि यह सबसे बड़ी पवित्र पुस्तक है।

द- क्यों कि यह पवित्र भाषा में लिखी गई है।

1.2 निम्न में से कौन सा कारण है, जिससे आप बाइबिल में विश्वास करते है?

अ- क्यों कि यीशु ने कहा बाइबिल परमेश्वर का वचन है।

ब- बाइबिल की भविष्‍यवाण्यिों का भविष्‍य में पूरा होना।

स- ऐतिहासिक परिशुद्वता।

द- ऊपर बताये गये तीनों।

1.3 बाइबिल में कितनी पुस्तकें हैं?

अ- 1

ब- 2

स- 12

द- 66

2.1 ईश्वर की आंज्ञा के उल्लंघन से आदम को कैसी सजा मिली?

अ- नरक में भेज दिया गया।

ब- तुरन्त मरा।

स- बाद में मरने के लिये तैयार किया गया।

द- ईश्वर ने आदम को सजा नहीं दी।

2.2 हम सब मनुष्य क्यों मरने हैं?

अ- क्योंकि सव मनुष्य आदम की संतान है।

ब- क्योंकि सब मनुष्य अच्छा जन्म लेते है, पर बाद में पाप करते हैं।

स- क्योंकि शरीर को मरना है पर आत्‍मा जीवित रहती है।

द- क्योंकि आदम के पाप के कारण हमें सजा मिला है।

2.3 पापी मनुष्य को जीवन की आशा देने के लिए परमेश्वर ने क्या किया?

अ- उसने स्वर्ग में भवन निर्मण किया है।

ब- उसने अपना बेटा केवल उन लोगों के लिए दिया जो उस पर विश्वास करते है।

स- उसने सबको बचाने के लिए अपना बेटा दिया।

द- पापी मनुष्य के लिये कोई आशा नहीं।

3.1 जब शिष्य यीशु को स्वर्गरोहण करते देख रहे थे, तब उनके लिए स्वर्गदूतों का क्या संदेश था?

अ- यीशु पृथ्वी पर ठीक वैसा ही आयेगा जैसा तुम जाते हुए उसे देखते हों।

ब- यीशु पुन: उस जगह चला गया जहां जन्म से पहले था।

स- यीशु स्वर्ग में आपके लिए एक स्‍थान तैयार करने के लिए गया है।

द- जो कोई विश्‍वास करेगा वो भी इसी प्रकार स्वर्ग में उठा लिये जायेगें।

3.2 निम्नलिखित में से कौन से अनुच्छेद यीशु के लौटने के बारे में नहीं है?

अ- प्रेरितो के कार्य 3:19-20

ब- 2 पतरस 3:9-10

स- प्रेरितो के काम 2:34

द- 1 थिस्सलुनीकियों 4:16

3.3 यीशु वापिस कब आयेगें?

अ- यीशु वापिस आ चुका है और स्वर्ग में अपना राज्य स्‍थापित कर चुका है।

ब- जब सारा विश्व उस पर विश्वास करेगा।

स- 2000 वर्ष बाद।

द- उस घड़ी और दिन के बारे में कोई नहीं जानता।

4.1 किस देश में एक समय परमेश्वर का राज्य विद्यमान था?

अ- रोम

ब- इस्राएल

स- अदन

द- स्वर्ग

4.2 वह क्यों परमेश्‍वर का राज्य कहलाता था?

अ- क्योंकि परमेश्वर ने दाऊद को वह राज्य दिया था।

ब- क्योंकि वह स्वर्ग का प्रारुप था।

स- क्योंकि परमेश्वर राज्या जैसे राज्य करता था।

द- क्योंकि कलीसिया ही राज्य था।

4.3 परमेश्वर के राज्य को कौन पुन: स्थापित करेगा?

अ- कलीसिया

ब- यीशु

स- इस्राएल के लोग

द- वह पुन: स्थापित नहीं होगा।

5.1 कितनी दूर तक परमेश्वर का राज्य पहुंचेगा?

अ- पूरे संसार में

ब- प्राचीन ईस्रायल में

स- इस समय का ईस्रायल देश

द- स्वर्ग में

5.2 कौन सा नगर (शहर) उस राज्य की राजधानी होगा?

अ- बेबीलोन

ब- स्वर्ग में परमेश्वर का नगर

स- येरूशलेम

द- रोम

5.3 जब परमेश्वर का राज्य स्‍थापित हो जायेगा तो संसार किस प्रकार का हो जाएगा,?

अ- सब देशों में प्रजातंत्र होगा।

ब- मरुस्थल हरा भरा हो जायेगा (फल फूल से भर जायेगा)

स- जो भी अब जीवित है अमर बना दिये जायेगें।

द- धर्मी जन यीशु द्वारा स्वर्ग में उठा लिये जायेगें।

6.1 इस्रायल के इतिहास में निम्नलिखित में से कौन सा महापुरुष नहीं था?

अ- मूसा

ब- दाऊद

स- यारोबाम

द- हिजकिय्याह (2 राजा 19:1 और 5)

6.2 रहुबियाम के राज्य काल में क्या हुआ?

अ- उसका राज्य उत्तर की दसजातियों और दक्षिण की दो जातियों में बटँ गया।

ब- उत्तरी राज्य अस्सरीया के हाथ लगा।

स- नबूकदनेस्सर द्वारा मंदिर ढ़ा दिया गया।

द- यहूदी बाबूल से लौटे।

6.3 परमेश्वर (यहोवा) की आंज्ञाओं का निरन्तर उल्लंघन करने से यहूदा के राज्‍य को किस तरह से दंड दिया गया?

अ- आंकाल

ब- दस विपत्तियां

स- कैद (दासता)

द- भूकम्प (भूईडोल)

7.1 यूहन्ना बपतिस्मा देने वाले का क्या कार्य था?

अ- उसे यीशु के लिए लोगों को तैयार करना था।

ब- उसे राज्य स्‍थापित करना था।

स- उसने चमत्कार किये और दूष्ट आत्मओं को निकाला।

द- उसे रोमियों के विरुद्ध इस्राएल का नेतृत्व करना था।

7.2 यहूदियों का क्या हुआ जब उन्होंने यीशु को ग्रहण नहीं किया?

अ- परमेश्वर ने उन्हें अपने लोगों में से निकाल दिया।

ब- यहूदियों पर आज तक वह श्राप है।

स- किसी भी यहूदी ने यीशु पर विश्वास नहीं किया।

द- परमेश्वर ने यहूदियों को सब राष्ट्रों में तितर-बितर करने के लिए रोमियों को चुना।

7.3 जकर्याह भविष्यवक्ता ने क्या भविष्यद्वाणी की?

अ- यीशु के न्याय के समय यहूदियो को अस्वीकार किया जायेगा।

ब- यीशु के दोबारा लौटने पर यहूदी यीशु को पहचानेंगे।

स- यरूशलेम पुन: स्थापित नहीं होगा।

द- दस आदमी एक यहूदी को पकड़कर मारेंगे।

8.1 मूसा की व्यवस्था के मुख्य उद्देश्य क्या थे?

अ- राजा को बुद्धिमानी से शासन करने योग्य बनाना।

ब- मनुष्य को सीखाना की वो पापी है।

स- सार्वजनिक स्वास्‍थ्‍य स्थापित करना।

द- खाद्य नियमों को बनाये रखना।

8.2 क्यों व्यवस्था मनुष्यों को बचा नहीं सकती थी?

अ- क्योंकि वह मूलत: गलत थी।

ब- क्योंकि वह केवल यहूदियों के लिए थी।

स- क्योंकि कोई व्यवस्था नहीं रख सकता था।

द- क्योंकि इस्राएलियो ने विधान का उल्लंघन किया।

8.3 उद्धार के लिए परमेश्वर ने और कौन सा अच्छा मार्ग प्रदान किया?

अ- मसीहियों के लिए एक नई आचार संहिता।

ब- यीशु का बलिदान।

स- नया नियम।

द- कलीसिया

9.1 निम्नलिखित में से कौन सी प्रतिज्ञां अब्राहम से नहीं की गई?

अ- कि जितनी भूमि उसे दिखाई देती है उसकी हो जाएगी।

ब- कि वह राष्ट्र के लिए आशीष का कारण होगा।

स- कि उसे स्वर्ग में एक स्थान मिलेगा।

द- कि उनको पुत्र होगा।

9.2 परमेश्वर अब्राहम से क्यों प्रसन्न था?

अ- उसके अच्छे काम और उदारता के कारण।

ब- क्योंकि वह ईश्वर पर विश्वास करता था।

स- क्योंकि वह पाप से मुक्त था।

द- क्योंकि उसने भेड़ की बली चढ़ाई।

9.3 किस तरह हम उन प्रतिज्ञांओं के भागी हो सकते है जो अब्राहम से की गई थी?

अ- यदि हम मसीह में हो तो, अब्राहम से की गई प्रतिज्ञाओं के भागी हो सकते हैं।

ब- यदि हमारी अब्राहम जैसी परीक्षा हो तो हम उसकी प्रतिज्ञाओं के भागी हो सकते है।

स- हमने यीशु मसीह को प्राप्त कर लिया है जिसकी प्रतिज्ञां अब्राहम से की गई था।

द- हमें भागी होने की आवश्यकता नहीं।

10.1 दाऊद यहोवा परमेश्वर के लिए क्या करना चाहता था?

अ- वह इस्रायल को संसार में एक महान शक्तिशाली देश बनाना चाहता था।

ब- वह पलिश्तियों को नष्ट करना चाहता था।

स- गैर यहूदियों को विश्वासी बनाना चाहता था।

द- वह परमेश्वर के लिए एक घर बनाना चाहता था।

10.2 किस पुत्र की प्रतिज्ञां दाऊद से की गई थी?

अ- सूलैमान

ब- यीशु

स- इसहाक

द- अबशालोम

10.3 यीशु मसीह किसके वंशज थे?

अ- दाऊद

ब- अब्राहम

स- दाऊद और अब्राहम

द- परमेश्वर

11.1 पहले आदमी की सृष्टि किस तरह हुई? (कैसे बनाया गया)

अ- मिट्टी से

ब- खून के धब्बों से

स- बंदर से

द- वह स्वर्ग से उतरा

11.2 जब आदम और हव्वा ने ईश्वर की आंज्ञा का उल्लंघन किया तब वे किस तरह दण्डित किए गए?

अ- उनके कपड़े हटा दिए गए।

ब- वे मरणशील प्राणी हो गए।

स- पृथ्वी सदा के लिए श्रापित हुई।

द- परमेश्वर ने अपना आत्मा वापिस ले लिया।

11.3 ये (दण्ड) हमें कैसे प्रभावित करता है?

अ- पृथ्वी कभी भी अदन के समान नही होगी।

ब- केवल धर्मी जनों कि आत्मा स्वर्ग में जायेगी।

स- शैतान संसार को तंग करने (यातना देने) के लिए मुक्त या स्वंतत्र है।

द- आदम जैसे हम भी धूल (मिट्टीं) में मिल जायेंगे।

12.1 जब मनुष्य मरता है तो क्या होता है?

अ- शरीर धूल (मिट्टीं) में लौट जाती है और आत्मा स्वर्ग में लौट जाती है।

ब- अच्छे लोग स्वर्ग में जाते है, बुरे मनुष्य नरक में जाते है।

स- सब पशुओं के समान ही मरा हुआ मनुष्‍य कुछ नहीं जानता।

द- उसकी आत्मा किसी अन्य अवतार का रुप धारण कर लेती है

12.2 उस मनुष्य की क्या आशा है जो यीशु मसीह में विश्वास करता है?

अ- वह यीशु के लौटने तक कब्र में लेटा रहता है।

ब- यीशु के लौटने तक उसकी आत्मा अधोलोक में जागती रहती है।

स- वह सीधे परमेश्वर के साथ रहने के लिए स्वर्ग चला जाता है।

द- उसका न्याय होता है फिर स्वर्ग जाता है।

12.3 बाइबिल में नरक (गेहेन्ना) का क्या अर्थ है?

अ- यह आग का स्थान है जहां शैतान हमेशा यातना देता रहता है।

ब- यह आत्माओं को शुद्ध करने का स्थान है।

स- वह यरूशलेम के बाहर कचरे के ढ़ेर का अनुवाद है।

द- यह इस जीवन में मानव पीड़ा के लिए एक अलंकारिक शब्‍द है।

13.1 निम्नलिखित में से कौन सा पद अब्राहम के बारे में बताता है?

अ- 1 थिस्सलुनीकियों 4:16

ब- यूहन्ना 5:21

स- 1 कुरिन्थियों 15:22-23

द- इब्रानियों 11:39-40

13.2 पुनरुत्थान कब होगा?

अ- मृत्यु के तुरन्त बाद।

ब- न्याय के बाद।

स- यीशु के आने के बाद पर जीवतों के एकत्र के पहले।

द- दोनों यीशु के आने और जीवतों के एकत्र होने के बाद।

13.3 यीशु के वापिस लौटने पर उन लोगों का क्या होंगा जो जीवित है।

अ- स्वर्ग में यीशु के साथ रहने के लिए वो एकत्र हो जायेंगे।

ब- वे पृथ्वी पर यीशु के साथ रहने के लिए एकत्र हो जायेंगे।

स- वे स्वर्गदूत में बदल जायेंगे।

द- यीशु उन्हें व्यक्तिगत रुप से बुलाएगा।

14.1 न्याय कब होगा?

अ- प्रत्‍येक मनुष्‍य का स्‍वंय का न्‍याय जबकि वह मनुष्य जीवित है।

ब- उसी दिन जिस दिन वह मरता है।

स- यीशु के पृथ्वी पर लौटने से पहले।

द- यीशु के पृथ्वी पर लौटने के बाद।

14.2 किसका न्याय होगा?

अ- वे सब जो विश्वास नहीं करते।

ब- वे सब जो विश्वास करते है।

स- वे सब जिन्होंने परमेश्वर के बारे में जाना।

द- सब मनुष्य चाहे उन्होंने परमेश्वर के बारे में सुना या नहीं सुना।

14.3 जिसे अस्वीकार किया जायेगा उसका क्या भाग्य होगा?

अ- हमेशा के लिये वे नरक में जलाये जायेंगे।

ब- उन्हे पृथ्वी पर दूसरा जीवन दिया जायेगा।

स- वे नाश हो जायेंगे और उनकाआस्तित्व मिट जायेंगा।

द- वे भूत बनेंगे।

15.1 परमेश्वर है:-

अ- तीन व्यक्ति है - पिता परमेश्वर, पुत्र परमेश्वर, और पवित्र आत्मा परमेश्वर।

ब- दो व्यक्ति है - पिता परमेश्वर और पुत्र परमेश्वर।

स- एक व्यक्ति है - पिता परमेश्वर।

द- एक पर त्रिएकता के अकार में है।

15.2 निम्नलिखित में से यीशु और परमेश्वर के बीच सबंध को सबसे बेहतर कौन सी बात प्रदर्शित करता है?

अ- यीशु परमेश्वर से बड़े है।

ब- यीशु परमेश्वर के बरारबर है।

स- यीशु परमेश्वर से छोटे है। (कम महत्व के)

द- यीशु परमेश्वर एक ही व्यक्ति है - एक साथ मौजूद और सहास्तित्व और सहशास्वत है।

15.3 यीशु को परमेश्वर का पुत्र क्यों कहा जाता है?

अ- जन्म से पहले यीशु स्वर्ग में परमेश्वर के पूत्र के रुप में पहले से मौजूद था।

ब- वह मरियम का पुत्र था और मरियम परमेश्वर की माता है।

स- वह मरियम के कारण मानव पुत्र था, पर पवित्र आत्मा के कारण परमेश्वर का पुत्र था।

द- यद्यपि यीशु एक साधारण मनुष्य था पर अपनी अच्छाईयों के कारण उनको ईश्‍वर के दत्‍तक पुत्र के रुप में ग्रहण किया गया।

16.1 पवित्र आत्मा क्या है?

अ- परमेश्वर की शक्ति या श्वासं जिसके जरिये वह अपने उद्देश्यो की पूर्ती करता है।

ब- त्रिएकता का तीसरा व्यक्ति।

स- मसीह विश्‍वासियों के पास मौजूद एक शक्ति।

द- मनुष्य के भीतर दी गयी जीवन की शक्ति।

16.2 बाइबिल पवित्र आत्मा से कैसे सम्‍बन्धित है?

अ- बाईबल के लेखकों ने पवित्र आत्मा के द्वारा प्रेरणां पाई।

ब- बाइबिल के वचन आत्मा और जीवन है।

स- उपरोक्त दोनों

द- उपरोक्त में से कोई भी नहीं।

16.3 पवित्र आत्मा ने प्रेरितों को क्या नहीं करने दिया?

अ- चमत्कार करना।

ब- पाप के प्रलोभन को अस्वीकार/विरोध करना और पाप नहीं करना।

स- नया नियम लिखना।

द- भविष्यद्वाणी करना।

17.1 पहले विश्‍वासियों को पवित्र आत्मा के वरदान क्यों दिये गये?

अ- क्योंकि वरदान सुसमाचार का आवश्यक भाग है।

ब- क्योंकि उसने नये नियम लिखने के पहले कलिसिया की सहायता की।

स- क्योंकि प्रेरित लोग संत थे।

द- क्योंकि वरदान के बिना यहूदी और यूनानी लोग विश्वास नहीं करते थे।

17.2 अन्य-अन्य भाषाओं के वरदान के विषय में पौलुस क्या कहता है?

अ- अन्य-अन्य भाषायें विश्वासियों के लिए चिन्ह है।

ब- अन्य-अन्य भाषायें जाती रहेगी।

स- अन्य-अन्य भाषायें एक भविष्यद्वक्ता को प्रमाणित करती है।

द- मनुष्य अन्य-अन्य भाषाओं की व्याख्या नहीं कर सकता।

17.3 क्या आज किसी को वरदान प्राप्त है?

अ- हाँ, पौलुस ने कहा कि वरदान कभी असफल नहीं हौगें।

ब- केवल कलिसियाओं के खास कार्यकर्ताओं को प्राप्त है।

स- केवल उनको जो धर्मशास्‍त्र की सच्‍ची शिक्षा देते है।

द- नहीं पर यदि उनके पास होता भी तो वरदान सच्ची शिक्षा की गारन्टी नहीं।

18.1 यीशु की परीक्षा कैसे ली गई?

अ- वह हमारी नाई कुछ बातों में परीक्षा में तो पड़ा पर सब बातों में नहीं।

ब- वह हमारी नाई सब बातों में परखा गया, पर, हम से भिन्न उसने कभी पाप नहीं किया।

स- वह शैतान द्वारा परीक्षा में डाला गया।

द- वह हमारे जैसे परीक्षा में नहीं पड़ सकता था, उसकी परीक्षा नहीं हो सकती थी।

18.2 यीशु क्रूस पर क्यों चढ़ाया गया?

अ- परमेश्वर की इच्छा के विरुद्ध यहूदी और रोमियों ने ऐसा किया।

ब- ईश्वर ने हमें हमारें पापों से बचाने के लिए ऐसा होने दिया।

स- उसकी शारीरिक देह को नष्ट कर सके, ताकि, उसकी आत्मा स्वर्ग में प्रवेश कर सके।

द- ताकि जो कोई क्रूस का चिन्ह बनाये वह उद्धार पा लेगा।

18.3 "अपना क्रूस उठाने" का क्या अर्थ है?

अ- गले में क्रूस पहन लेना।

ब- इस जीवन में पीड़ा का अनुभव करना।

स- स्वयं का परित्याग करना और यीशु का अनुसरण करना।

द- यीशु को प्रभु स्वीकार करना।

19.1 किस तरह से यीशु ने शैतान की शाक्तियों को नष्ट किया? (1 युहन्ना 3:8, इब्रानियों 2:14)

अ- उसने शैतान को स्वर्ग से बाहर निकाल दिया।

ब- उसने स्वयं में व्याप्त पापमय स्वभाव को हराया और आदम की संतान का प्रारुप तोड़ा।

स- उसने मसीहीयों के ऊपर शैतान की शक्तियों का नाश किया, शैतान अभी भी क्रियाशील है।

द- अंतिम दिन के बारे में यह भविष्यद्वाणी है जब यीशु शैतान को आग के कुन्ड में धकेल देगा।

19.2 परमेश्वर का बुराई से क्या सम्‍बन्‍ध है?

अ- परमेश्वर दोनों अंधकार और ज्योति को बनाता और दोनों अच्छाईयों और बुराईयों को लाता है।

ब- परमेश्वर केवल अच्छी चीजें रचता है और कुछ समय के लिए शैतान को बुरा करने की अनुमित देता है।

स- परमेश्वर ने शैतान को आदम की परीक्षा के बाद स्वर्ग से निकाल दिया।

द- ईश्वर ने अंतिम दिन तक के लिए उसे कैद कर रखा है।

19.3 "शैतान" शब्द का क्या अर्थ है?

अ- इस शब्द का अर्थ है झूठा इल्‍जाम लगाने वाला।

ब- इस शब्द का अर्थ है बड़ा साँप या धोखा देने वाला।

स- इस शब्द का अर्थ है दुश्मन या (झूठा निन्दक)।

द- यह प्रमुख स्वर्गदूत का नाम है जिसने विरोध किया।

20.1 हमें बपतिस्मा कैसे लेना चाहिए?

अ- बच्चे के माथे पर पानी छिड़ककर।

ब- एक प्रौढ़ व्यक्ति के जैसे पानी में गाढ़े जाने के द्वारा।

स- अक्षरस: जल में नहीं पर, यीशु को स्वीकार करने के द्वारा पवित्र आत्मा प्राप्त करने के द्वारा।

20.2 कौन उद्धार पायेगा?

अ- जो विश्वास करे।

ब- जो विश्वास करें और बपतिस्मा लें।

स- जो विश्वास करें और पवित्र आत्मा पायें।

द- जो स्वीकार करें कि यीशु ही प्रभु है।

20.3 बपतिस्मा से हमें क्या प्राप्त होता है?

अ- हम यीशु की मुत्यु के साथ अपने आप को जोड़ लेते है।

ब- हम अपने आप को पुराने और भविष्य के पापों से शुद्ध कर लेते है

स- हम पवित्र आत्मा प्राप्त कर सकते है।

द- इसका कोई प्रभाव नहीं होता, यह केवल एक चिन्ह है।

21.1 सरकार के प्रति हमारा क्या दृष्टिकोण होना चाहिए?

अ- अच्छी सरकार बनाने के लिए वोट देना चाहिए।

ब- एक अच्छा नागरिक होना जिसमें आवश्यक हो तो लड़ाई भी शामिल है।

स- एक मसीही सरकार से बंधा हुआ नहीं है।

द- शासक ईश्वर द्वारा नियुक्त किए जाते है हमें उनके अधीन रहना चाहिए।

21.2 विवाह के सन्दर्भ में निम्न में से कौन सा कथन सत्य है।

अ- एक पुरुष आविश्वासी से विवाह कर सकता है पर स्‍त्री को विश्वासी से विवाह करना चाहिए।

ब- एक विश्वासी की यदि पति या पत्नी यीशु को स्वीकार करने से इन्कार कर दे तो तलाक दे देना चाहिए।

स- विश्वासी को अपने पति या पत्नी से तलाक लेने पर जोर नहीं देना चाहिए।

द- बाइबिल की के अनुसार एक प्रभु का सेवक विवाह न करें।

21.3 सहचर्य या संगति क्‍या है?

अ- सहचर्य सब मसीही के साथ बाँटा जाने वाला आनंद है।

ब- सहचर्य सही शिक्षा और व्यवहार पर आधारित समुदाय है।

स- सहचर्य ही विश्वासियों और यीशु के बीच सीधा संबंध है।

द- सहचर्य किसी धर्म शिक्षा के कालेज गुरुकूल की सबसे ऊंची पद्ववी है।

22.1 दो महान आंज्ञायें क्या है?

अ- तू हत्या न करना - तू चोरी न करना।

ब- तू परमेश्वर को सारे मन सारे हृदय से प्रेम करना - तू अपने पड़ोसी से अपने समान प्रेम करना।

स- सब्‍त के दिन को पवित्र मानना - बिना रूके प्रार्थना करना।

द- मसीह विश्‍वासियों के लिए कोई नियम या आज्ञाऐं नहीं है।

22.2 यीशु ने उसकी मुत्यु को किस प्रकार याद रखने का आदेश दिया?

अ- घर में क्रूस लटकाने के द्वारा।

ब- ईस्टर पर्व मनाने के द्वारा।

स- एक दूसरे के पैर धोने के द्वारा।

द- रोटी और दाखरस को नियमित रुप से बाँटने के द्वारा।

22.3 बपतिस्मा के बाद विश्वसियों के लिए सबसे महत्वपूर्ण क्या है?

अ- प्रार्थना

ब- बाइबिल पढ़ना

स- मसीह की शिक्षा को अभ्याम में लाना।

द- ये सब एक साथ महत्वपूर्ण है।

23.1 आपने इस बाईबल पत्राचार पाठ्यक्रम को कितना उपयोगी पाया?

अ- बहुत उपयोगी नहीं।

ब- औसतन (बहुत अच्छा नहीं)।

स- उपयोगी पर कुछ कठिनाई (कृपया स्पष्टीकरण दें)।

द- बहुत उपयोगी।

23.2 इसके अतिरिक्त कौन सी सामग्री आप प्राप्त करना चाहेंगे (आप एक से अधिक चुन सकते है)?

अ- कुछ नहीं धन्यवाद

ब- और विस्तृत अध्ययन

स- पत्रिका

द- अन्य .................................... (स्पष्ट करें)

23.3 यदि आपसे ये पूछा जाए कि इस पाठ्यक्रम के ऐसे कौन से भाग है जिन्हें आज आप सोचते है कि वे अस्पष्ट है या जिससे आप असहमत है तो वो कौन से है? (कृपया अध्याय क्रमांक लिखें)

23.4 क्या ऐसे कोई विषय है जिसे इस कोर्स में शामिल नहीं किया गया है जिसके लिए आपको सामग्री चाहिए।

23.5 कृपया अतिरिक्त जानकारी टिप्‍पणी दें।

23.6 टिप्पणी - अगर आप इस पाठ्यक्रम के किसी अध्‍याय से सहमत न हो, अथवा जो आप को समझ में न आया हो तो, कृपया उन अध्‍यायों की संख्या और नाम लिखे।

अध्‍याय की संख्या और नाम:...................................................................................

अध्‍याय की संख्या और नाम:...................................................................................

अध्‍याय की संख्या और नाम:...................................................................................

धन्यवाद - हमारा पता

क्रिस्टडेलफियन्‍स, पी. ओ. बॉक्स 50, गाजियाबाद - 201001, उत्तर प्रदेश

The Christadelphians, P.O. Box 50, Ghaziabad, 201001, U.P.